श्रीरामदेवझा

स च मे प्रियः

(संस्मरणक दर्पणमे मायानन्दजीक प्रतिच्छवि)



स च मे प्रियः

(संस्मरणक दर्पणमे मायानन्दजीक प्रतिच्छवि)

श्रीरामदेवझा



मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा-846001

SA CHA ME PRIYAH (Reminiscence of Mayanandji) : By **Shree Ramdeo Jha**, Mithila Research Society, Darbhanga, (2016); ₹ 150.00 only.

प्रकाशक : मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा-846001
मो.- 09430639249
ई मेल- mithilaresearch@gmail.com

पुस्तक-प्राप्तिस्थान : डा. शंकरदेवझा
कबिलपुर लहेरियासराय
दरभंगा-846001
मो.-9570727856

प्रकाशन : 2016

मूल्य : ₹ 150/- मात्र

मुद्रक : प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा

बिसरब कोना !

साहित्य अकादेमीसँ निवृत्त (दिसम्बर, 2002) भेलाक पश्चात्कालिक वर्षमे श्रीकेदारकाननक एकटा पत्र भेटल जाहिमे मायानन्दजीपर केन्द्रित एकटा वृहत् ग्रन्थ (अथवा अभिनन्दन ग्रन्थ)क प्रकाशन योजनाक सूचना दैत मायानन्दजीक साहित्यिक समीक्षा अथवा संस्मरण लिखि कऽ देबाक आग्रह कयल गेल छल । ओ अपन विचार देने छलाह जे मायानन्दजीक संग अहाँक विशेष मैत्री भाव ओ दुइ वर्ष धरि पटनामे निकटतम साहचर्य छल, तेँ संस्मरण दऽ सकी तँ बेसी नीक ।

अनेक कारणवश केदारजीक आग्रह-पूर्त्तिमे बिलम्ब होइत गेल । परन्तु केदारजीक निरन्तर पत्र, समाद आ फोनपर फोन अबैत रहल । अन्ततः ई संस्मरण पूर्ण भेल, जकर समस्त श्रेय श्रीकेदारकाननकेँ छनि । हम मायानन्दजीपर केन्द्रित संस्मरणक संग मायानन्दजीसँ सम्बद्ध अन्यान्य सामग्री सब, सेहो, यथा- पुरना मिथिलामिहिरमे प्रकाशित मायानन्दजीपर ब्रजकिशोरवर्माक संस्मरण 'हुनकासँ भेट भेल छल', अभिव्यंजनाक विमोचन समारोहक 'आर्यावर्त'मे प्रकाशित समाचारक कटिंग, तथा मायानन्दजी द्वारा लिखित पत्र सभक फोटो पठा देलियनि । केदारजी संस्मरणक अठतालिस पृष्ठक फाइनल प्रूफ संशोधनार्थ पठौलनि जे संशोधन कऽ आपस कऽ देलियनि । कोनहु कारणे ग्रन्थ प्रकाशित नहि भऽ सकल ।

तीव्र आकांक्षा छल जे हमर लिखल संस्मरण ओ मुद्रित रूपमे पढ़थि आ अपन मन्तव्य देथि । किन्तु अत्यन्त शोकप्रद जे एहि बीचमे अकस्मात् श्रद्धेय आ परमप्रिय अग्रजतुल्य बन्धुक देहावसान भऽ गेलनि आ मनक मनोरथ मनहि रहि गेल ।

ई संस्मरण हुनक जीवन कालमे लिखल गेल छल तेँ वर्णन क्रममे अनेक स्थलपर वर्त्तमानकालिक क्रियापदक प्रयोग स्वभावतः भेल अछि । ओहिमे कोनो प्रकारक परिवर्त्तन जीवन्त स्मृति ओ समकालिकताक अनुभूतिकेँ आहत कऽ दैत, तेँ ओकरा यथावत रहऽ देल गेल अछि ।

एहि संस्मरणक लेखनावधिमे श्रीमद्‌भगवद्‌गीताक अध्ययनक सेहो एकटा पुनीत अवसर भेटि गेल छल । अतः गीताक अनेको उक्ति सहज रूपमे एहि संस्मरणक अभिधान ओ अन्तर्वर्त्ती उपशीर्षक सब स्वतः बनैत गेल ।

परम आत्मीय अग्रजतुल्य बन्धु स्व. मायानन्दजीकेँ स च मे प्रियः श्रद्धा सहित समर्पित ।

19/7/2016

रामदेवझा
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा

स च मे प्रियः

(संस्मरणक दर्पणमे मायानन्दजीक प्रतिच्छवि)

रूपं तव सौम्यं

नाम-फुहराम शरीर, गौर वर्ण, सौम्य मुखमंडल, निश्छल हाससँ अनावृत्त धवल दन्त पंक्ति, सरल स्वभाव, शिशुता-सम्पृक्त भाषा, संगीतात्मक झंकार-सम्पन्न स्वर, माधुर्य ओ वक्र व्यंजना युक्त वचोभंगिमा सन निसर्गतः प्राप्त गुणसँ सम्पन्न मायानन्दजीक सौम्य, सुभग, भव्य व्यक्तित्व सहज भावसँ कोनहुँ परिचित-अपरिचित नर-नारीकेँ आकर्षित-प्रभावित-अभिभूत करबामे समर्थ रहलनि अछि। लोककेँ हिनक सान्निध्यमे किछुओ काल रहब, हिनकासँ गप्प करब, हिनक गप्प सुनब आह्लादक, मनोरम ओ मनोविनोदक लगैत रहलैक अछि। यैह कारण अछि जे कवि-सम्मेलनमे हिनक काव्य-पाठ, आकाशवाणी, पटनाक चौपाल कार्यक्रमक मैथिलीक घूटरभाइक रुपमे हिनक कम्पीयरिंग, साहित्यिक-सांस्कृतिक वृहत् समारोहमे हिनक उद्घोषणा सुनबालेल सामान्यजन आ महाविद्यालयमे मैथिली व्याख्याता रूपमे व्याख्यान सुनबालेल छात्रगण सदैव उत्सुक रहल अछि।

ई साहित्य-सर्जनहुक क्षेत्रमे एकटा अनुपम सौन्दर्य-द्रष्टा-स्रष्टाक रूपमे मानल जाइत रहलाह अछि। प्रकृतिक सौन्दर्य, नारीक सौन्दर्य आ मानव मनक कोमल-तन्तुक भाव-तन्तुकेँ एवं स्वानुभूत सौन्दर्यकेँ शब्दक माध्यमे आकर्षक रूपमे उरेहि देबाक अमित सामर्थ्य हिनकामे रहलनि अछि। हिनक साहित्य-सर्जन वाद-प्रतिबद्ध मस्तिष्क ओ नीरस बौद्धिकतावादीसँ अधिक साहित्य-रसिक सहृदयकेँ मनस्तुष्टि प्रदान करैत रहल अछि। अवश्ये अपन रचनाशीलताक

उत्तरकालमे अपन लेखन-प्रवृत्तिमे विचलन देखौलनि अछि आ बौद्धिकता, बौद्धिक जटिलता, वाद-प्रतिबद्धताक प्रति बेसी लऽत होइत देखल जाइत छथि जाहिमे सहृदयकेँ पूर्वापेक्षा रमणीयार्थक कष्टकर अनुसन्धान करबाक हेतु विवश होअऽ पड़ैत छैक ।

मैथिली साहित्यमे अवतरण

गत शताब्दीक 1950-60क दशकमे मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे कतोक एहन साहित्यकारक अभ्युदय भेलनि जे अपन साहित्य-सर्जन द्वारा मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धिमे विशिष्ट योगदान कयलनि । एहने लेखकमे अन्यतम, साम्प्रतिक मैथिली साहित्यक स्तम्भमेसँ एक छथि श्रीमायानन्दमिश्रजी । कवि, कथाकार ओ उपन्यासकारक रूपमे मान्य छथि । विशेषत: कविता ओ कथाकेँ लऽ कऽ प्रतिष्ठा अर्जित कयलनि । कवि रूपमे जे लोकप्रियता, जे सम्मान, जे प्रतिपत्ति जाहि हार्दिकतासँ हिनका भेटैत रहलनि आ एखनो भेटि रहलनि अछि, से हिनक समकालिक बड़ अल्प कविकेँ लभ्य होयतनि । हिनक समवयस्क श्रेणीमे प्राय: केओ एहि कोटिमे नहि आबि सकलाह अछि । हमर तँ यैह धारणा अछि ।

मायानन्दजी कतोक रेडियो एकांकी लिखलनि जे असंकलिते रहलनि । आलोचना ओ सम्पादनमे सेहो प्रयोग कयलनि मुदा ओहि दिशामे विशेष गम्भीर नहि भेलाह । एमहर धुरझार आत्मसंस्मरण लीखि रहल छथि । देखी आगाँ की की करैत छथि ।

समवेता युयुत्सवः

चारि नवम्बर 2002 । सायंकाल ऊक फेरि कऽ एकटा मित्रकेँ बधाइ देबा लेल गेल छलहुँ । बेसी दूर नहि । ओमहरसँ अयलहुँ तँ गामपर सूचना भेटल जे मायानन्दजीक फोन आयल छलनि, कहलनि अछि-फोन करबाक लेल ।' मुदा हमरा संकोच भेल हुनका फोन करैत । मोनमे भेल छल जे फोन करबनि तँ अवश्ये कहताह -की हओ रामदेव ! यैह होइ ?' भेल जे ओ अवश्ये राग-उपराग, अनुरोध-विरोधक गप्प कहताह । एकेबेर विगत पचास वर्षसँ चल अबैत हुनका संग घनिष्ठता, आत्मीयता, स्नेह-सौहार्द मन-मस्तिष्कमे नाचि गेल ।

एक सप्ताह पूर्वे अठाइस अक्टूबर (2002)केँ साहित्य-अकादेमीक

जेनरल कौन्सिलक मीटिंगमे मैथिली-प्रतिनिधिक चयनमे हुनक नामपर अपन असहमति प्रदर्शित कऽ कऽ आयल छलहुँ । ओहि दिन साहित्य अकादेमीक अग्रिम जेनरल कौन्सिलक गठन भऽ रहल छलैक जे 2003 सँ 2007 धरि कार्य करत । एहि गठन-प्रक्रियामे भारतक प्रत्येक राज्य ओ केन्द्र-शासित प्रदेश, विश्वविद्यालय, विभिन्न मान्यता प्राप्त साहित्यिक संस्थान ओ स्वीकृत बाइसो भाषाक एक-एक प्रतिनिधिक चयन कयल जाइत छैक । ई चयन होइत छैक प्रत्येक सम्बद्ध पक्षक द्वारा प्रेषित नामिकासँ । राज्य, विश्वविद्यालय ओ अन्यान्य संस्थानक प्रतिनिधिक चुनावमे कौन्सिलक सदस्य लोकनि सहमति-विमति दैत छथि । विचार-विमर्श होइत अछि । परन्तु बाइसो भाषाक प्रतिनिधिक चुनावमे अन्य भाषाक सदस्य लोकनि हस्तक्षेप नहि करबाक मर्यादाक निर्वाह करैत छथि ।

साहित्य अकादेमी प्रत्येक भाषाक हेतु अधिकतम सात गोट साहित्यिक संस्थाकेँ मान्यता देने अछि । एहि मान्यता प्राप्त संस्था द्वारा संस्तुत नामिकासँ प्रतिनिधिक चुनाव होइत अछि । तत्तत् भाषाक संयोजक अपन-अपन भाषाक भावी प्रतिनिधिक नामक प्रस्ताव करैत छथि जे सहज रीतिसँ स्वीकार्य भऽ जाइत अछि । एखन मैथिली भाषामे सात गोट संस्थाकेँ मान्यता प्राप्त छैक । एहिमे एहि बेर चारिए गोट संस्था अपन संस्तुति पठौने छल । मैथिली संस्था सब साहित्य अकादेमीक सम्बन्धमे कतेक गम्भीर अछि से एहू बातसँ थाहल जा सकैछ जे एहि बेर एहनो साहित्यकारक नाम प्रेषित भेलनि जे भारतक नागरिक नहि छथि अथवा पुनरपि अकादेमीक जेनरल कौन्सिलक सदस्य नहि भऽ सकैत छथि । तखन जतेक नाम प्रस्तावित छल ताहिमे साहित्यमे अवदान, साहित्यिक सम्मान ओ वयसक वरिष्ठतापर विचार कऽ हम श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर'क नामक प्रस्ताव कयलियनि । सदन तकरा अनुमोदित कयलक किन्तु अकस्मात् कतोक दशकसँ साहित्य अकादेमीकेँ अपन प्रभामंडलसँ आच्छादित कयने रहनिहार डा.नामवरसिंह अपना ढंगक तर्क दैत मायानन्दजीक नाम प्रस्तावित कऽ देलथिन । अन्य भाषाक सदस्य लोकनिकेँ ई हस्तक्षेप अनसोहाँत लगलनि । 'हिन्दीवाला' सब मैथिलीकेँ हिन्दीक बोली सिद्ध कऽ सकबामे असमर्थ भऽ गेलाह तँ मैथिलीभाषी समुदाय ओ मैथिली साहित्यकारमे विभेद-वैमनस्य उत्पन्न करबाक अनेक मोर्चा खोलने जा रहल छथि जाहिमे साहित्य अकादेमीयो एकटा मोर्चा बनि गेल अछि । हम एहि हस्तक्षेपक कसि कऽ प्रतिवाद कयलहुँ । हमरा आ डा. नामवरसिंहक मध्य उत्कट आ कटु विवाद भेल ।

अन्ततः निर्णय अकादेमी-अध्यक्ष श्रीरमाकान्तरथपर छोड़ि देल गेलनि । अध्यक्ष सभाक मध्यान्तरमे मैथिलीक उभय प्रतिनिधि-सदस्यसँ विमर्श कऽ निर्णय देबाक घोषणा कयलनि । मध्यान्तर बेलामे दोसर प्रतिनिधि सदस्य भोजन कऽ कऽ गेलाह तँ उत्तरकालीन सत्रमे उपस्थितो नहि रहलाह, अध्यक्षसँ विमर्श करबाक कोन कथा ! सभा समाप्तिक पश्चात् सायंकाल हम अध्यक्ष महोदयक समक्ष विमर्शक हेतु उपस्थित भेलहुँ । ओ मैथिलीक दोसर सदस्यक अनुपस्थितिसँ खिन्न भेलाह । तथापि उभय प्रस्तावित नामक सम्बन्धमे सम्यक् विचार कऽ उपाध्यक्ष डा. गोपीचन्द्र नारंग ओ ओ.एस.डी. श्रीवेंकटेश्वरन्क समक्ष साहित्य अकादेमीक शालीन परम्पराक अनुकूल सदनमे आयल पहिलहि प्रस्तावित नामक पक्षमे अपन निर्णय सुनौलनि । परन्तु दिल्लीसँ हमरा चल अयलाक बाद नेपथ्यमे घनघोर कुचक्र चलऽ लागल । वातावरणकेँ मैथिलीक हेतु 'क्रोकोडयल्स टीयर' बहौनिहार सब विषाक्त कऽ कऽ अध्यक्ष ओ सचिवपर निर्णय परिवर्त्तनक दबाब देबऽ लागल, तथापि अध्यक्षक निर्णय अपरिवर्त्तित रहलनि ।

(अन्तर्-) द्वन्द्व समास

ओहि समयमे हमर मानसिक अन्तर्द्वन्द्व चरम बिन्दुपर छल । हमरा समक्ष 'गुरु-गोविन्द दोनो खड़े' अथवा 'शिवा को सराहौं वा सराहौं छत्रसाल को'बला परिस्थिति छल । हम न्याय आ विवेकक तराजूकेँ तीव्रगतिसँ दोलायमान होइत देखि रहल छलहुँ । हमरा जे न्याय-विवेक-सम्मत बूझि पड़ल से कयलहुँ । ओहन परिस्थितिमे हमरा तखन मायानन्दजीक नामपर असहमति प्रकट करऽ पड़ल, तज्जन्य संकोच तँ हमरा छले । मुदा हमरा एतबा विश्वास होइत रहल छल जे एहन परिस्थितिमे मायानन्दहुजी वैह निर्णय करितथि जे निर्णय हम कयलहुँ ।

मनः प्रसादः सौम्यत्वं

हँ, तँ तेसर दिन भिनसरमे फेर मायानन्दजीक फोन आयल । हम धकमकाइते फोनक रिसीवर धयल आ कहल-हैलो ।'

ओ प्रशान्त स्वरमे बजलाह-के, रामदेव हओ ? परसू रातिमे फोन कयने छलियह । तोँ गाम दिस गेल छलाह । हम तोरा बधाइ दै लय फोन केलियह । साहित्य-अकादेमीमे 1992 मे सुमनजीसँ जे गलती (?) भय गेलनि,

सुरेश्वरबाबू 1997 मे जे गलती कय गेलाह, तकरा तोँ ठीक केलऽ । बहुत-बहुत बधाइ । ई हेबैक चाहैत छल ।'

विषय विवादास्पद भऽ गेल छल से तँ निश्चिते । हमरा जेनरल कौन्सिलक सम्पुष्ट मिनट्स भेटल नहि छल । मैथिली-प्रतिनिधिक चयनक अन्तिम निर्णयक हमरा कोनो आधिकारिक सूचना साहित्य अकादेमीसँ भेटल नहि छल । तँ हम कहलियनि-निर्णय करताह अकादेमी प्रेसिडेंट । भार हुनकेपर छनि । से ओ की निर्णय देलथिन, हमरा ज्ञात नहि अछि । तँ एखन की कहल जाय ?'

ओ विश्वासपूर्वक कहलनि-नञि, नञि । अमरजी साहित्य-अकादेमीक सदस्य भय गेलाह । दिल्लीसँ केओ पटना फोन कयने छल, से केदारकेँ फोन केलकै । केदार हमरा फोन कयलक । वास्तवमे अमरजीएकेँ होना चाही मैथिलीक प्रतिनिधि ।'

आगाँ ओ फोनपर बड़ी काल धरि अमरजीक मैथिली भाषा-साहित्यमे कयल गेल बहुआयामी योगदान एवं हुनका संग अपन दीर्घकालिक आत्मीय सम्बन्धक एवं हुनका प्रति अपन आदर भावक व्याख्यान करैत रहलाह । हम 'हँ हँ' आ 'जी जी' करैत रहलहुँ ।

हम ओहि दिन मायानन्दजीक सौजन्य, शालीनता ओ सौहार्दसँ अभिभूत भऽ गेल छलहुँ । हुनकर उद्‌गार सुनि मनपर लादल बोझ जेना हल्लुक भऽ गेल । संकोचक भाव बिला गेल । आपन्न अवसादसँ जेना विमुक्ति भऽ गेल ।

पश्चात् मायानन्दजी स्वयं दरभंगा आबि अमरजीसँ भेट कऽ साहित्य अकादेमीमे अग्रिम पाँच वर्षक हेतु सदस्य एवं मैथिली कनवेनरक रूपमे चयन हेतु संवर्द्धना करैत अपन हार्दिक उद्‌गार व्यक्त कयने छलाह । अपन नामक शिखण्डीवत् प्रयोग कऽ भीष्म-प्रहार कयनिहारक प्रति ओ अपन क्षोभ व्यक्त कयने छलाह ।

मैथिलीक समर्पित साहित्यकारक प्रति अनास्था भाव उत्पन्न करबाक, साहित्यकार सभक मध्य पारस्परिक विद्वेष-बीज वपन करबाक, अमरजी आ मायानन्दजीक अथवा हमर ओ मायानन्दजीक मध्य स्थित चिरकालिक आत्मीयताकेँ कटु बनाय खण्डित करबाक दुरभिसन्धि रचनिहारक मूँह एक बेर फेर अपन सन भऽ गेलनि । अम्मत चुक्क !

श्रद्द धानः

अमरजीसँ मायानन्दजीक केहन सम्बन्ध रहलनि अछि, हुनका प्रति मायानन्दजीकेँ केहन-कतेक श्रद्धा भाव हृदयमे विद्यमान छनि आ अमरजीकेँ मायानन्दजीक प्रति कतेक स्नेह आ वात्सल्य रहलनि अछि तकर अभिज्ञान बड़ अल्प व्यक्तिकेँ छनि । ई अभिज्ञान ओहने व्यक्तिकेँ होयब सम्भव जे दुहूक सम्पर्क-सान्निध्यमे समानान्तर रूपसँ रहल होथि ।

अमरजीसँ मायानन्दजीक स्नेहिल आत्मीय सम्बन्ध अर्द्धशताब्दी पुरान । ई सम्बन्ध तहियासँ आरम्भ भेल जहिया रामकृष्णझा किसुनक मातृहीन किशोर भागिन मायानन्दमिश्र दरभंगा आयल रहथि सी. एम. कॉलेजमे उच्चतर अध्ययनक लेल । रामकृष्णझा किसुन ओ श्रीचन्द्रनाथमिश्र अमरक मध्य पूर्वहिसँ सोदरवत् सम्बन्ध-दुहूमे 'बड़का भाइ'क एहन सम्बन्ध रहलनि जकर फड़िछओट कहियो ने भऽ सकल । अमरजी किसुनजीक चिरकालपूर्व परोक्ष भैयो गेलापर हुनक परिवारक संग अपन पूर्व भावक निर्वाह करैत आबि रहल छथि, जकर साक्षी छथि केदार कानन। केदारजीकेँ ओहि सम्बन्धक निकटताक ओ उत्कटताक गहन अनुभूति हालोमे भेलनि अछि ।

से, मायानन्दजी जखन विद्यार्थी रूपमे दरभंगा अयलाह तँ हुनक स्थानीय ओ मामाक स्थानापन्न अभिभावक अमरेजी छलथिन जकरा मायानन्दजी सब दिन मान्य करैत रहलाह । दरभंगामे विद्यार्थी जीवनमे, शिक्षक रूपमे ओ साहित्य-साधनाक पथमे मायानन्दजी अमरजीक कतेक निकट छलाह, केहन स्नेहपात्र छलाह, तकर साक्षी आब दरभंगामे बड़ अल्प लोक छथि । ओहि अल्पंसख्यक लोकमे हमरो गनल-मानल जा सकैत अछि ।

एकटा अवान्तर प्रसंग

मायानन्दजीसँ परिचयारम्भ आ सम्पर्क-वृद्धि कोना भेल, ताहिसँ पूर्वक हमर अवान्तर कथा । हम 1948मे मिडिल बोर्डक परीक्षा पास कयलहुँ । ओकरा बादे बोर्ड आ ओकर परीक्षा समाप्त भऽ गेलैक । 1949 मे हमर एम. एल. एकेडमी, लहेरियासरायमे आठम वर्गमे नामांकन भेल । छमाही परीक्षा देलहुँ । नीक अंको प्राप्त भेल । परन्तु ग्रीष्मावकाशक बाद अध्ययनमे व्यवधान भऽ गेल । भटकन्त जीवन आरम्भ भऽ गेल । भेल जे किछु करी। प्रेसक काज सिखबाक इच्छा भेल । लहेरियासरायमे बाबूचन्द्रधारीसिंहक प्रेस छलनि

चन्द्रिका प्रेस । ओहिमे बुढ़बा खन्नास कम्पोजीटर सब केस सब छूबहि ने दिअय । भरि दिन पाइ भेल टाइप सबकेँ बीछि-बीछि स्टिकपर राखऽ कहय । मोन नहि लागल ।

कन्हैयामिसर पोखरिपर एकटा प्रभावी अधिकारी अपन प्रेस खोलने छलाह-प्रकाश प्रेस । ओहिमे कर्मचारी गनल-गुथल । सरकारी फारम, वोटर लिस्ट आदि छपबाक अजस्र काज । हम ओहि प्रेसमे गेलहुँ । हम बिन वेतनक एपरेंटिस । सब काजमे जोति दिअय । परिणामत: कम्पोजिंग आ प्रिंटिंग उभय विभागमे काज करबाक प्रचुर अवसर भेटल । काज ओ ओकर विभिन्न प्रक्रिया सब सिखबामे विलम्ब नहि भेल ।

प्रकाश प्रेसक मालिकक संरक्षणमे एक गोट संस्था चलैत छल विश्वहितकारक मण्डल । ओहि संस्था द्वारा 'विश्वशान्ति' नामक हिन्दी मासिक पत्रिका नियमित रूपसँ बहराइत छल । ओकर बहुत रास लेख कम्पोज करबाक, ओकर प्रूफकेँ करेक्शन करबाक लेल हमरा देल जाइत छल । ओहि पत्रिकामे लेखक सभक छपल नाम देखि-देखि हमरहु मनक कोनो कोनमे लेखक बनबाक ओ लेखक रूपमे अपन छपल नाम देखबाक स्पृहाक बीज अंकुरित भेल । ओहि प्रेसक एक-दू गोट सज्जन पुन: पढ़बाक हेतु उत्प्रेरित कयलनि ।

हम उच्चतम शिक्षोपाधि प्राप्त करबाक ओ भविष्यमे लेखक बनबाक दृढ़ संकल्पक संग पुन: 1951 मे एम.एल. एकेडमीक आठम वर्गमे नामांकन कराओल । अव्याहत रूपमे हमर अध्ययन चलैत रहल । हमर उभय संकल्प यथासाध्य फलित भेल ।

परिचयारम्भिकी

मायानन्दजीसँ कोन मासक कोन तिथिकेँ पहिल भेट भेल से स्मरण नहि । मुदा एतबा स्पष्ट स्मरण अछि जे एम. एल. एकेडमीक मैथिलीक लोकप्रिय अध्यापक, लोकप्रिय कवि-लेखक श्रद्धेय पण्डित श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क सान्निध्यमे 1953 मे मायानन्दजीसँ परिचित भेल रही । मायानन्दजी सी.एम. कालेजक छात्र रहथि आ हम एम.एल. एकेडमीक । वर्गमे भने अन्तर रहओ, वयसमे बड़ बेसी अन्तर नहि छल, कनेक उनैस-बीस ।

ओहि समयमे अमरजीक पहिने डेरा रहनि रायसाहेब पोखरि (लहेरियासराय)क कीर्त्तन भवन लग, जाहि ठाम हिन्दी-मैथिलीक प्रौढ़-युवा

लेखक लोकनिक जुटान होइत रहैत छलनि । पुनः 1953हिमे ओ रायसाहेब पोखरिक पछबारी-उतरबारी मोहारपर स्थित मक्कूबाबू मास्टरसाहेब (स्व. भुवनेश्वरप्रसाद, मैथिली बाल रामायणक रचयिता)क मकानमे अपन डेरा लऽ अनलनि जे हमर गामक आवाससँ बेसी निकट छल । ओहि ठाम मायानन्दजी बरोबरि आयल करथि आ हमहूँ ओतऽ गेल करी । साहित्यिकता हुनकहुमे आ हमरहु । ओ मुखर भऽ अपन परिचिति बना लेने रहथि आ हम अन्तर्मुखी भेल अभिव्यक्ति ओ परिचितिक हेतु मार्गान्वषेणमे रही ।

काव्य-रस-रंजना

अमरजीक डेरापर मायानन्दजी रवि दिन कऽ वा छुट्टीक दिन अथवा आनो दिन सन्ध्याकाल दरभंगासँ बरोबरि आयल करथि । ओहि ठाम अपन कोनो नव गीतक किछु चरण गाबि कऽ सुनबथिन तँ हमरा सुनबामे नीक लागय । ओही समयमे मायानन्दजी 'नभ आङनमे पवनक रथपर, कारी कारी बादरि आयल' रचने रहथि जे कवि सम्मेलनमे खूब जमैत छलनि । हमरो हुनक ओ गीत आ ओहन गीत सुनबाक इच्छा होइत छल । ओहने कोमल भाव, छन्द ओ लयक देखसी करैत कविता-रचना करबाक सेहन्ता होइत छल । ओहि समयमे गद्य-लेखनमे आत्म विश्वास भऽ गेल छल, विशेषतः कथा-लेखनमे । मुदा हमरा छन्द सोझराइत नहि छल । दोहा, चौपाइ आ फकड़ाक छन्दमे बड़ बेसी आयास नहि करऽ पड़ैत छल परन्तु गीत-रचनाक हेतु छन्द-विन्यास आ कतोक चरण धरिक अन्त्यानुप्रास-योजनाक निर्वाह सोझराइत नहि छल । पश्चात् हमरा गीतो-रचनाक प्रविधिमे गति आबि गेल । आ तखन कतेको गीतक रचना कयलहुँ जाहिमे मायानन्दजीक सौन्दर्य-गीत अवचेतन मनमे उद्बोधक-हेतु बनल होयत ।

पंडितजी (श्रीअमरजी)क डेरापर अबैत रहबाक क्रममे हुनक दुइ गोट विचित्र आचरण एखनो धरि मोन अछि ।

उनटा सिरमा

ओ गर्मी मासमे कोनो-कोनो दिन रातिमे पण्डितजीक डेरापर रहि जाथि तँ कोठलीसँ चौकी बहार कऽ आधा चौकी बरंडापर (जे आठ-दस इंच मात्र ऊँच रहैक) राखथि आ आधा बाहरमे ले कऽ कऽ । चौकी अनेरे बरंडा दिस ऊँच आ बाहर दिस नीचाँ भऽ जाइक । लोक माथ ऊँच रखबा लेल

गेडुआ लेल करैत अछि । मुदा मायानन्दजी ठीक एकर उनटा, चौकीक निचला भाग दिस सिरमा राखथि आ उँचका भाग दिस पौथान । कहथिन जे एहिसँ रक्तसंचार होइत छैक । एहि तर्कपर ककरो हँसी लागि सकैत छलैक । पता नहि, आब कोना सुतैत छथि ?

उनटा गंजी

मायानन्दजी गंजी उनटा पहिरैत छलाह । पंडितजी एक दिन टोकारा देलथिन-मायानन्द ! गंजी उनटा पहिरने छी !'

मायानन्द उत्तर देलथिन- आह ! गंजी तँ एहिना पहिरल जयबाक चाही । देखल जाय ने...।' ओ देहसँ गंजी बहार कऽ देखबैत कहलथिन-गंजीक उपरका भाग चिक्कन होइत छैक, मुदा भितरका भाग खरखर तँ रहितहि छैक, संगहि ओकर सीयनि सेहो रहितहि छैक जकर देहमे गड़ब स्वाभाविक । मुदा उनटा गंजी पहिरलासँ चिकनका भाग देहमे सटैत छैक जे नीक लागै छै । आरामदेहो होइ छै ।'

पंडितजी मायानन्दजीक प्रयोग आ तर्कसँ ततेक प्रभावित भेलाह जे ओहो उनटा गंजी पहिरऽ लगलाह । हमरहु भेल जे कवि-लेखकक रूपमे परिचित होयबा लेल लीख छोड़ि कऽ चलब आवश्यक होइत छैक । तँ देखसीमे हमहूँ उनटा गंजी पहिरऽ लगलहुँ । किछु मास धरि तँ ई प्रयोग चलल मुदा लोक ततेक ने टोकऽ लागल जे मोन अकछाय लागल । एक दिन अभिभावक वर्गक एकटा मित्र हमर तर्कपर कहलनि-अँय औ ! अहाँक देह ततेक सुकुमार अछि जे गंजीक खरखर भाग आ ओकर सीयनि देहमे गड़ैत अछि आ देहमे चाँछ लगैत अछि ?'

ई व्यंग्य-वाक्य हमरा सहन नहि भेल । हम तँ उनटा गंजी पहिरब छोड़ि देलहुँ मुदा पंडितजी एखनहुँ धरि उनटे गंजी पहिरैत छथि । ज्ञात नहि अछि जे मायानन्दजी आब कोना गंजी पहिरैत छथि । उनटा की सुनटा ?

भाङ आ पान

पान मायानन्दजीकेँ आरम्भेसँ अत्यन्त प्रिय रहलनि अछि । दरभंगा टावरपर एकटा खास पानक दोकान छलैक जाहि ठाम जा कऽ पान खयबे करथि । दरभंगासँ चल गेलाक बाद जहिया कहियो दरभंगा आबथि तँ ओहि पानक दोकानक पान खायब अनिवार्य रहैत छलनि ।

अमरजीक डेरापर भाङ आ पानक नियमित व्यवस्था रहैत छल । 'भाङ्क लोटा'क लेखकर्कें भाङसँ सिनेह कतेक रहल होयतनि से सहज अनुमेय । हमरा मुदा भाङसँ कोनो आकर्षण नहि, प्रत्युत विकर्षणे । मायानन्दजी जखन अमरजीक डेरापर आबथि तँ भाङ आ पान बड़े विन्याससँ चलल करय ।

विवाहक तेसर बरख, 1961क एक्समसमे मिश्रटोलामे रही । एस.पी. कॉलेज, दुमकामे लेक्चरर भेलाक बाद ई हमर पहिल छुट्टी छल । मायानन्दोजी लेक्चरर भेलाक बाद पहिल बेर दरभंगा अपन सासुर आयल छलाह । प्राय: 31 दिसम्बर अथवा पहिली जनवरीक सन्ध्याकाल मायानन्दजी अमरजीक मिश्रटोला डेरापर (मने हमर सासुर) अयलाह । पंडितजी भाङ घोरलनि । भाङ चलल । पान चलल । हम निरपेक्ष दर्शक मात्र रही ओहि सबसँ । मायानन्दजी अत्याग्रहपूर्वक हमरहु थोड़ेक मात्रा पिया देलनि– लैह, एते पीने भाङ नहि लगैत छैक ।' फेर दुनू गोटे टावरपर गेलहुँ । ओतऽ केबिनमे मधुर खाइत गेलहुँ । भाङपर मिट्ठक संयोग । भाङ विशेष लागि गेल । ओमहरसँ घुरती काल घुरमी जकाँ लागऽ लागल । मायानन्दजी कुटिल हँसी हँसैत पुछलनि–की हओ ! भाङ तँ नहि ने लगलह अछि ?'

हम कहलियनि–जबर्दस्ती भाङ पिया देलहुँ आ आब पुछै छी जे भाङ तँ नहि लगलह ! माथ घूमै अछि। लगैए जेना नचौने जा रहल अछि । पैर तलमलाइए । अनेरे की कहाँ सोचने जा रहल छी ।'

–हय, भट् ! भाङ कतौ लागलैए ।' ओ हमर बातकेँ खारिज करैत कहलनि– हओ ! भाङ पीलाक बाद तँ कथाक अद्‌भुत आ विलक्षण प्लॉट आ कविताक पाँती सब फुराइ छै । तोरा किछु ने फुराइ छह ? बड़ अद्‌भुत बात ! अद्‌भुत आ विलक्षण ! आश्चर्य ! घोर आश्चर्य ! बड़ भारी प्रचण्ड छह तोँ...।'

मिश्रटोला डेरापर आबि मायानन्दजीसँ विशेष गप्प नहि भऽ सकल । हम बेसुध भऽ सूति रहलहुँ । मायानन्दजी कखन गेलाह सेहो नहि बुझि सकलहुँ। एहि घटना दिस संकेत करैत मायानन्दजी 6.1.62 केँ सहरसासँ दुमकाक पतापर पत्र लिखलनि– **नव वर्षक लेल अखंड शुभकामना । कहिया चललऽ दरभंगासँ ? दोसर दिन केहन मोन रहलऽ ?... बेस 'बोर' केलऽ हमरा...... तोरे दुआरे रहलौं आ तोँ तेहन भगल केलऽ जे....... ।**

मायानन्दी गप्प-शैली

मायानन्दजीक गप्प करबाक आ कोनो बात कहबाक अपन विशेष शैली रहलनि अछि। खास शब्दावली, खास वाक्य-विन्यास आ खास भंगिमासँ सहजहि ककरो ध्यान अपना दिस केन्द्रित कऽ लेबामे ओ सर्वथा समर्थ रहलाह अछि। वाह, विलक्षण, अद्भुत, आश्चर्य, घोर आश्चर्य, बहुत खूब, अरे राम, आहि रेब्बा इत्यादिक प्रयोग हिनक वार्त्तालापमे बड़ सहज, बड़ बहुल। कोनहु बातकेँ विस्मयादि बोधक भावमे अबोध नेनाक सदृश कहब अथवा सुनब हिनक सामान्य विशेषता रहलनि अछि। परन्तु रेडियोमे घूटर भाइक रूपमे आ पश्चात् साहित्यिक मंचपर उद्घोषकक रूपमे वाणीक छवि-छटा ओ वक्रोक्ति सम्पुटित वचोभंगिमासँ श्रोताकेँ चमत्कृत आ रस विमुग्ध कऽ देबाक जे क्षमता विकसित भेलनि से हुनका समस्त मैथिली जगतमे प्रसिद्धिक शिखरपर आसीन कऽ देलकनि।

दरभंगाक गतिविधि

1954 क अन्तमे पंडितजीक डेरा बेंता चल गेलनि। मायानन्दजीकेँ ओहि डेरापर अयबामे किछु सौविध्य बढ़ि गेलनि। पुन: 1956 मे पंडितजी मिश्रटोलाक एकटा किरायाक मकानमे चल गेलाह। 1957 मे अपन नवनिर्मित आवासमे चल गेलाह। हमरालेल हुनक डेराक दूरी बढ़ैत गेल आ मायानन्दजीक लेल दूरी घटैत-घटैत एकदमसँ लग भऽ गेलनि। ओतऽ आब नित्य आबाजाही होअऽ लगलनि। हमहूँ 1955 मे सी.एम. कालेजमे नाम लिखाओल तँ हुनक डेरापर नियमित रूपसँ जयबामे असौकर्य नहि होइत छल। अत: निरन्तर मायानन्दजीसँ भेट होइतहि रहैत छल। जँ बीचमे भेटक अन्तराल होइत छल तँ मायानन्दजी कालेजेमे हमरा ताकि लैत छलाह अथवा हमहीं हुनक मिर्जापुरक सासुरावासपर जा कऽ भेट करैत छलियनि। भेट भेलापर विभिन्न प्रकारक साहित्यिक ओ वैयक्तिक गप्प होइत छल- बड़ी-बड़ी काल धरि। वैयक्तिक गप्प करबा काल कखनो कऽ मायानन्दजी अत्यन्त रोमांटिक भऽ जाइत छलाह जे हमर युवा मनकेँ जेना रमा दैत छल।

सतावन धरि अबैत-अबैत बड़ परिवर्त्तन भेल। सी.एम. कालेजक रूम नं. 3 (सम्प्रति सी.एम. साइंस कालेजक भवन) मे अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्क कार्यालय छलैक जाहिमे सतत ताला लागल रहैत

छलैक । श्रद्धेय सुमनजी प्रधानमन्त्री छलाह आ अमरजी प्रचारमन्त्री । सुमनजी 1953 मे हमर दुइ गोट कथा मिथिला-मिहिरमे छपने छलाह । कालेजमे गेलहुँ तँ हुनक छात्र बनबाक सौभाग्य भेटल । 1955 मे दैनिक स्वदेशक प्रकाशन आरम्भ भेल तँ ओकर वितरणमे हमर अतिरेकपूर्ण सहयोगिता रहल । सुमनजी परिषद्क कुञ्जी हमरा दैत आफिसक व्यवस्थाक भार दऽ देलनि जकर निर्वाहमे हम तावत धरि रहलहुँ जावत धरि सी.एम. कालेजक विद्यार्थी (जून 1959 धरि) रहलहुँ । अमरजी अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्क अप्रैल 1957क बहेड़ा अधिवेशनमे प्रधानमन्त्री निर्वाचित भेलाह आ हम संयुक्तमन्त्री निर्वाचित भेलहुँ ।

वास्तवमे 1957 धरि अबैत-अबैत हमरहुमे बड़ परिवर्त्तन भऽ गेल । अनेक प्रकरणक समवायिक कारण ओ साहित्यमे प्रवेशसँ हम सक्रिय मैथिली एक्टिविस्ट बनि गेल रही । लहेरियासराय-दरभंगाक परिक्षेत्रमे मैथिली आन्दोलनमे सक्रियता खूब बढ़ि गेल छल । स्कूल-कालेजमे छात्रगणकेँ मैथिली विषय रखबा लेल प्रयत्न, गाम सभमे छोट-छोट स्तरपर विद्यापति-जयन्ती वा मैथिली कवि-सम्मेलन, नाटकादिक आयोजन, दरभंगाक ओहि समयमे प्रसिद्ध आ सक्रिय साहित्यिक संस्था 'विद्यापति गोष्ठी'क मासिक बैसारक संवाद-सम्प्रेषण, मैथिली साहित्य परिषद्क बैसक सभक संवाद-सम्प्रेषण आदि-आदि कार्यक्रममे मायानन्दजीसँ भेट, विचार-विमर्श ओ सहयोगक आदान-प्रदान होइतहि रहैत छल । एहि अवधिमे मायानन्दजी बी.ए. पास कयलनि । दरभंगहिमे विवाह भेलनि मैथिलीक प्रसिद्ध कथाकार ललितक बहीनसँ । पूर्वमे ललितजी एम.एल. एकेडमी, लहेरियासरायमे शिक्षकक पदपर नियुक्त भेल छलाह । ओ लगभग पाँच वर्ष धरि कार्यरत रहलाह । 1957क मध्यमे ओ सब-डिप्टी कलक्टर भऽकऽ गोपालगंज चल गेलाह । अमरजीक प्रयत्न ओ प्रधानाध्यापक झिंगुरकुमरक सदाशयतासँ मायानन्दजीकेँ ललितक द्वारा खाली कयल गेल पदपर नियुक्ति भऽ गेलनि । एम.एल. एकेडमीमे सहायक शिक्षक सेहो भेलाह । एहि प्रकारेँ मायानन्दजीक कार्यक्षेत्र लहेरियासराय भऽ जयबाक कारणे हुनकासँ भेट-घाँटक हमरा विशेष अवसर भेटि गेल । मायानन्दजी दरभंगामे मैथिलीक विशिष्ट लोकप्रिय कविक रूपमे प्रतिष्ठित भऽ गेल छलाह । अमरजीक सान्निध्यमे रहैत मिथिला क्षेत्रहिक मैथिली मंचपर नहि अपितु अन्यहु प्रदेशक मिथिला-मैथिलीक आयोजनमे अमरजीक संग सम्मिलित भऽ यशस्वी होइत रहलाह ।

साहित्यिक सार-बहिनोइक मधुर प्रसंग

मायानन्दजीक एक मात्र सार छलथिन ललितेशमिश्र अर्थात् मैथिलीक कथाकार 'ललित' । ललितेशबाबू एम.एल. एकेडमीमे किछु समय धरि हमर सभक विज्ञान-शिक्षक छलाह । प्राय: आइ.एस-सी. परीक्षा देलाक बाद एम. एल. एकेडेमी ज्वाइन कयने रहथि । ओ हमरा सबकेँ बायोलोजी पढ़ाबथि । वर्गक अध्यापनक क्रममे हुनकासँ घनिष्ठता भेल जे बादमे आरो बढ़ैत गेल । हुनक पिता आ अमरजीमे भैयारी सम्बन्ध, तेँ अमरजी ललितजीक काकाजी । 1959 क जूनमे हमर विवाह भेल तँ विदा होयबा दिन ओहो अमरजीक ओतऽ उपस्थित रहथि । विदाक विधि भेलाक बाद श्रेष्ठ जनकेँ गोड़ लगबाक क्रममे हुनको गोड़ लागऽ लेल निहुरलहुँ कि ओ हमर हाथ पकड़ि लेलनि-हाँ, हाँ, आब अहाँ हमर बहिनोइ आ हम अहाँक सार भेलहुँ ।' से बादमे गुरु-शिष्य सम्बन्धक संगहि सार-बहिनोइ-सम्बन्ध भाव सेहो राखथि । एहि प्रकारेँ हम आ मायानन्दजी परस्पर साढ़ू भऽ गेलहुँ आ तेँ मन्नी दीदी हमरा 'ओझाजी' कहि कऽ पटना प्रवासमे सम्बोधित करैत छलीह ।

ललितजीसँ, हमरा अपन विवाहसँ पूर्वहिसँ निरन्तर भेट आ साहित्यिक गप्प-सप्प, विशेषत: कथा-लेखनक प्रसंग भेल करय । मायानन्दजीक प्रसंग उठलापर ललितजी कहथि- हओ ! हम लिखै छी कथा । कथा पत्र-पत्रिकामे कहियो काल छपैत अछि । जे पत्रिका कीनैत अछि, सैह हमर कथा पढ़ि पबैत अछि । सामान्य लोक कथा सुनबाक लेल हमरा किएक बजाओत आ कविता रचब हमरासँ सम्भवे नहि । देखह, मीसर (मायानन्दमिश्र) अछि कवि । गबितो अछि नीक । तेँ ओकरा लोक कवि-सम्मेलनमे खूब बजबैत छैक । कोनो रवि अबंच नहि रहै छै । खूब घूमैए । काकाजी (अमरजी)क वरदहस्त छै, खूब माछ, दही, मिठाइ कचरैए । ऊपरसँ किछु प्राप्ति भऽ जाइ छै, से फराके ।'

मायानन्दजीसँ भेट होअय तँ कहथि-हओ ! हम जे कविसम्मेलनमे जाइ छी तँ ललित भीतरसँ कचकचाइत अछि । कविसम्मेलनसँ घूमि कऽ रातिमे आपस अबै छी तँ ललित अपना ओछाओनपरसँ सहटि कऽ हमरा लग चल अबैत अछि आ कहैत अछि-देखियह मीसर, तोहर हाथ सूँघि कऽ जे आयोजक तोरा की सब खुऔलकह अछि ?'

सार-बहिनोइक एहि रूपक अनेक खटमधुर आ रोमांटिक प्रसंग आ

गप्प सुनबाक अवसर भेटैत छल । सुनबामे बेस मनोरंजक लगैत छल । सुनैत रहबाक इच्छा होइत रहैत छल ।

मोर बबुआकेँ नजरियो ने लागय

कोमल-मसृण भावक कविता आ कोमल स्वरक भविष्णु युवा कवि मायानन्दमिश्र ओहि समयक मैथिलीक वरिष्ठ कवि-साहित्यकारक अत्यन्त प्रियपात्र छलाह । एक प्रकारेँ सभक दुलारू । समवयस्को कवि लोकनिक मध्य तहिना स्नेहिल भाव । मणिपद्मजी मायानन्दजीसँ ततेक प्रभावित छलाह जे हुनकापर अत्यन्त वैयक्तिक संस्मरणात्मक निबन्धो लिखि कऽ प्रकाशित करा देलथिन । मायानन्दमिश्रपर केन्द्रित मणिपद्मजीक संस्मरण 'हुनकासँ भेट भेल छल' 1954 मे 'मिथिला मिहिर' मे प्रकाशित भेल छल जाहिमे मायानन्दक प्रति मणिपद्मक स्नेहातिरेकक भाव सहजहि छिलकैत बूझि पड़ैत अछि । अति स्नेहास्पदक प्रति अभिभावक वर्गक मनमे अनेरो आशंका सभ उठैत रहैत छैक। से आशंका मणिपद्मोजीक मनमे विद्यमान छलनि ।

ओहि संस्मरणमे मणिपद्मजी मायानन्दक रूप, गुण, प्रतिभा, प्रकृति, प्रवृत्ति, अभिरुचि इत्यादिक लालित्यपूर्ण वर्णनमे एकटा बड़ महत्त्वपूर्ण बात लिखने छलाह जे- 'अपना साहित्य गगनक अइ प्रकाशमान नक्षत्र दिस हमरा लोकनि बड़े आशासँ ताकि रहल छी । मोन पड़ि जाइत अछि हिन्दीक विख्यात साहित्यकार पंडित बनारसीदासचतुर्वेदीक नामसँ लिखल (भरिसक) अमर शहीद गणेशशंकरविद्यार्थीक एकटा पत्र । ई कोनो उदीयमान कलाकारक सम्बन्धमे लिखल गेल छल । विद्यार्थीजी लिखलैन्ह-ओइ तरुण कलाकारक बाँहिपर भैरवजीक जंतर (ताबीज) बान्हि दियौन्ह जे हुनका प्रगतिपर क्यो आँखि ने लगा दैन्ह ।' से अपना अइ तरुण कलाकार कै देखि कै यैह कल्पना होमै लगैत अछि जे हुनका प्रतिभापर क्यो आँखि ने लगा दैन्ह ।'

मणिपद्मजीक आशंका अन्ततः घटित भैए गेल । हुनक भैरव-यन्त्र (ताबीज) पड़ले रहि गेलनि आ हुनक तरुण कलाकार कवि मायानन्दमिश्रकेँ आँखि लागिए गेलनि, जनिका ओ 'निर्वात दीप' जकाँ राखऽ चाहैत छलाह। से कोना ?

प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः

मायानन्दजीक कविरूपमे लोकप्रियता कतिपय साहित्यकारकेँ पचि नहि रहल छलनि । इन्द्रक आसन दोलायमान भऽ उठल छलनि । प्रायः 1957-1958 मे एकटा घटना भेल जकरा हम साहित्यिक दुर्घटना करायब मानैत छी । ओहि समयक हिन्दीक प्रसिद्ध पत्रिका 'कहानी'मे नार्गाजुनक एक गोट पूर्णतः प्रायोजित उपहास-कथा 'आसमान में चन्दा तैरे' प्रकाशित भेलनि । ओहि कथामे चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' ओ मायानन्दमिश्रक गुरु-शिष्यक सम्बन्ध ओ साहित्य-चर्चाकेँ केन्द्रित कऽ उपहासात्मक गर्हित कथानक गढ़ल गेल छल । ओहि कथाकेँ राजकमल मैथिलीमे अनुवाद कऽ कलकत्तासँ प्रकाशित भेनिहार पत्रिका 'मिथिला-दर्शन'मे एवं पश्चात् स्वसम्पादित 'कथा-पराग' नामक कथा संग्रहमे छापि देलनि । ई प्रायोजित कथा मैथिली क्षेत्रमे ककरहु नीक नहि लगलैक । सुमनजी, मधुपजी, किरणजी, मणिपद्मजी, बहेड़जी, अणुजी इत्यादि वरिष्ठ साहित्यकार एवं अन्यो नव साहित्यकार एहि कथाकेँ साहित्यिक अपकर्म ओ मैथिली-साहित्यकार-विरोधी कहि कऽ निन्दा कयलनि । मैथिली साहित्यमे साहित्यकारक वैयक्तिक ओ पारिवारिक जीवनपर आक्षेप-उपहास मूलक कथा-कविता लिखबाक ई क्रम प्रारम्भ भेल, जकरा आगाँ बढ़ौलनि राजकमल, हरिमोहनबाबूक पारिवारिक जीवनपर आक्षेप-उपहास-गर्भित कथा 'हाथीक दाँत' लीखि कऽ ।

नागार्जुनक आक्षेप-उपहास मूलक ओ हिन्दी कथा आ ओकर मैथिली रूपान्तर पढ़ि कऽ मायानन्दजी हतप्रभ भऽ गेल रहथि । तत्काल हुनक साहित्य-सर्जनक प्रवृत्तिपर एकर प्रभाव परिलक्षित नहि भेल होइनि, परन्तु कालक्रमे ओकर प्रभाव अवश्ये दृष्टिगोचर भेल । हमरा स्पष्ट बूझि पड़ल जे ओहि घटनाक पश्चात् मायानन्दजीमे काव्य-विधाहिक प्रति विरक्ति आबऽ लगलनि । मायानन्दजी पूर्वहिसँ कथा सेहो लिखैत आबि रहल छलाह तथापि स्थापित होइत जा रहल छलाह कवि ओ कोमल गीतकारक रूपमे । परन्तु 'आसमान में चन्दा तैरे' कथाक प्रकाशनक बाद ओ गीत-रचना आ कवि-सम्मेलनमे ओकर पाठसँ कंछी काटऽ लगलाह । कवि आख्याकेँ तथापि जीवित रखबाक लेल मुक्त छन्दबला कविता लिखऽ लगलाह जे बौद्धिक व्यायाम अधिक रहैत छलनि । कवि सम्मेलनमे लोक हुनक सौन्दर्य-व्यंजक गीत सूनऽ चाहय आ ओ सुना देथिन बौद्धिक कविता । हमरा बुझाइत रहल जेना ओ आत्ममूर्त्तिभंजक

(सुइ-आइकोनो क्लैस्ट) बनि गेलाह आ विद्यापतिक उत्तराधिकारी वा अभिनव-विद्यापतिक गरिमापूर्ण आस्पदसँ वंचित भऽ गेलाह ।

'आसमान में चन्दा तैरे' कथाक नायक पद्मानन्द जेना कथान्तमे निश्चय करैत अछि जे आब ओ काव्य नहि, गद्ये लिखत, ठीक तहिना मायानन्दजी गीत-सर्जन वा छन्द मूलक काव्य-सर्जनसँ विमुख भऽ गेलाह आ अपन सर्जनाशक्तिकेँ उपन्यास-उन्मुख कऽ देलनि । ओही अवधिमे ओ 'बिहाड़ि, पात आ' पाथर' उपन्यासक रचना कयलनि जकर पाण्डुलिपि दरभंगेमे पढ़बाक लेल हमरा देने छलाह । हिन्दी दिस सेहो झुकाव होअऽ लगलनि । ओ दिल्लीक हिन्दी-प्रकाशक राजकमल धरि प्रकाशनक जोगाड़ धरबऽ लगलाह आ कालान्तरमे कृतकार्यो भेलाह ।

पटना आकाशवाणीमे नियुक्ति

1958 क उत्तरार्द्धमे पटना आकाशवाणीमे 'चौपाल' कार्यक्रममे कार्यरत मैथिली कम्पीयर 'चेतन' नामधारी कवि अनन्तबिहारीदास 'इन्दु'क अन्यत्र चल गेलापर, ओही पदपर मायानन्दजीक नियुक्ति भेलनि आ ओ पटना चल गेलाह । पटना रेडियोक चौपाल कार्यक्रममे 'घूटर भाइ'क रूपमे हुनक छवि-छटापूर्ण वाणी लोकक कान धरि निरन्तर पहुँचऽ लागल । हुनक रोचक ओ चमत्कारक वार्त्तालाप सुनबाक लेल लोक उत्सुक रहऽ लागल तथा मैथिली क्षेत्रमे चौपाल कार्यक्रमक लोकप्रियता अत्यन्त बढ़ि गेल ।

पटनासँ पत्राचार

मायानन्दजीसँ लहेरियासराय-दरभंगामे निरन्तर भेट-सम्पर्क होइत रहैत छल, से हुनक पटना चल गेलासँ स्वभावतः बन्द भऽ गेल । अवश्ये ओहि समयमे हमरा एकटा रिक्तताक अनुभव भेल छल । परन्तु पटना गेलोपर हुनकासँ निरन्तर पत्राचार होइत रहल । ओहि समयमे हमर सन्ध्या कालक नियत स्थान छल लहेरियासराय टावर लग स्थित कमला मेमोरियल लाइब्रेरी । अतः ओही ठामक पतासँ मायानन्दजी हमरा पत्र देल करथि आ अन्तरंग विचार-चिन्तनक आदान-प्रदान भेल करय । ओही पत्र सबमेसँ एक-दूटा नमूना देखल जा सकैछ-

7.11.1958 केँ एकटा पत्र मायानन्दजी लिखैत छथि जे हमरा 13.11.1958 केँ भेटैत अछि-

आकाशवाणी, पटना

श्रीरामदेव !, जय मैथिली 7.11.58

तोँ तँ बेस कटाह चिट्ठी दऽ कै बिसरि गेलाह । हमरा तँ उत्तर देबामे आसकति होइते अछि । बड़ अभागक लक्षण थिक ई । राजकमलवला प्रकाशन-गप्प एखन सेरायल छै । एहि विषयमे पाछू लिखबहु । तखन एखन एकटा लोककथा हिन्दीमे, नीक, हास्य रसक टिपिकल 5-6 पेजक पठबह । श्रद्धेय अमरजीकेँ सेहो पठबै लै कहिहक (नु?) । तखन फरवरी धरि रेडियोमे तोरासँ भेट हैत । भूषणजी, पाठकजी, इन्द्रकान्त (नाथ?) जी, बहेड़जी, पाण्डेजी, लोकपतिजी तँ एको बेर नञि ऐलाह अछि कि ने ? की विचार तोहर ? आञि हौ श्रद्धेय किरणजी रेडियो आबि सकै छथि ? आ ईशनाथझा ? खानगीमे अमरजीसँ पुछिहनु ।

एकटा डेरा लेल अछि, नीक नञि अछि तीस टाकामे । बौकन सब सेहो ऐल अछि एत्तहि । ललित ऐल छलाह । आर सब नीके । उत्तर दिहऽ बिनु उत्तरक आशा कैने । तोहरे- मायानन्द

एकटा पत्र 13.11.58 केँ लिखैत छथि जे हमरा 18.11.58 केँ भेटैत अछि-

आकाशवाणी, पटना

श्रीरामदेव ! 13.11.58

तोरा एकटा कार्ड हम आरो देने छलिअहु । उत्तर नञि भेटल । आइ एकटा काज करऽ- 'पल्लव' मे गत वर्ष प्राय: सितम्बर-अक्टूबर-नवम्बर कहियो विद्यापतिपर श्रद्धांजलि आ 'उपालम्भ' शीर्षक कविता छपल अछि । हमरा ओकर काज अछि से ताकि कै लीखि कै हमरा शीघ्र पठा देह, 23.11 केँ ओकर काज अछि । ओ अंक प्राय: श्रीशैलेन्द्रबाबू लग भेटि सकैत छहु । हे ! ई काज तड़फरमे करिहऽ । खूब मोन पाड़ि कै । ओतऽ आर की हाल-समाचार ? की कोना ? श्रद्धेय अमरजीकेँ हमर स्मरण कहि दिहौन ।

–मायानन्दजी

परन्तु पल्लवबला समस्त प्रसंगकेँ डरीरसँ काटि कऽ ओकर पाँजरमे लिखैत छथि- प्रकाशन विभागमे पल्लव श्रीगोपेशजी लग भेटि गेल । पोस्टकार्डक शीर्ष भागकेँ उनटा कऽ पुनश्चमे लिखैत छथि- श्रद्धेय अमरजीकेँ कहियौन जे प्रो. हरिमोहनबाबूकेँ पत्र लिखथिन प्रकाशनक विषयमे । आर की हाल ? की कोना ? श्रद्धेय अमरजीकेँ स्मरण कहि दियैन ।

ध्यान देबाक योग्य अछि जे 23.11. कें विद्यापति पर्व पड़ैत छलैक। पटनामे चेतना समिति द्वारा आयोजित विद्यापति पर्वमे ओहि कविताक पाठ करबाक छलनि। पटना-प्रवासमे व्यापक साहित्यिक आयोजनमे हुनक ई पहिल अवतरण होइतनि।

पटना प्रवासक साहचर्य

पटना विश्वविद्यालयमे एम. ए. (मैथिली)मे नाम लिखयबा लेल हम 17 अगस्त, सोम 1959 कें पटना पहुँचल रही। पटनामे तखन मायानन्दजीकें छोड़ि आन केओ परिचित नहि छल। जूनक अन्तिम सप्ताहमे हम रेडियो कवि-सम्मेलनमे पटना गेल रही तँ हुनक डेरा देखि लेने रहियनि। तेँ हुनकहि ओतऽ पहुँचलहुँ। हुनक डेरा तखन काजीपुर मोहल्लामे रहनि। गोपेशजी आ मायानन्दजी एकहि मकानमे रहैत छलाह। ओही मोहल्लामे प्रो. आनन्दमिश्र ओ कतेको अन्य मैथिल सभक सेहो आवास छलनि। मायानन्दजीक ओतऽ सामान राखि विश्वविद्यालय गेलहुँ। ओहि दिन पटनाक विख्यात एडवोकेट बलदेवसहायक देहान्त भऽ गेलनि। विश्वविद्यालय बन्द भऽ गेल, एडमीशन नहि भेल। दोसर दिन खूब बरखा भेलैक, एडमीशन तँ ओहू दिन नहि भेल। खाली समयमे बुनछेक भेलापर मायानन्दजीक संग हरिमोहनबाबूक ओतऽ गेलहुँ हुनक दर्शन करऽ। हरिमोहनबाबूक डेरापर जयबाक ई पहिल अवसर छल। पश्चात् पटना-प्रवासक अवधिमे हुनका ओतऽ हम दुनू गोटे निरन्तर नियमित रूपेँ जाइत रहलहुँ।

19 अगस्तकें एडमीशन भेल आ ओही दिन लहेरियासराय आपस भऽ गेलहुँ। पुन: 31 अगस्तकें पटना पहुँचलहुँ, एम. ए.क क्लास आरम्भ भऽ गेल छलैक। एहि अभ्यन्तर मायानन्दजी अपन मकानक सटले पच्छिम हमरा लेल एकटा किरायाक कोठली ठीक कऽ कऽ रखने छलाह। एक मास ओही कोठलीमे रहलहुँ। ओहिमे बड़ अभाव-असुविधा छलैक। तेँ बादमे छोड़ऽ पड़ल।

ओहि ठाम रहैत कालमे मायानन्दजी एकटा ट्यूशन सेहो ठीक कऽ देलनि। प्रेममोहन ओ चन्द्रमोहन नामक स्कूली छात्रकें भिनसर-साँझ एक-एक घंटा पढ़यबाक छल, यदर्थ तीस टाका मासिक भेटितय। गोटेक हप्ता पढ़ौलाक बाद अनुभव भेल जे एहिसँ हमर एम.ए.क पढ़ाइ आ साहित्य-चर्या दुनू बाधित होयत, तेँ ओ ट्यूशन छोड़ि देल।

पूजावकाशक पश्चात् हम नव डेराक व्यवस्था कयलहुँ। काजीपुर मोहल्लाक गली जतऽ लोअर रोडपर मिलैत छैक, ओही ठाम नयाटोलामे

खजांची रोड-चौकसँ कनेक पूब, सड़कसँ उत्तर स्थित छल-यात्रीजीक शब्दमे 'कंचन-भवन मैथिलक होटल पटनामे विख्यात'। हम ओहीमे अपन डेरा लऽ अनलहुँ। मुदा पूजावकाशेक अवधिमे मायानन्दजी अपन डेरा कदमकुआँ लऽ गेलाह। 1960क ग्रीष्मावकाशक पश्चात् हम होटल छोड़ि भिखना पहाड़ीक मण्डल लॉजमे चल गेलहुँ जतऽ पूरा एक वर्ष रहलहुँ। ओमहर मायानन्दजीक डेरा पुनः कदमकुआँसँ चिड़ैयाटाड़मे चल गेलनि। एहि प्रकारेँ दुनू गोटेक आवासीय दूरी बढ़िते गेल, किन्तु भेट-घाँट आ सम्पर्क-साहचर्यमे कोनो व्यवधान नहि भेल। ओ हमरा डेरापर आयल करथि। हम हुनका डेरापर अथवा सायंकाल रेडियो स्टेशन गेल करी। स्थान आ समयक सौविध्यानुसार जमि कऽ बैसार अथवा साहित्यिक, सांस्कृतिक वा विशिष्ट लोकसँ सम्पर्कक प्रयोजने भ्रमण सामान्य बात छल।

एम.ए.मे पढ़बाक निमित्त पटनामे हम अगस्त 1959 सँ अगस्त 1961धरि दू वर्ष रहलहुँ। 1961 क अगस्तक प्रथम सप्ताहमे परीक्षा समाप्त भेलापर हम गाम चल अयलहुँ। मायानन्दजी सेहो सहरसा कालेजमे मैथिलीक व्याख्याता पदपर नियुक्ति भेलापर नवम्बर 1961 मे आकाशवाणीक सेवाक परित्याग कऽ सहरसा चल गेलाह। हुनकहु पटना छूटि गेलनि।

पार्थ-सारथी

ओहि समयमे पटनामे उच्च पदस्थ बहुतो मैथिल लोकनि विद्यमान छलाह। हुनका लोकनिमे मातृभाषा मैथिलीक प्रति अशेष अनुराग छलनि। हुनकहि लोकनिक दिशा-निर्देश ओ सहयोगितामे चेतना-समिति कार्यरत छल। ओकरा तखन अपन भूमि-भवन नहि छलैक। तहिना युवा पीढ़ीक समर्पित कार्यकर्त्ताक नितान्त अभाव छल। मायानन्दजी आ हम दुहू गोटा मैथिली-कार्यकर्त्ताक रूपमे खूब सक्रिय रहलहुँ। ओहि समयमे हमर दुहू गोटाक हृदयमे मैथिलीक विभिन्न समस्याक प्रति व्यग्रता ओ सर्वविध विकासक अदम्य आतुरता छल। विभिन्न विषय ओ विभिन्न काजक हेतु मायानन्दजी चिन्तन करथि आ हम क्रियान्वयन हेतु अग्रसर होइ। हम योजना बनाबी आ मायानन्दजी ओकरा क्रियान्वयन हेतु सक्रिय भऽ जाथि। कखनो दुहू गोटे सम्मिलित रूपसँ योजना बनाबी आ संयुक्त रूपसँ ओकरा पूरा करबाक हेतु सर्वात्मना लागि जाइ। सब काजक बीज-बिन्दु मैथिली रहैत छल आ केवल मैथिली। वास्तवमे हमरा लोकनि एक दोसराक हेतु पार्थ-सारथी बनल रही।

द्वाविमौ पुरुषौ

पटना प्रवासक दुइ वर्षक अवधिमे हम-मायानन्दजी अनन्य सहयोगी बनल रहलहुँ । जे योजना बनाबी, कार्यान्वयन करी वा कार्यान्वयन हेतु कतहु जाइ तँ संगहि संग । अपन विभिन्न उद्देश्यक पूर्त्यर्थ विभिन्न वर्गक लोक सभसँ सम्पर्कक हेतु भ्रमण करब हमरा लोकनिक एक प्रकारेँ नित्यचर्या बनि गेल छल । पाछाँ ई स्थिति भऽ गेल जे ककरो मायानन्दजीकेँ कोनो समाद वा कोनो सामग्री पहुँचयबाक होइक तँ तकर भार हमरा दऽ दिअय । तहिना ककरो कोनो समाद-सामग्री हमरा धरि पहुचयबाक रहैक तँ तकर भार मायानन्दजीकेँ दऽ देल करनि । दुहू गोटे एक प्रकारेँ परस्पर एक दोसराक सन्देशवाहक बनि गेलहुँ । क्वचित्-कदाचित् मायानन्दजी जँ कतहु जाथि तँ एकसर देखि लोक हमरा सम्बन्धमे जिज्ञासा कऽ देनि आ हमरा एकसर देखय तँ हुनका सम्बन्धमे जिज्ञासा कऽ बैसय-आइ मायानन्दजीकेँ नहि देखैत छियनि ?'

हरिमोहनबाबूक नियमित सान्निध्य

हमरा लोकनिक भ्रमण-कार्यक्रममे एकटा महत्त्वपूर्ण लक्ष्य-बिन्दु रहैत छल हरिमोहनबाबूक निवास-स्थान । ओहि समयमे हरिमोहनबाबूक डेरा छलनि रानीघाटमे स्थित यूनिवर्सिटीक एकटा क्वार्टरमे दुमहलापर । हरिमोहनबाबूसँ पूर्वमे दरभंगामे दू-एक बेर दर्शनक अवसर भेटल छल । हुनका हाथसँ पुरस्कारो पौने छलहुँ । मुदा पुनः प्रत्यक्ष दर्शन भेलापर चीन्हि जाथि से सौभाग्य नहि भेटल छल । से बड़ कठिनतासँ सम्भव भेल छल । पटनामे रहैत किछु एहन अवसर ओ प्रसंग सभ आयल जाहिसँ हरिमोहनबाबू नामसँ सेहो चीन्हऽ लगलाह । हरिमोहनबाबूक ओतऽ मायानन्दजी आ हम विशेष काल रवि आ बुध कऽ जाइ । रवि दिन हमरा छुट्टी आ बुध दिन मायानन्दजीकेँ छुट्टी रहैत छलनि । हरिमोहनबाबू हमरा दुहू गोटेकेँ मानितो छलाह विशेष । जखन हम सब जाइ तँ अपन धर्मपत्नीकेँ सोर कऽ कऽ कहथिन– कहाँ छी अए ! ई सब हमर मानसपुत्र थिकाह । हिनका सबकेँ (अमुक वस्तु)खुअबिऔन ।'

वस्तुतः सप्ताहक एहि दुहू दिन हरिमोहनबाबू हमरा सभक पहुँचबाक व्यग्रतासँ प्रतीक्षा करैत रहैत छलाह । एक बेर बुध दिन हुनका ओतऽ नहि जा सकलहुँ । रवि दिन दुहू गोटे गेलहुँ । हरिमोहनबाबू मायानन्दजीकेँ पूछि देलथिन-अहाँ बुध दिन नहि अयलहुँ ?' मायानन्दजी हमरा दिस ताकि

भिनसरहुमे एहिना भेल करय । अवश्ये भिनसरमे ओ निचैन रहि गप्प करथि आ हमरा धड़फड़ी भऽ जाय क्लास जयबाक ।

ओहि समयमे ओ **माटी के लोग और सोने की नैया** लीखि रहल छलाह । नित्य दिन नव अंश सुनाबथि, ओहि कालक सहरसा जिलाक प्राकृतिक भूगोलक सेहो व्याख्या करथि जे ओहि उपन्यासक पृष्ठभूमि छलैक । जे अंश सुनाबथि तकर समालोचनो भेल करय ।

ओहि अवधिमे जेना हमरा दुहू गोटा साहित्यमय भऽ गेल रही । साहित्य चर्चासँ छाक नहि पूरय। ओही अवधिमे हुनका आ हमरहु कतेको कथाक 'थीम' आ 'प्लाट' सभ उपकल, परस्पर समीक्षा भेल आ कथाक आकार ग्रहण कऽ पश्चात् पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित होइत रहल । ओहि अवधिक आ तकरा बादहु पटना-प्रवासमे परिकल्पित हमरा दुहू गोटाक कथा सब ओहि कालमे बेस चर्चामे आयल छल ।

डेरा लग डेरा रहबाक कारणे मायानन्दजीकेँ भीतरसँ नीक जकाँ चिन्हबाक अवसर भेटल । हुनक रुचि, प्रवृत्ति, आचार-स्वभाव, पारिवारिक व्यवहार इत्यादिकेँ अत्यन्त लगसँ देखबाक, अनुभव करबाक सुयोग भेटल । पारस्परिक सम्बन्ध साहित्यिक आ औपचारिक मात्र नहि रहि गहन अन्तरंगता आ अम्लान आत्मीयतामे परिणत भऽ गेल ।

पहिल बेर अपन गामसँ बाहर अपन आत्मीय जनसँ दूर भऽ कऽ रहबाक परिस्थिति आयल छल । 'होम सिकनेस' बड़ बेसी छल । एहनमे मायानन्दजी आ हुनक धर्मपत्नी मन्नी दीदीक सान्निध्य भरसाहा दैत रहल, एकरा हम बिसरि कोना सकैत छी !

हमरो मोन अछि जे ओहि खेप पूजावकाशमे गाम विदा भेल रही तँ मायानन्दजीक मुखमंडलपर फराक होयबाक खेद छलनि । ओ हथियाक विकट झाँट-बिहाड़ि-वर्षा होइत रहबाक स्थितियोमे हमरा महेन्द्रूघाटमे जहाजपर चढ़यबाक लेल रिक्सापर संग-संग आयल रहथि । जहाज जखन जेट्टी छोड़ि देलक तखन हाथ हिला कऽ विदा कयने रहथि ।

पुस्तक-प्रकाशन

हम मानैत छी जे हमरा सभक ई दुनू वर्ष मैथिली आन्दोलनमे यथाशक्य योगदान ओ अपन लेखन-वृत्तिमे अत्यन्त महत्वपूर्ण ओ सक्रिय रहल । कलकत्तामे मैथिली आन्दोलनक ध्वजधारी प्रसिद्ध बाबूसाहेबचौधरीसँ

हमरा 1953हिसँ निकट परिचय छल । पटनाक जे कोनो मैथिली सम्बन्धी आन्दोलनक काज होइक से पत्र द्वारा सूचित करथि । पटना आबथि तँ हमरहुसँ भेट ओ विचार-विमर्श करथि । ओ पत्र द्वारा सूचित कयलनि जे– हम पटना आबि रहल छी, मिथिला-दर्शन ओ मैथिली पोथीक प्रकाशनमे साहित्यकार लोकनिसँ विचार-विमर्श करबाक अछि।' ओ पटना अयलाह । हरिमोहनबाबू ओ अन्यान्यो मैथिलीप्रेमी लोकनिसँ भेट कयलनि । हमरहुसँ विस्तरेण विचार कयलनि। ओ कलकत्तासँ पाँच गोट मैथिली पोथीक प्रकाशनक योजना बनौलनि-हरिमोहनबाबूक 'चर्चरी', ब्रजकिशोरवर्माक 'विद्यापति' उपन्यास तथा मायानन्दजीक उपन्यास 'बिहाड़ि, पात आ' पाथर'क अतिरिक्त मायानन्दजीक ओ हमर एक-एक गोट कथा संग्रह ।

वस्तुतः ओहि समयमे हमरा आ मायानन्दजीमे कथा-लेखनक एकटा आत्मीयतापूर्ण प्रतिस्पर्द्धा जकाँ छल । बाबूसाहेबचौधरी ओ प्रो. प्रबोधनारायणसिंहक सत्प्रयाससँ कलकत्तासँ नियमित रूपेँ प्रकाशित भेनिहार पत्रिका 'मिथिला-दर्शन'मे हमरा दुहू गोटाक बेरा-बेरी कतोक कथा छपैत रहैत छल । योजना बनल छल जे 'मिथिला-दर्शन' मे हमर ओ मायानन्दजीक जे कथा सब छपल करत तकर रिप्रिण्ट बहार कऽ लेल जायत एवं किछु आरो नव-पुरान कथा जोड़ि कऽ दुहू गोटाक एक-एक गोट कथा-संग्रह प्रकाशित कयल जायत । एहि योजनाक अनुसार मायानन्दजीक कथा संग्रह **आगि, मोम आ' पाथर** प्रकाशित भऽ गेलनि । परन्तु हमर कथा-संग्रह **एक खीरा : तीन फाँक**क विज्ञापनो प्रकाशित होअऽ लागल, किछु रिप्रिण्टक रूपमे कतोक फर्मा छपियो गेल, किन्तु कोनो तेहन कलकतिया पेच लागि गेलैक जाहिसँ हमर कथा-संग्रह 1960 मे प्रकाशित नहि भऽ सकल आ कतोक वर्ष बाद 1965मे दरभंगासँ प्रकाशित भऽ सकल। अवश्ये कलकत्तासँ, योजनानुसार पाँचम पोथीक रूपमे, **अछिंजल** नामसँ संकलित कथा-संग्रह प्रकाशित भेल ।

आगि, मोम आ' पाथरक भूमिका

मायानन्दजी अपन कथा-संग्रह **आगि मोम आ' पाथर** क भूमिका स्वयं नहि लीखि अनकासँ लिखाबऽ चाहैत छलाह । ओहि समयमे पटनामे हरिमोहनबाबू, कुमार गंगानन्दसिंह, यात्रीजी, डा. सुधाकरझा शास्त्री, प्रो. जयदेव मिश्र सन मैथिली-मनीषी सब छलाह । ककरहुसँ मायानन्दजी आग्रह करितथिन तँ हुनक पोथीक भूमिका सहर्ष लीखि दितऽथिन । मुदा हमरा प्रति मायानन्दजीक

स्नेहातिरेके छलनि जे ओ अपन कथा-संग्रहक भूमिका लिखबाक लेल हमरा हुकुम देलनि । हम अत्यन्त अकचकायल रही तँ ओ बाजल छलाह-नऽञि, नऽञि, हमर पोथीक भूमिका तोरे लिखबाक छह । हमरा कथा-संग्रहक भूमिका एकदम कहानीनुमा होना चाही, से तोँ कऽ सकै छह ।'

हमहूँ कोनो पोथीक भूमिका लिखब से कहियो सोचनहुँ ने छलहुँ । मायानन्दजीक प्रस्ताव वा आदेश सूनि अचम्भित आ संकुचित रहि गेलहुँ । किछु नाकर-नुकुर कयलहुँ मुदा ओ मानलनि नहि-से सब नञि चलतऽ । तोरा लिखना छह ।'

हमरो भीतरसँ कनेक नीके लागल । ओहि समयक सोचक अनुसार **आगि मोम आ' पाथर** कथा-संग्रहक भूमिका लीखि मायानन्दजीकेँ देलियनि-एहिमे काट-छाँट, जोड़-घटाओ जे करबाक हो से कऽ देबै ।'

मुदा ओ ओहि भूमिकामे कोनो परिवर्त्तन नहि कयलनि । भूमिका यथावत् छपल ।

रेडियो नाटक-लेखन

पटनामे रहैत मायानन्दजीक सान्निध्यसँ हमरा एकटा महत्वपूर्ण उपलब्धि भेल जकरा हम बिसरि नहि सकैत छी । पटना रेडियोसँ हमरा कविक रूपमे बजाओल जाइत छल । दरभंगासँ गेलापर तँ मानदेयक अतिरिक्त टी.ए. सेहो भेटैत छल मुदा पटनामे रहलापर छुच्छे मानदेय, से बड़ अल्प । कविताक अपेक्षा रेडियो नाटकक स्क्रिप्टपर मानदेय राशि किछु बेसी छलैक । अत: मायानन्दजी विचार देलनि जे रेडियो नाटक लिखह । हम स्टेजपर अभिनेय नाटक ओ एकांकी लिखने छलहुँ जकर सभक अभिनय हमर गामक मंचपर भेल करय । रेडियो नाटक लिखबाक व्यावहारिक अनुभव नहि छल । मायानन्दजी रेडियो नाटकक शिल्प ओ ओकर नाट्य साधन- पॉज, शॉर्ट पॉज, लौंग पॉज, फ्लैश बैक, साउण्ड इफेक्ट इत्यादिक अर्थ आ प्रयोग बुझौलनि । पटना रेडियोमे मैथिली नाटकक प्रस्तुतिमे किछु व्यावहारिक सीमा आ अपरिहार्यता सब छलैक, जेना रेडियोमे वाचिक अभिनय कयनिहार पुरुष पात्रक अल्प संख्या, महिला पात्री एक वा दुइ गोट मात्र । अत: पटना रेडियोक निमित्त लिखित रेडियो नाटकमे एहि सब बातक ध्यान राखि नाटकमे पुरुष-पात्र ओ स्त्री-पात्रीक संख्या की रहय से मायानन्देजी बुझौलनि ।

ओहि निर्देशक आधारपर पटनामे कय गोट रेडियो नाटक लिखल जे रेडियासँ प्रसारित होइत रहल । ओहि अवधिमे **तिनके का संसार** (हिन्दी), **पियास, नव बाट : नव बटोही, दुलारक भूख, मनुक्खक देवता, नऽव जीवन, आदर्श कुटुम्ब** (हरिमोहनबाबूक प्रसिद्ध कथाक रेडियो रूपान्तर) इत्यादि लिखित प्रसारित भेल । एहि रेडिया नाटकमेसँ कतोक पाछाँ **पसिझैत पाथरमे** सेहो संकलित कयल गेल । एकर सभक श्रेय मायानन्देजीकेँ दैत छियनि ।

अभिव्यंजनाक योजना

पटना-प्रवासावधिक साहित्यिक घटनामे एकटा महत्त्वपूर्ण घटना छल **अभिव्यंजना** पत्रिकाक आयोजन ओ प्रकाशन । ओहि समयमे मायानन्दजीकेँ एकटा सूरि चढ़ल रहनि मैथिली कवितामे एकटा वाद प्रवर्त्तनक जकरा ओ अभिव्यंजनावाद कहैत छलाह । एहि हेतु एकटा पत्रिका-प्रकाशनक विचार उपकलनि । 1960क 19 जनवरी, मंगल दिन भोरे मायानन्दजीक डेरापर पहुँचलहुँ आ पत्रिकाक प्रसंग बहुत विचार-मन्थन भेल । अन्ततः निश्चय भेल जे एकटा संस्था बनाओल जाय **मैथिली जन साहित्य संस्थान** आ यैह पत्रिका प्रकाशित करय । मायानन्दजी पत्रिकाक नाम **अभिव्यंजना** रखबाक विचार व्यक्त कयलनि । नाम हमरो उपयुक्ते लागल । प्रकाशनावधि द्वैमासिक रखबाक विचार भेल ।

हमर डेरा कंचन भवनमे छल । हमरा डेराक लगहिमे प. जयनाथमिश्रक अजन्ता प्रेस स्थित छल । अजन्ता प्रेस साहित्यिक प्रकाशनमे विशेष अभिरुचि रखैत छल । अजन्ता प्रेसेसँ हिन्दीक साहित्यिक पत्रिका **अवन्तिका** तथा बाल-पत्रिका **चुन्नू-मुन्नू** बहराइत रहल छल । हम अजन्ता प्रेसमे **चुन्नू-मुन्नूक** अंशकालिक प्रूफ रीडिंगक काज सेहो करऽ लागल छलहुँ । मायानन्दजी जयनाथबाबूसँ **अभिव्यंजनाक** प्रसंग गप्प कयलनि । जयनाथबाबू **अभिव्यंजनाक** मुद्रणक सुविधा देबाक आश्वासन देलथिन । हमरा लोकनि उत्साहित भऽ कऽ सामग्री संकलनमे लागि गेलहुँ । चेष्टा ई छल जे किछु अभिनव वस्तुक समायोजन अवश्य होअय । निश्चय भेल जे मैथिलीक दुइ गोट वरिष्ठ लेखकक साहित्यिक इंटरव्यू देल जाय । ओहि समयमे पटनामे ज्यौतिषाचार्य बलदेवमिश्र एवं कुमार गंगानन्दसिंह (तत्कालीन बिहारक शिक्षामन्त्री) उपलब्ध छलाह । दुहू गोटेपर फराक-फराक प्रश्नावली तैयार कयलहुँ । कुमार साहेबक इंटरव्यू थोड़ेक कठिनाह छल । अतः हुनक इंटरव्यू तैयार करबाक भार मायानन्दजी

श्रीसाकेतानन्दजीकेँ देलथिन जे कुमार साहेबक छज्जूबाग स्थित आवासमे हुनकहि संग रहैत छलाह । प. बलदेवमिश्रक इंटरव्यूक भार हम लेलहुँ । प. बलदेवमिश्रक डेरा पटना म्यूजियम परिसरमे छलनि । हम तीन-चारि दिन हुनका ओहि ठाम जाय हुनक इंटरव्यू लेलहुँ । साकेतानन्द तखन छात्रे रहथि । कुमार साहेबक इंटरव्यू पूरा नहि लऽ सकलाह । तखन मायानन्दजी स्वयं भार लेलनि। हमरा सेहो संग रखलनि । बिहारक तत्कालीन शिक्षा मन्त्री कुमार गंगानन्दसिंहसँ किछुओ काल गप्प करब कठिन छल । तथापि अनेक दिनक प्रयाससँ हुनक इंटरव्यू सम्भव भऽ सकल । मायानन्दजी हुनक जीवनक सम्बन्धमे, साहित्य लेखनक सम्बन्धमे गोटेक प्रश्न पुछथिन । ओ जे बाजथि से हम टिपने जाइ । डेरापर आबि ओकरा फेयर कऽ ली । ओही इंटरव्यूसँ ई तथ्य प्रकट भेल जे **मनुष्यक मोल** उपन्यासक लेखक **भोल** अन्य क्यौ नहि, अपितु कुमार गंगानन्दसिंह थिकाह । दुनू इंटरव्यू सम्पादित रूपमे अभिव्यंजनामे छपल । अवश्ये इंटरव्यू तैयार कयनिहारक नाम जानि-बूझि कऽ नहि देल गेल ।

सम्पादनक द्वन्द्व

मायानन्दजीक इच्छा रहनि जे मैथिलीभाषी हिन्दी लेखक लोकनिकेँ मैथिली दिस मोड़ल जाय । अतः फणीश्वरनाथ रेणु ओ मधुकर गंगाधरकेँ एहि हेतु चुनलनि । मधुकर गंगाधर मैथिलीमे रचित अपन कविता देलथिन जाहिमे बड़ अल्प संशोधन (हिन्दी छापक) अपेक्षित भेल । मुदा रेणुजी अपन एकटा हिन्दी कथा **नेपथ्य का अभिनेता** देलथिन । मायानन्दजी ओकरा मैथिली भाषान्तर कऽ छापऽ चाहैत छलाह । हुनका विचारेँ एक बेर मैथिलीमे छपि गेलापर रेणुजी मैथिलीमे लिखबा लेल उत्साहित होयताह । मुदा हम हुनक विचारसँ असहमत छलहुँ। तथापि हुनक दुराग्रह देखि ओहि कथाक मैथिली अनुवाद कऽ कऽ देलियनि । मायानन्दजी ओहिमे यत्र-तत्र भाषिक परिवर्त्तन कऽ अभिव्यंजनामे राखि देलथिन । मुदा हमर असहमति निराधार सिद्ध नहि भेल, कारण रेणुजी तकरा बाद अपन गोटेक कथा ओ गोटेक पद्य मात्र मैथिलीकेँ देलथिन । मधुकर गंगाधरो तेहने सन ।

मायानन्दजी एकटा नव अपरिचित कविक सामाचकेबाक भासपर विरचित लोकगीत हमरा देलनि– एकरा ठीक-ठाक कऽ अभिव्यंजनामे दऽ दहक ।' कवितामे ने छन्दक निर्वाह, ने व्याकरणक निर्वाह, ने कतहु उपयुक्त

अन्त्यानुप्रास । हम कविता देखितहि खिन्न भऽ उठलहुँ– ई सब अभिव्यंजनामे नहि छापब ।'

मायानन्दजी एकदम सामान्य भावसँ कहलनि–दय दहक । नव आ उत्साही व्यक्ति छै । अभिव्यंजनाक बिकरीमे सेहो बहुत सहयोग करतै । की करबहक ? किछु रचना एहनो लोकक रहना चाही ।' मायानन्दजीक अतिशय आग्रह वा दुराग्रह देखि बात मानऽ पड़ल । अतः हम आधा मनसँ ओहि कविताकेँ जेना–तेना ठीक–ठाक कऽ अभिव्यंजना हेतु प्रेसमे दऽ देलियैक । आब होइत अछि, जे मायानन्दजी ठीक छलाह, हमहीँ गलती कऽ रहल छलहुँ । कारण ओ कविता छलनि श्रीरवीन्द्रनाथठाकुरक जे आगाँ चलि मैथिली साहित्यमे सर्वाधिक लोकप्रिय कविक रूपमे चर्चित–प्रशंसित भेलाह ।

मायानन्दजी मैथिली नाटकपर एकटा निबन्ध लिखबाक लेल कहलनि । हम **मैथिली नाटक : विकासवृत्त** निबन्ध लिखलहुँ । ओ निबन्धकेँ अभिव्यंजनामे देबऽ चाहैत छलाह । हम मना कयलियनि जे– हमर एकटा कथा **बट गाछक छाहरि** जाइए रहल अछि तखन दोसर रचना देब उचित नहि ।' मुदा ओ लऽ गेलाह आ अन्तिम समयमे प्रेसमे कम्पोजक हेतु दऽ अयलथिन । लेखकमे छद्म नाम देलथिन **धरणीधर** । बादमे हम एहि छद्म नामक कहियो उपयोग नहि कयलहुँ ।

वास्तवमे कंचने भवनमे अभिव्यंजनाक रूपरेखा बनैत रहल आ अजन्ता प्रेसमे छपैत रहल । मायानन्दजीकेँ जे कोनो रचना हस्तगत होइनि, से हमरा लग स्थित फाइलमे राखि जाथि । जे रचना भेटनि तकरा पढ़ि अवश्य लेथि, परन्तु अन्तिम रूपसँ रचना सभक संशोधन, प्रेसकापी तैयार करब, प्रेसमे पहुँचायब आ प्रूफ पढ़ब हमर काज रहैत छल । समय भेटलापर मायानन्दजी सेहो प्रूफ पढ़ैत छलाह मुदा से बेसी काल अनिच्छासँ ।

अभिव्यंजनाक विमोचन

10 मार्च 1960केँ अभिव्यंजनाक विमोचन हेतु वसन्तोत्सव मनयबाक निश्चय भेल । एहि आयोजन हेतु मायानन्दजीकेँ कतेक फिरीसान होअऽ पड़लनि आ कोन–कोन पापड़ बेलऽ पड़लनि तकर किछु सांकेतिक विवरण हम अपन डायरीमे लिखने छी । उक्त तिथिकेँ जे विमोचन समारोह भेल तकर सभापति छलाह अवधनारायणझा वकील । उद्घाटन–विमोचन कयलनि तत्कालीन

बिहार सरकारक सहकारिता उपमन्त्री देवनारायणयादव । ओ बजलाह–हम चाहब जे मैथिलीक ई पत्रिका चिरंजीवी रहय । एकरा लेल मैथिली भाषा–भाषी लोकनिकेँ सतत प्रयत्नशील रहबाक चाहियनि ।'

कार्यक्रम आरम्भ भेलाक पश्चात् तत्कालीन शिक्षामन्त्री कुमार गंगानन्दसिंह सेहो उपस्थित भेलाह । ओ आशीर्वचन दैत बजलाह जे– अपन देशक भाषा ओ साहित्यकेँ अधिकसँ अधिक समृद्ध एवं व्यापक बनयबाक चेष्टा कयल जयबाक चाही । एहि दिशामे पत्र–पत्रिकासँ बहुत महत्त्वपूर्ण सहयोग प्राप्त भऽ सकैत अछि । हमरा लोकनिकेँ पत्रकारिताक भविष्यक प्रति आशावान् होयबाक चाही आ एकरा लेल उचित चेष्टा करबाक चाही ।' ओ सद्यः प्रकाशित मैथिली पत्र **अभिव्यंजना**क प्रशंसा करैत कहलथिन जे- अभिव्यंजनाक मैथिली, मिथिलाक पंचकोशी–स्टैंडर्ड मात्रक प्रति आग्रहशील नहि, प्रत्युत विभिन्न जनपदीय बोली सबकेँ सेहो अपनामे समेटि कऽ लऽ चलबाक लेल उद्यत अछि । एकर ई प्रयास प्रशंसनीय अछि ।'

ओहि सभामे पटनाक बुद्धिजीवीक उपस्थिति बेस घनगर छल । धड़फड़ीमे अभिव्यंजनाक जे पचीस–पचास प्रति बन्हबा कऽ अनने छलहुँ से सभ वितरित भऽ गेल मुदा मूल्य एकहु प्रतिक नहि भेटल ।

एहि समारोहक समाचार 15.3.60 केँ आर्यावर्त्तमे प्रकाशित भेल । समाचारमे समारोहक वर्णनमे एकरा मैथिली जन साहित्य संस्थान द्वारा आयोजित तँ कहल गेल परन्तु संस्थानक व्यवस्थापक, अभिव्यंजनाक सम्पादक तथा वसन्तोत्सव समारोहक आयोजक–संयोजक मायानन्दमिश्रक कतहु चर्चा मात्र नहि कयल गेल । तखन सहयोगीमे हमर नामक उल्लेखक कोन सम्भावना ! समाचार देखि जतेक उल्लास होइत ताहिसँ बेसी क्षोभ ओ खिन्नते भेल । आर्यावर्त्तक कार्यालय संवाददाता कोन मानसिकतासँ एहि प्रकारक नाम–लोप कयलनि तकर आभास ओहि समयमे छल मुदा आब विस्मरण जकाँ भऽ गेल अछि ।

ओहि समयक सोचक अनुसार अभिव्यंजनामे बहुत किछु अभिनवत्व छल तँ एकर चर्चा आ स्वागत खूब भेल । 3 अप्रैल 1960 केँ कलकत्ताक मैथिली संघक प्रतिनिधि रणधीरझाक संग पुस्तकालय विभागक निदेशक नवलकिशोरगौड़सँ भेट करऽ बेली रोड गेलहुँ । हुनका मैथिली संघ द्वारा प्रकाशित मैथिली पोथी सभ देलियनि । **अभिव्यंजना** हाथ कऽ फराकसँ देलियनि । ओ मैथिली पुस्तक–पत्रिका देखि बड़ प्रभावित भेलाह । अभिव्यंजना

पर कहलनि- खूब एडवेंचर हय अइमे ।' पुनः इजोत पत्रिका सेहो देलियनि । ओ कहलनि-साहित्यक उन्नति होइयऽ मुदा विद्यापति-संगीतके सुरक्षा न होइयऽ । रवीन्द्र-संगीतके तरह बिहारमे विद्यापति-संगीत छा जायके चाही ।'

प्रसंग मिथिला-मिहिरक पुनः प्रकाशनक

पटना-प्रवासावधिमे मैथिली-साहित्यक अधुनातन इतिहासक एकटा महत्त्वपूर्ण घटना भेल छल मैथिलीक बन्द भऽ गेल प्राचीनतम पत्र मिथिला-मिहिरक पटनासँ पुनः प्रकाशन । नवम्बर 1959 मे अजमेरमे मैथिल महासभाक अधिवेशन भेल छल । ओहिमे सम्मिलित होयबाक सुअवसर हमरहु भेल छल । अधिवेशनक पूर्व सन्ध्यामे विषय-निर्धारिणी समिति (सब्जेक्ट कमीटी)क बैसक छल जाहिमे हमहूँ एकटा सदस्य छलहुँ । अध्यक्षता कऽ रहल छलाह मैथिल महासभाक स्थायी सभापति महाराजाधिराज डा. कामेश्वरसिंह । विचार-विमर्श आरम्भ होइत तखने अंलीगढ़क प्रवासी मैथिल वीरभद्रमिश्र मिथिला-मिहिरक पुनः प्रकाशनक आग्रह कयलनि । महासभाक प्रधानमन्त्री रायबहादुर शिवशंकरझा हुनका मिथिला-मिहिरक प्रसंग उठयबासँ ई कहि रोकि देलथिन जे- मिथिला-मिहिर सरकारक व्यक्तिगत वस्तु थिकनि । ओहिपर महासभाक मीटिंगमे विचार नहि भऽ सकैत अछि ।'

किन्तु महाराज वीरभद्रमिश्रक कथन दिस साकांक्ष होइत कहलथिन- की बात छै ? कहऽ दिऔन ।'

रायबहादुर अपन व्यवस्थाक प्रश्नकेँ स्पष्ट करऽ लगलाह तावत पण्डितजी (प.चन्द्रनाथमिश्र'अमर') जे वीरभद्रहिमिश्रक निकटमे मिथिला-मिहिरक प्रसंग जनान्तिक कऽ रहल छलाह, उठि कऽ कहलथिन- प्रवासी बन्धु लोकनिक विचार छनि जे मिथिला-मिहिर श्रीमान्‌क व्यक्तिगत वस्तु थिकनि अवश्य परन्तु ओहि पत्रक बन्द भऽ गेलासँ प्रवासी मैथिल लोकनिक सम्पर्क-संवाद-सूत्र भंग भऽ गेलनि । विचारक आदान-प्रदानक प्रक्रिया अवरुद्ध भऽ गेलनि । प्रवासी मैथिल बन्धु लोकनिक प्रार्थना छनि जे श्रीमान् जखन प्रवासी लोकनिक सुधि लेबाक हेतु एहि ठाम पदार्पण करबाक कृपा कयलनि तँ मिथिला-मिहिरक पुनः प्रकाशनक रूपमे एकटा सनेस देने जाथि ।'

महाराज तुरन्त कहलथिन-मिथिला-मिहिरक तँ पाठके नहि छैक । एको सय ग्राहक भऽ जाइक तँ मिथिला-मिहिर फेर प्रकाशित होयत ।'

वीरभद्रमिश्र तुरन्त दुइ सय पचास गोट ग्राहकक शुल्क 501/- टाका जमा करबाक घोषणा कयलथिन आ महाराज साहेब मिथिला-मिहिरक प्रकाशनक तखने वचन दऽ देलथिन । दोसर दिनुक मुख्य अधिवेशनमे महाराज अपन लिखित भाषणसँ हटि मिथिला-मिहिरक पुनः प्रकाशनक चर्चा कयलनि । एहिसँ प्रवासी मैथिल लोकनिकेँ आनन्द भेलनि । एमहर मैथिली साहित्यकार ओ मैथिलीप्रेमी लोकनिमे एकटा उत्साहक लहरि आबि गेलनि ।

1960 इसवीक फरवरीक तेसर सप्ताहमे राजपण्डित बलदेवमिश्र पटनाक दरभंगा हाउसक काली मन्दिरमे अवस्थित रहथि । महाराजसाहेब दिल्लीसँ प्रायः कलकत्ताक यात्रा पथमे भेट करबाक हेतु दरभंगासँ बजौने छलथिन। हम आ हमर सहपाठी श्यामसुन्दरझा हुनक दर्शन हेतु कालीमन्दिर गेलहुँ । ओही दिन ई संवाद प्राप्त भेल जे प्रिन्सिपल प.त्रिलोकनाथमिश्र दरभंगासँ पूर्णियाक यात्राक क्रममे बरौनीमे रेलक एक डिब्बामे मुइल पाओल गेलाह। राजपण्डितजी एहि समाचारसँ अत्यन्त शोकित छलाह । प.त्रिलोकनाथमिश्रक चर्चाक प्रसंगमे मिथिला-मिहिरक प्रसंग सेहो आबि गेल । ओ बजलाह-मिथिला-मिहिरक फेरसँ प्रकाशन होयत। ताही सम्बन्धमे श्रीमान्क बजाहटि भेल छल । एहि बेर पूर्णतः मैथिलीमे रहत आ पटनेसँ इंडियन नेशन-आर्यावर्त्तक संग प्रकाशित होयत । प्रिन्सिपल (प. त्रिलोकनाथमिश्र)केँ एकर उत्कट अभिलाषा छलनि, से नहि देखि सकलाह । ईश्वरेच्छा बलीयसी।'

मार्च माससँ मिहिरक पुनः प्रकाशनक चर्चा खूब जोर-सोरसँ चलऽ लागल । दरभंगासँ ज्ञात भेल जे मिहिरक पुनः प्रकाशन, स्वरूप निर्धारण, संचालन-योजनाक सम्बन्धमे विचार करबाक भार, राजपण्डित बलदेवमिश्र, प. गिरीन्द्रमोहनमिश्र, आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन' (मिथिला-मिहिरक पूर्व सम्पादक), श्रीकान्तठाकुर विद्यालंकार (आर्यावर्त्त-सम्पादक) तथा उपेन्द्राचार्य (दी न्यूज पेपर्स एण्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेडक महाप्रबन्धक)केँ देल गेलनि ।

सम्पादक पदक दंगल

मिहिरक सम्पादक पदक हेतु अनेक नामक चर्चा होअऽ लागल । कतोक महानुभाव लोकनि एहि लय उत्सुक छलाह । अन्ततः दुइ गोट प्रत्याशी-प्रतिस्पर्द्धीक नाम जगजियार भेल । ओ दुनू व्यक्ति छलाह-सुधांशुशेखरचौधरी आ मायानन्दमिश्र ।

ई सुनिश्चित भऽ गेल जे मिहिरक प्रकाशन होयबे करत। सम्पादन विषयक समस्त नीति-निर्धारण ओ संचालनक अधिकार विद्यालंकारकेँ देल गेलनि। अतः मिहिरक सम्पादक पदपर नियुक्तिमे हुनक विचार सर्वोपरि होइत। शेखरजीकेँ मिहिरक दरभंगास्थ स्तम्भ सभक आशीर्वाद भेटि गेल छलनि, विद्यालंकारजीकेँ अनुकूल करबाक छलनि। ओ अप्रैले मासमे चुपचाप पटना आबि मिश्रटोला निवासी अपन अन्तरंग मित्र विश्वनाथमिश्रक बोरिंग रोड स्थित आवासपर रहऽ लगलाह। विश्वनाथजीक डेरा विद्यालंकारजीक आवाससँ सटले उत्तर छलनि। निरन्तर सम्पर्कक सौलभ्य भऽ गेल छलनि।

मायानन्दोजीक पाया कमजोर नहि छलनि। ओहो अपना भरि मिहिरक सम्पादकक पद प्राप्त करबामे सघन प्रयत्न कऽ रहल छलाह। किन्तु नेपथ्यमे किछु एहन तत्त्व सभ क्रियाशील छल जाहि कारणे विद्यालंकारजी मायानन्दजीक अनुकूल नहि भऽ सकलथिन। शेखरजी मिथिला-मिहिरक सम्पादकक पदपर नियुक्ति प्राप्त कऽ लेलनि।

11 सितम्बर 1960सँ मिथिला-मिहिर पटनासँ प्रकाशित होअऽ लागल। परन्तु प्रकाशनसँ पूर्व आरम्भ भेल शेखरजी ओ मायानन्दजीक मध्य प्रतिद्वन्द्विता निरन्तर कटुतामे परिणत होइत गेल। दुहूक पारस्परिक सम्बन्ध कटुतम स्थितिमे पहुँचि गेलनि।

कटुताक बीज

मायानन्दजी एवं शेखरजीक बीच कटुताक बीजारोपण 1958क उत्तरार्द्धमे भऽ गेल छलनि।

ओहि सालक प्रायः जून मासमे वैद्यनाथधाममे मैथिल महासभाक आयोजन भेल रहैक। ओहिमे भेनिहार कविसम्मेलनमे दरभंगाक कवि लोकनि सुमनजी, मधुपजी, किरणजी, शेखरजी, मायानन्दजी, इन्द्रनाथजी, श्रीमन्तपाठक इत्यादिक संग हमरहु भाग लेबाक सुअवसर भेटल छल। महाराज कामेश्वरसिंह महासभाक अधिवेशनमे सभापति रूपमे रहताह, एहिसँ देवघरे नहि समस्त परोपट्टाक मैथिल सब उत्साहित छलाह। परन्तु ठीक अधिवेशनक पूर्व राजाबहादुर विश्वेश्वरसिंहक भयानक रूपेँ रुग्ण भऽ गेलाक कारणे महाराजक प्रोग्राम स्थगित भऽ गेलनि। अन्य कार्यक्रमक संगहि कविसम्मेलनो उदासी भरल रहलैक।

ओही बीचमे पटनासँ पहुँचल अतिथिगण (इंडियन नेशन-आर्यावर्त्तक विशिष्ट जन सहित)मेसँ मायानन्दजीक कोनो घनिष्ठ मित्र सूचित कयलथिन जे आकाशवाणीक पटना केन्द्रक चौपाल कार्यक्रमक मैथिली कम्पीयर अनन्तबिहारीदास 'इन्दु' अन्यत्र चल गेलाह । हुनका द्वारा कयल गेल रिक्त पदपर शीघ्रे नियुक्ति होयतैक । मायानन्दजी कार्यक्रमक मध्येमे चुपचाप निकलि कऽ ट्रेन पकड़ि पटना चल गेलाह । ओहि ठाम अपन कील-काँटा दुरुस्त कऽ लेलनि । शेखरजीकेँ बादमे मित्र विश्वनाथमिश्रसँ आकाशवाणीक मैथिली कम्पीयरक सम्भावित नियुक्तिक विषयमे ज्ञात भेलनि । ओ विश्वनाथजीक माध्यमसँ प्रयत्नशील भेलाह ।

आकाशवाणीमे नियुक्त हेतु अनेक प्रत्याशीमे मायानन्दजी ओ शेखरजी एहन प्रत्याशी छलाह जनिका लेखकीय पृष्ठभूमि नीक छलनि । इंटरव्यूमे मायानन्दजी अपन कोमल भाव-प्रवण गीत एवं कोमल स्वरमे ओकर गायनसँ इंटरव्यू बोर्डक विशेषज्ञ लोकनिकेँ प्रभावित करबामे सफल रहलाह । परन्तु ओही रूपमे शेखरजी बोर्डकेँ प्रभावित नहि कऽ सकलाह । मायानन्दजीक नियुक्ति आकाशवाणीमे भऽ गेलनि । शेखरजी पिछड़ि गेलाह । आजीविका-रहित शेखरजीक मनमे मायानन्दजीक प्रति विसमाद भरि गेलनि । मिहिरक सम्पादक पदक प्रतिस्पर्द्धा ओहि कटुताकेँ औरो टटका बना देलकनि । मायानन्दोजी शेखरजीक प्रति तद्वते रहलाह । यद्यपि साहित्यकारक रूपमे मायानन्दजी शेखरजीकेँ आकाशवाणीक मैथिली कार्यक्रममे बजबिते रहलथिन आ शेखरजी मिहिरमे मायानन्दजीक कथा-कविता छपिते रहलथिन मुदा मनसँ नहि ।

मिहिरकेँ सहयोग-असहयोगक द्वन्द्व

मिथिला-मिहिर नियमित रूपसँ प्रकाशित होअऽ लागल तँ मायानन्दजीक रुखि ओकरा प्रति सर्वथा असहयोगात्मक भऽ गेलनि । मायानन्दोजीक प्रभावमे बहुतो मैथिलीक नव-पुरान लेखक समुदाय अवश्य छलनि जकर रचनात्मक सहयोग मिहिरकेँ अपेक्षित छलैक । हम, मुदा मिहिरक प्रति असहयोगक पक्षमे नहि रही । रचना आ प्रकाशन सामग्रीक अभावमे मिहिर बन्द भऽ जाय से हमरा मान्य नहि छल ।

श्रीकान्तठाकुर विद्यालंकारकेँ परिस्थितिक अभिज्ञान छलनि । एक दिन एकटा विशेष प्रसंगमे विद्यालंकारजीसँ हुनका आफिसमे भेट कयलियनि ।

ओहि समयमे ओ विस्तारसँ मिथिला-मिहिरक भविष्यपर अपन विचार व्यक्त करऽ लगलाह- मैथिलीमे तँ किछु कथा आ बेसी कविते रचल जाइत अछि, खाली कवितासँ तँ मिहिर नहि चलत । मिहिरक अठाइस पेजक पेटकेँ सप्ताहे-सप्ताहे भरब बड़ कठिन काज छैक । विभिन्न विषयपर लेखादि लिखल जयबाक चाही, से लीखू आ लोक सबसँ लिखबाउ । मिहिरकेँ सभक सहयोग चाही । अहाँ सब सहयोग दियौक ।'

-जी, मिहिरक प्रथमे अंकमे हमर **पिपासा** एकांकी छपल अछि ।' हम बीचमे कहलियनि ।

-हँ, देखल अछि, नीक लागल ।' ओ आगाँ बजलाह- मिहिर रचनापर पारिश्रमिक देबाक व्यवस्था कयलक अछि । परन्तु पारिश्रमिकेक बलपर मिहिर नहि चलत । एहि लय, अपन भाषाक उन्नति लय सेवा भाव चाही, पारिश्रमिकक अपेक्षा नहि । एखन शेखरजीक संग मोहनजी (उपेन्द्रठाकुर 'मोहन') केँ दऽ देल गेलनि अछि । किन्तु दुइ व्यक्ति मात्रसँ काज सम्हरऽबला नहि । एकटा और सचढ़ लोक चाही । अहाँ तँ एखन एम्.ए. कऽ रहल छी ? ओ पूरा कऽ लियऽ तखन विचार हेतैक । एखन मुदा पूरा सहयोग दियौक ।'

-जी, से कऽ रहल छियनि । आगुओ शेखरजी आ मोहनजीकेँ जे आवश्यक बुझयतनि से कऽ देल करबनि ।' हम विनम्रतापूर्वक आश्वासन देलियनि ।

मिहिरमे हम अपन नामसँ रचना दैते छलियनि, संगहि मिहिरक सम्पादक जे भार देथि से लीखि-लीखि कऽ देल करियनि । ओहि समयमे उत्साहातिरेक छल । लिखबामे आसकति नहि होअय । अत: समाचार-संकलन, सामयिक प्रसंगक समीक्षा, संसद-विधान मण्डलक सार-संकलन आदि-आदि देल करैत छलियनि । ओही क्रममे 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' स्तम्भ गुमनाम लिखऽ लगलहुँ । किन्तु एकर सभक जनतब मायानन्दजीकेँ नहि देलियनि तथापि हुनका एकर सभक आभास अवश्य भेल जाइत छलनि ।

बड़ प्रचंड छह हओ !

एकटा रविकेँ हम **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** क अगिला किस्त लीखि, सिरमामे राखि, स्नान करऽ गेलहुँ । तावत् हमरा अनुपस्थितिमे मायानन्दजी अयलाह । हुनका हमर प्रतीक्षामे समय बिताबऽ लय किछु पढ़बाक सामग्री

चाहियनि तँ वैह चिट्ठी (प्रेस कापी) भेटि गेलनि । ओ चिट्ठी पढ़ि लेलनि । स्नान कऽ कऽ अयलहुँ तँ अनुरोध-उपरागक स्वरमे बजलाह-अँय हओ ! तोँ ई स्तम्भ लिखै छह ? बड़ प्रचंड छह हओ !... शेखरजी सन लोककेँ कोनो सहयोग नहि देना चाही....।' हुनका चेहरापर रोख आ असन्तोषक भाव छलनि ।

हम स्थिरतासँ कहलियनि- मिहिरकेँ एखन रचनाक प्रयोजन छैक । रचनाक अभावमे मिहिर बन्द भऽ जाय से तँ बड़ लाजक विषय ! एहिसँ तँ मैथिलीक अहिते होयतैक ?'

-तोहर भाव बुझलियह, मुदा ई बेनामी सामग्री सभ जे दैत छहक ! छोड़ह ई सब । अपन नामसँ जे रचना देबाक होअह से दहुन ।' ओ बजलाह ।

हम श्रीकान्तठाकुरजीसँ भेल ओहि दिनुक गप्पक सारांश सुनबैत कहलियनि- एम्. ए. कयलाक बाद कोनो नोकरी चाही । कोनहु रूपमे मिहिरमे इम्प्लायमेंट भेटि जाय तकर लोभ अछि । तँ एतेक निःशुल्क सहयोग कऽ रहल छियैक । एखन असहयोग कऽ कऽ भविष्यमे हम कोन मुहेँ ठाकुरजीसँ किछु मङबनि ?'

हमर भविष्य-चिन्ता बूझि मायानन्दजी गुम्म आ गम्भीर भऽ गेलाह । मिथिला-मिहिरमे हमर बेनामी स्तम्भ-लेखन ओ अन्यान्य सामग्रीक नियमित योगदान नुकायल नहि रहल परन्तु ताहिलय ओ ने फेर रोख व्यक्त कयलनि, ने विमुख करबाक हेतु दबाब देलनि । वास्तविकता ई छल जे मायानन्दजी शेखरजीक संग उत्पन्न कटुताकेँ क्रमशः बिसरैत चल गेलाह । परन्तु शेखरजीक मनमे मायानन्दजीक प्रति ततेक जहर भरि गेल छलनि जे ओ आगाँ अपन संस्मरण पर्यन्तमे अपन कटुताकेँ विस्तारसँ व्यक्त करैत रहलाह ।

व्हीलर सीनेट हॉलक ओ विद्यापति पर्व

पटनामे चेतना-समिति द्वारा आयोजित विद्यापति पर्वमे सक्रिय सहभागिताक एके गोट अवसर भेटल । 1959 मे ठीक कार्त्तिक शुक्ल द्वादशी, 12 नवम्बरकेँ मैथिल महासभाक अधिवेशनमे भाग लेबाक हेतु अजमेर लय पटनहिसँ बिदा भऽ गेल रही तँ वंचित भऽ गेलहुँ । 1961क अगस्ते मासमे पटना छोड़िये देलहुँ ।

1960 मे चेतना-समिति त्रिदिवसीय विद्यापति पर्वक आयोजन कऽ रहल छल, एक-दू आ तीन नवम्बरकेँ । पहिल दू दिन पटना विश्वविद्यालयक व्हीलर सीनेट हॉलमे तथा तेसर दिन कवि-सम्मेलन फेडरेशन हॉलमे करबाक निश्चय भेल ।

जयनाथबाबूसँ मायानन्दजीकेँ नीक आपकता तेँ चेतना-समितिमे हुनक विशेष सक्रियता छलनि । हुनकहि संग हमरहु चेतना-समितिक क्रियाकलापमे संलग्न रहबाक अवसर अबैत रहल । 1960 क विद्यापति पर्व समारोहमे खूब सक्रिय रहलहुँ । एहि अवसरपर अभिनय करबाक प्रस्ताव भेल आ तकर भार हमरापर देल गेल । हम ओकर तैयारीमे लागि गेलहुँ । पहिल दिन हमर 'मूक-बधिर अभिनय' ओ दोसर दिन हरिमोहनबाबूक 'आदर्श कुटुम्ब' कथाक हमरहि द्वारा नाट्य रूपान्तरक अभिनय करबाक छल । एहिमे सहयोगी छलाह हमर ग्रामीण संगी रामाश्रय उपाध्याय, पटनाक अर्जुनठाकुर, इन्द्रकान्तझा (आर्यावर्त्त), आर्यावर्त्तक एकटा कर्मचारी (नाम विस्मृत) तथा बरहेता निवासी अजन्ता प्रेसक कर्मचारी हरिशंकरदास । राति-राति भरि रिहर्सल चलैत रहल । चारू कातसँ कहल जाय- 'प्रदर्शन नीक होयबाक चाही' तेँ जी-जान लगा कऽ परिश्रम करैत रहलहुँ । मायानन्दजी खोज-खबरि लैत जयनाथबाबूक मनोभावसँ अवगत करबैत रहलाह ।

1 नवम्बरक पहिल दिनुक कार्यक्रमक सभापति छलाह हरिमोहनबाबू एवं उद्घाटक राष्ट्रकवि रामधारीसिंह 'दिनकर' । सभाक अन्तमे हम मूक-बधिर (बौका) क अभिनय प्रस्तुत कयलहुँ जे खूब जमल । बिनु बजनहि सूक्ष्मतम भावक अभिव्यंजना दर्शककेँ खूब प्रभावित कयलकैक । अतः अगिला दिनक अभिनयक प्रति चेतना-समितिक कर्त्ता-धर्त्ता लोकनि पूर्ण आश्वस्त भऽ गेलाह ।

2 नवम्बरक कार्यक्रममे केन्द्रीय मन्त्री हुमायूँकबीर मुख्य अतिथि छलाह । व्हिलर सिनेट हॉलमे नीचाँसँ ऊपर धरि तिल रखबाक जगह नहि । लोक गेट सबपर ठाढ़ एँड़ी अलगा-अलगा कऽ भीतरक दृश्य देखबाक प्रयत्न करैत । जे, सेहो करबाक अवसर नहि पाबि सकल, से बरंडापर ठाढ़ भऽ माइकक आवाज सूनि सन्तोष करैत रहल । रामचतुरमल्लिक, सियारामतिवारी, रघुवंशझा सदृश संगीतज्ञ लोकनि गायन-कार्यक्रम हेतु प्रस्तुत छलाह। कबीर साहेबक मर्मस्पर्शी सारगर्भित भाषण भेल । संगीतक कार्यक्रम भेल । तत्पश्चात्

हमरा सभक "आदर्श कुटुम्ब'क अभिनय भेल जे अत्यन्त सफल भेल। प्रेक्षक लोकमे ठहाकाक तोड़पर तोड़ चलैत रहल। ससुरक भूमिकामे हमर अभिनयपर चेतना-समिति, हरिनन्दनठाकुर आइ.ए.एस. एवं बाबूसाहेबचौधरी द्वारा एक-एक गोल्ड मेडल प्रदान करबाक घोषणा भेल, यद्यपि ओ हमरा कहियो भेटल नहि। तथापि पटनामे हमर प्रसिद्धि भऽ गेल। ई हमर सबसँ पैघ उपलब्धि भेल।

दोसर दिस, मायानन्दजीक हेतु ई विद्यापति पर्व परिचयक सहज एकटा अभिनव आयाम देलकनि। भेलैक ई जे कार्यक्रम अत्यन्त गम्भीरतासँ चलि रहल छल। सभा पूर्ण शान्त छल। अकस्मात् बिजली गुम्म भऽ गेलैक। हॉल पूर्ण अन्धकारमय भऽ गेलैक। एके बेर हॉल होहकारसँ आन्दोलित भऽ उठलैक। प्राय: रामचतुरमल्लिकक गायनक कार्यक्रम होइतनि। माइक बैट्रीपर चलैत छलैक। अकस्मात् एकटा झंकारमय वाणी गुंजायमान भऽ उठल, जकर भाव छल– अन्धकार क्षणिक थिक। अन्धकारक पश्चात् प्रकाश होइते छैक। अपने सब शान्त आ धैर्यसँ रही। अन्धकारक लोप आ प्रकाशक आगमन होयबे करत।' एक बेर शान्ति पसरि गेल तखने बिजली सेहो आबि गेलैक। लोक देखलक, मायानन्दजी माइकपर ठाढ़ छलाह। कार्यक्रम पूर्ण गम्भीरताक संग आगाँ बढ़ल। आगाँक कार्यक्रमक उद्घोषणा मायानन्देजी करऽ लागल छलाह। श्रोता लोकनि मायानन्दजीक वाणीक माधुर्य रेडियोसँ अनुभव करैत रहल छलाह। साहित्यिक सम्मेलन सबमे हुनक काव्य-पाठसँ अभिभूत होइत रहल छलाह। परन्तु अपन उद्घोषणासँ श्रोताकेँ बान्हि लेबाक हुनक क्षमतासँ पहिल बेर लोक परिचित भेल आ तकरा बाद साहित्यिक-सांस्कृतिक समारोहक सर्वश्रेष्ठ उद्घोषक रूपमे ओ प्रतिष्ठित भऽ गेलाह। हम मानैत छी जे मायानन्दजीक हेतु ओ विद्यापति पर्व समारोह एकटा पैघ घटना छलनि जकरा बिसरल नहि जा सकैत अछि।

ओहि बेरक पर्वक पश्चात् हम दुहू गोटे चेतना-समितिक क्रिया-कलापक अन्त:परिधिमे प्रवेश कऽ गेलहुँ। मिटिंग इत्यादिमे विचार-विमर्शक क्रममे हमरहु सभक विचार गम्भीरतापूर्वक सुनल जाय आ हमरा सभ द्वारा कहल बातकेँ विचारणीय मानल जाय। केवल सन्देशवाहक वा शतरंजी झाड़ि कऽ ओछौनिहार-समेटनिहार कार्यकर्त्ता नहि, गम्भीर उत्तरदायित्वपूर्ण कार्यक सम्पादन कयनिहारोक रूपमे विश्वसनीय सदस्य बनि गेलहुँ।

पटनामे सुमन जयन्ती

ओहि समयमे पटना रेडियोक चौपाल कार्यक्रममे मासक अन्तिम शनिकेँ लोकभाषा कविसम्मेलन भेल करैक जाहिमे मैथिली, मगही ओ भोजपुरी भाषाक तीन-तीन गोट कविकेँ आमन्त्रित कयल जाइन। मैथिली कविक नामक प्रस्ताव मैथिली-कम्पीयर होयबाक कारणे मायानन्दजीकेँ करबाक रहैत छलनि। हम दुहू गोटे विचारि कऽ अवसरक उपयोग कयल करी आ बाहरसँ आयल मैथिली कविकेँ केन्द्रित कऽ छोट-छोट अनौपचारिक मैथिली काव्य-गोष्ठीक आयोजन कयल करी, पाँच-दस गोटेक अँटाबेस जतहि भऽ जाय, ततहि।

एहने अवसरक उपयोग कयल गेल छल श्रद्धेय सुमनजीक जन्म दिवसक द्वितीय आयोजनमे। सुमनजीक पचासम जन्म तिथिक अवसरपर पहिल आयोजन 1959 मे सात अक्टूबरकेँ लहेरियासरायक मैथिल महासभा भवनमे वृहत् स्तरपर भेल छल। सुमनहिजीक जन्मदिवसपर ओहि समारोहक लक्ष्य सभकेँ बूझल, मुदा हुनकासँ गोपनीय राखल गेल छल। अन्यथा सुमनजी आयोजनमे उपस्थिते नहि होइतथि।

1960मे सुमनजीक जन्मदिन आश्विन शुक्ल पंचमी पड़ैत छल 25 सितम्बर रविकेँ। 24केँ मासक अन्तिम शनि पड़ैत छलैक- चौपालक लोकभाषा कविसम्मेलनक दिन। अतः पंडितजी (अमरजी)क विचार भेलनि जे ओहिमे सुमनजीकेँ सेहो कंट्रैक्ट पठा कऽ बजा लेल जाइनि आ दोसर दिन पटनेमे सुमनजीक जन्मदिवस मनाओल जाय। मायानन्दजीसँ विचार-विमर्श भेल। ओ चमत्कृत भऽ उठलाह-वाह ! अद्‌भुत संयोग। बेस कहलह।'

योजनानुसार सुमनजी, अमरजी आ श्रीमन्तपाठककेँ पटना रेडियोक चौपालक लोकभाषा कविसम्मेलनक हेतु कंट्रैक्ट पठाओल गेलनि। किन्तु सुमनजीकेँ अन्तर्निहित संकल्पक विषयमे कोनो भान नहि होअऽ देल गेलनि।

निश्चय भेल जे विद्यापति गोष्ठी (दरभंगा)क तत्वावधानमे ई आयोजन हो। स्थानक समस्या छल। मायानन्दजी आ हम दरभंगा हाउसमे स्थित काली मन्दिरक पुजेगरीसँ भेट कयलहुँ। ओ मन्दिर परिसरमे आयोजनक अनुमतिक संग सहयोग देबाक आश्वासन देलनि।

23 सितम्बरक भिनसरमे पंडितजी (अमरजी) पटना पहुँचलाह। मायानन्दजी आ हम, दुहू गोटे हुनकासँ भेट कयलियनि। आयोजनक व्यवस्था

आ प्रगतिक सम्बन्धमे विवरण देलियनि। एहि साहित्यिक आयोजनक अध्यक्षता के करथि, ताहिपर विचार भेल। पंडितजीक विचार भेलनि जे पंडित श्रीकान्तठाकुर विद्यालंकारसँ आग्रह कऽ कऽ देखल जाय। हम सब गेलहुँ ठाकुरजीक ओतऽ। ठाकुरजी गम्भीरतापूर्वक प्रस्ताव सूनि कहलथिन-हम तँ कोनो साहित्यिक समारोहमे साधारणतः जाइत नहि छी। परन्तु सुमनजी सन व्यक्तिक जन्मदिवसक उपलक्ष्यमे आयोजित एहि कार्यक्रममे जायब। हमरा प्रस्ताव स्वीकार अछि।'

तावत धरि मिथिला-मिहिरक दुइ गोटे अंक प्रकाशित भऽ गेल छल। तेसर अंक 25सितम्बरकँ बजारमे आयल। पटनाक मैथिल, मैथिल बुद्धिजीवी ओ मैथिली साहित्यकारमे एकटा अपूर्व उत्साह व्याप्त छल। श्रीकान्तठाकुर विद्यालंकार सुमनजीक जन्मदिवसीय साहित्यिक आयोजनक अध्यक्षता करताह, से सभक आश्चर्य ओ औत्सुक्यकँ बढ़ा देलक। 25 सितम्बरक सन्ध्याकाल काली मन्दिर गसमगस्स भरि गेल। अध्यक्ष छलाह श्रीकान्तठाकुर विद्यालंकार। सुमनजी सेहो उपस्थित छलाह। जावत भाषणक क्रम आरम्भ नहि भेल तावत सुमनजीकँ ई भान नहि भेलनि जे हुनकहि जन्मदिवसपर ई साहित्यिक समारोह भऽ रहल छनि। सुमनजीक व्यक्तित्व, पाण्डित्य, साहित्य-सर्जन ओ मातृभाषा मैथिलीक अनुपम सेवाक सम्बन्धमे उद्‌गार व्यक्त कयनिहारमे प्रमुख छलाह- प्रो. जयदेवमिश्र (पुस्तकालय अधीक्षक, बिहार सरकार) रूपनारायणठाकुर (व्यवस्थापक, खादी ग्रामोद्योग संघ, बाँकीपुर), प्रो. कार्त्तिकनाथमिश्र, प.चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' इत्यादि। एकटा भव्य कविसम्मेलन भेल जाहिमे बाहरसँ आगत कविगणक अतिरिक्त पटनास्थ समग्र नव-पुरान कविगण काव्यपाठ कयलनि। मायानन्दजी अपन रेडियोक परिचयक उपयोग करैत कतिपय गायक-वादकक सहयोग प्राप्त कऽ लेने छलाह। से, समापन अत्यन्त मधुर गान-वाद्यक संग भेल।

पटनामे वसन्तोत्सव ओ अभिव्यंजनाक विमोचन-समारोहक बाद हमरा दुहू गोटाक ई दोसर सफल वृहत् साहित्यिक आयोजन छल जकरा हम बिसरि नहि सकैत छी। मायानन्दोजी बिसरल नहि होयताह।

पटनामे चन्दाझा-जयन्तीक आयोजन

मनमे विचार होइत रहल छल जे विद्यापति-जयन्ती (पहिने सैह कहल जाइत छलैक) जकाँ कवीश्वर चन्दाझा-जयन्ती सेहो मनाओल जाय, से मनाओल जाय कातिकसँ चारि-पाँच मास आगाँ चलि कऽ चैतमे रामनवमी दिन। 1960 मे पटनामे एकरा आरम्भ करबाक विचार मायानन्दजीक समक्ष रखलियनि। ओ

सहमत भेलाह । परन्तु अभिव्यंजना-विमोचनमे आयोजन स्थल तकबामे जे फिरीसान होअऽ पड़ल छल, से सोचि ओहने आयोजन डेढ़ मास बाद करबाक साहस दुहू गोटे नहि जुटा पौलहुँ । बस, एकटा लेख कवीश्वरपर हिन्दीमे लिखलहुँ जाहिमे हुनक महत्त्व प्रतिपादनपूर्वक हुनकहु जयन्ती मनयबाक आह्वान छल । ई लेख 'आर्यावर्त्त'क सामयिक-प्रसंग स्तम्भमे 6 अप्रैल (चैत्र शुक्ल दशमी) 1960 कें प्रकाशित भेल ।

अगिला वर्ष पहिनहिसँ तैयारी आरम्भ कयल । 1961 मे रामनवमी पड़ैत छलैक 25 मार्च शनि दिनकें । मैथिली साहित्यकारबन्धुसँ पत्र द्वारा निवेदन कयलियनि जे– अपन-अपन स्थानमे रामनवमी दिन वा ओहि सप्ताहमे कवीश्वर चन्दाझाक जयन्तीक आयोजन करथि ।' मायानन्दजी सुपौलमे किसुनजीकें, हजारीबागमे कोनो साहित्यिक मित्रकें आ बड़गाँव (सहरसा) निवासी कवीश्वरक भ्रातुष्पुत्र मायाकान्तझाकें एहि सम्बन्धमे आग्रह कयलथिन । हम कलकत्तामे बाबूसाहेबचौधरी, दरभंगामे पंडितजी(अमरजी)कें, पिड़ारूछमे इन्द्रनाथजीकें ओ बहेड़ामे मधुपजीकें पत्र लिखलियनि । बड़गाँव छोड़ि कऽ प्रायः सर्वत्र कलकत्ता, सुपौल, हजारीबाग, कोर्थु (बहेड़ा) आ पिड़ारुछमे चन्दाझा जयन्तीक आयोजन भेल । दरभंगा परिसरक साहित्यकार लोकनि चन्दाझाक जन्मभूमि पिड़ारुछ जाय श्रद्धांजलि अर्पित कयलनि । पटनामे पटना कालेज मैथिली साहित्य परिषद्क हम स्वयं प्रधान सचिव छलहुँ, अतः मैथिली विभागमे चन्दाझा-जयन्तीक आयोजन कयलहुँ । चिन्तामणि लॉजमे कीर्त्तिनारायणमिश्र रहैत छलाह । ओ चन्दाझा-गोष्ठीक आयोजन कयलनि ।

पटनामे सबसँ महत्त्वपूर्ण आयोजन भेल अजन्ता प्रेसमे ।

पटनामे चन्दाझा-जयन्ती मनयबाक कोनो उपयुक्त स्थान नहि भेटि रहल छल जतऽ बीस-पचीस व्यक्तिक बैसबाक व्यवस्था भऽ सकय । हम आ मायानन्दजी एहि समस्याक समाधान हेतु चिन्तित रही । सहसा फुरल जे अजन्ता प्रेसक कैम्पसमे ततबा स्थान छैक जाहि ठाम पचीस-तीस गोटे बैसि सकैत अछि । अजन्ता प्रेसक मालिक छलाह प.जयनाथमिश्र । जयनाथबाबू ओहि समयमे चेतना-समितिक महत्त्वपूर्ण स्तम्भ छलाह । मायानन्दजी कहलनि जे- चलह, जयनाथबाबूसँ भेट करऽ । काज भय जाना चाही ।'

हम सब जयनाथबाबूसँ भेट कयलियनि । मायानन्दजी ओरिया कऽ कवीश्वर चन्दाझाक मैथिली साहित्यमे विद्यापतिक बाद भेल महान् कवि

होयबाक बात कहैत हुनक जयन्ती मनयबाक महत्त्व आ प्रासंगिकता बुझौलथिन । पटनामे एहि प्रकारक आयोजन विशेष महत्त्वक सिद्ध हैत, से कहलथिन । जयनाथमिश्र कहलथिन- आयोजन करू । एहिमे बाधा की अछि ?'

मायानन्द कहलथिन- कोनो उपयुक्त स्थान नहि भेटि रहल अछि ।'

जयनाथबाबू पुछलथिन-कतेक गोटे रहताह ?'

हम सब-यैह, पचीस-तीस ।'

जयनाथबाबू बजलाह-एते गोटेक बैसबाक व्यवस्था हमर प्रेसक आगाँमे भऽ सकै छै ।'

अजन्ता प्रेसक परिसर भेटि गेलासँ हम सभ अत्यन्त आश्वस्त भऽ गेलहुँ । चैत्र शुक्ल दशमी, रवि, 26 मार्चकेँ जयन्तीक तिथि निश्चित भेल । 25 मार्चकेँ मासक अन्तिम शनि-चौपालक लोकभाषा कविसम्मेलनक दिन । रेडियोमे रामचरित्रपाण्डेय 'अणु', कीर्त्तिनारायणमिश्र आ हम आहूत छलहुँ । रेडियो स्टेशनमे अणुजीसँ भेट भेल। हुनका अगिला दिन होअऽबला चन्दाझा-जयन्तीमे उपस्थित रहबाक अनुरोध कयलियनि । ओ कहलनि जे-काल्हिये मधुपजी अपन गाम कोर्थुमे चन्दाझा-जयन्ती रखने छथि । हम एतहि श्रद्धांजलि अर्पित करब ।'

26 मार्च 1961केँ सन्ध्या काल अजन्ता प्रेस परिसरमे चन्दाझा जयन्ती मनाओल गेल । अध्यक्ष छलाह हरिमोहनबाबू । रामचरित्रपाण्डेय 'अणु' छलाह विशेष अतिथि । यात्रीजीसँ भेट कयने छलियनि तँ ओ -हँ, नहि, रहब तँ, एहने सन स्थिति देखौने छलाह, मुदा आयोजनमे ओहो उपस्थित भऽ गेलाह । मायानन्दजी आयोजनक प्ररोचना कयलनि । अध्यक्ष, विशेष अतिथि ओ यात्रीजीक अतिरिक्त सुधांशुशेखरचौधरी, परमानन्दझा एडवोकेट इत्यादि श्रद्धांजलि अर्पित कयलनि । हमरहु बजबाक अवसर देल गेल । सभामे दुइ गोट बिन्दु मुख्य रूपसँ उभरि कऽ आयल । प्रथम ई जे कवीश्वरक अप्रकाशित कृतिकेँ प्रकाशमे अनबाक हेतु बिहार सरकारसँ आग्रह कयल जाय । दोसर, मैथिली शोध संस्थानक संघटन होअय ।

एहि आयोजनमे कोनो संस्थाक बैनरक उपयोग नहि भेल छल । समाचारमे देबा हेतु संस्थाक नाम चाही। मैथिली जन साहित्य संस्थान (अभिव्यंजनाक प्रकाशक)क नाम देब उपयुक्त नहि मानल गेल । अजन्ता

प्रेसक परिसर भेटल छल जयनाथबाबूक सौजन्यसँ । जयनाथबाबू छलाह चेतना-समितिक स्तम्भ । आयोजनकेँ महत्त्व भेटैक ताहू दृष्टिएँ समाचार पत्रमे समाचार देल गेल जे चेतना-समितिक तत्त्वावधानमे कवीश्वर चन्दाझा जयन्ती मनाओल गेल । यद्यपि चेतना-समिति एहि क्रमकेँ आगाँ बढ़यबाक प्रयास नहि कयलक । अगिला साल पटनामे ने मायानन्दजी रहथि, ने हम रही । हम यद्यपि दरभंगामे कतोक वर्ष धरि चन्दाझा-जयन्ती चलबैत रहबाक प्रयास करैत रहलहुँ ।

एम्. ए. परीक्षा

मायानन्दजी मैथिली साहित्यमे एकटा सर्जनशील साहित्यकारक रूपमे ख्याति अर्जित कयने जा रहल छलाह । वृत्ति सेहो मैथिलीएमे भेटल छलनि । तेँ ओ स्वतन्त्र छात्रक रूपमे मैथिलीमे एम्. ए. परीक्षा देबऽ चाहैत छलाह । तखन बिहार विश्वविद्यालय मात्रमे ई सुविधा छलैक । ओ बिहार विश्वविद्यालयसँ बी. ए. पास कयने छलाह । बी. ए.मे मायानन्दजीक कम्बीनेशनमे हिन्दी साहित्य छलनि । तेँ मैथिलीमे एम्. ए. परीक्षा नहि दऽ सकैत छलाह । एहि हेतु हुनका पहिने हिन्दीमे एम्. ए. करब आवश्यक छलनि । तखने मैथिलीसँ एम्. ए.मे परीक्षा दऽ सकैत छलाह । अतः ओ 1960 मे अत्यन्त हड़बड़ीमे बिहार विश्वविद्यालयसँ अनुमति प्राप्त कऽ परीक्षा फार्म भरलनि । हिन्दी एम्. ए. परीक्षामे बैसलाह आ द्वितीय श्रेणीमे उत्तीर्ण भेलाह । एहि परीक्षामे चारि पत्र-भाषाविज्ञान, संस्कृत-प्राकृत, काव्य-शास्त्र ओ स्पेशल विद्यापतिमे हम सहयोग कयने छलियनि । मुदा ओ एहि परीक्षामे बड़ सीरियस छलाह से नहि बोध भेल कहियो । अपन रिजल्ट निकललापर ओ अपन प्रतिक्रिया कहलनि- हओ, रिजल्टमे हम नीचाँसँ नाम ताकय लगलियै, थर्ड क्लासमे नाम नहि भेटल तँ भेल जे फेल कय गेलहुँ । फेर सेकेंड क्लासमे नीचाँसँ नाम ताकय लगलहुँ किनसाइत भेटि जाय । से, भेटि गेल ।'

परन्तु मैथिलीमे एम्.ए.क परीक्षा देबाक हेतु बेसी सीरियस बूझि पड़लाह । हम पटना विश्वविद्यालयमे एम्. ए. मैथिली वर्गक 1959-1961 सत्रक छात्र छलहुँ । मायानन्दजी कहलनि- रामदेव ! जावत तोँ पटनामे छह, तावत हमहूँ मैथिलीमे एम्. ए. कय लेबाक सोचि रहल छी । हमरा ओतेक पोथी एकट्ठा करब, पढ़ब आ नोट तैयार करब पार नहि लागत । तोहर जे सामग्री रहतह ताहीसँ काज चला लेब ।'

हम आश्वस्त कयलियनि-अहाँकेँ कोनो चिन्ता नहि करबाक अछि, जे चाहब से सब हमरा लगमे अछि। सब देब ।'

ओहि वर्ष बिहार सरकारक अधिनियम द्वारा पटना विश्वविद्यालयक चरित्र बदलि देल गेलैक। आब आनो विश्वविद्यालयक छात्र एहि विश्वविद्यालयमे स्वतन्त्र छात्रक रूपमे परीक्षा दऽ सकैत छल। मायानन्दजी एक दिन कहलनि-हओ, सोचैत छी जे मुजफ्फरपुर जा-जा कऽ परीक्षा देबामे बड़ झंझटि होइ छै, तेँ पटने विश्वविद्यालयसँ परीक्षा दी ।'

हमरा आ मायानन्दजीक वार्त्तालापमे कोनो वर्जना वा संकोच नहि रहैत छल। लाइटर वेनमे हँसैत हम कहलियनि-तखन हम अपन कोनो सामग्री अहाँकेँ नहि देब ।'

–किए हओ ? हमरासँ तोरा कोन कम्पिटीशन रहतह। तोरे दुआरे हम परीक्षा देबय चाहैत छी आ तोँही कहै छह जे किछु नहि देब।' कखनो-कखनो अत्यन्त निरीह भावसँ बजबाक जे स्टाइल मायानन्दजीकेँ रहलनि अछि, ताही स्टाइलमे मुस्किआइत ओ कहलनि।

हम कहलियनि-रट्टूमल आ तोतारटन्तसँ ने खतरा ने प्रतिस्पर्द्धा, मुदा कल्पनाशील आ इतिहास बनौनिहारसँ अवश्ये भय होयत। अहाँ अनुभवी आ हम अनुभवहीन एम्. ए.क परीक्षार्थी। तेँ भय, आशंका, प्रतियोगिता, प्रतिस्पर्द्धा, इरखा, किछु भऽ सकैत अछि ।'

–बेस, बेस, बुझलियह। हम पटनासँ नहि, बिहारेसँ एपियर होइ, सैह ने ? बेस, तँ सैह हेतै। ओहुना, माइग्रेसन-इमिग्रेसनमे बड़ झंझटि उठाबऽ पड़त। बिहारे विश्वविद्यालय ठीक रहत।' ओ बजलाह आ एहि प्रकारेँ समझौता भऽ गेल।

एम्. ए. परीक्षाक तैयारी

ओहि समयमे पटना विश्वविद्यालयमे आ बिहार विश्वविद्यालयमे एम्.ए. मैथिलीक सिलेबस प्रायः समाने जकाँ छलैक तेँ मायानन्दजीकेँ हमरा संग कम्बाइंड स्टडीमे कोनो बाधकता नहि छल। तेँ हम आ मायानन्दजी तीन-चारि मास धरि किछु समय एहन अवश्य राखल करी जाहिमे दुहू गोटे संग-संग तैयारी कऽ सकी। मायानन्दजी नित्य एक बेर तँ अवश्ये, कोनो दिन

प्रातः ओ कोनो दिन सन्ध्या काल साढ़े सातक बाद आबथि। हमरा डेरापर अयबाक कारण ई छलनि जे हमरा लग अपना विषयक समग्र सामग्री छल । मायानन्दजीकेँ जाहि कोनो पोथीक अपेक्षा होइत छलनि से हमरा ओहि ठाम भेटि गेल करैत छलनि । ओना ओ पोथीक उपयोग कमे करैत छलाह । हम जे नोट सब तैयार कयने छलहुँ वा तैयार करैत छलहुँ, ताहीसँ काज चला लैत छलाह । नोट वास्तवमे विभिन्न पुस्तकीय स्रोतसँ संकलित तथ्य सभक वर्तुलीकृत वृहत् निबन्धे रहैत छल ।

परीक्षा कैप्सुल

एक दिन एकटा विषयपर तैयार नोट वा ओहि विषयपर लिखल विस्तृत निबन्ध लऽ गेलाह । दोसर दिन फेर ओकरा लेने अयलाह । हम पुछलियनि-आहि रे बा ! एतेक जल्दी आपस ? एकरा पढ़लियै नहि ?'

ओ बजलाह-आहि रे बा ! तोहर एहि नोटसँ कोनो पोथिए पढ़ब बेसी हल्लुक लगैए ।'

फेर कहलनि- ई बात हँसीमे कहलियह । तोरो तँ एकर प्रयोजन छहे, तेँ राति भरि जागि कऽ पढ़ि गेलहुँ। एकरा आपस कय फेर दोसर नोट लय जायब । सत्त पुछह तँ तोहर ई वृहत् नोट पढ़लाक बाद आन पोथी पढ़बाक कोनो प्रयोजन नहि। समस्या छै एतेक बातकेँ मोन राखब । एग्जामिनेशन हॉलमे अनेरे मोन हुलबुला जाइ छै आ सबटा पढ़ल-रटल बिसरा जाइ छै।'

हम कहलियनि- परीक्षासँ एक दिन पहिने परीक्षा-कैप्सुलक प्रयोग कऽ लेने मानसिक चंचलता कम भऽ जायत ।'

ओ बजलाह- हम चिन्तित छी जे एतेक व्यस्त जीवनमे परीक्षा कोना सम्हरत आ तोँ ओकरा लाइटली लय रहल छह !' ई परीक्षा कैप्सुल कोन डिस्पेन्सरीमे भेटत ?'

जहिना-जहिना परीक्षाक तिथि लगिचायल जाइत छल तहिना-तहिना क्रमशः आठो पेपरक वी.वी.आइ (वेरी-वेरी इम्पोर्टेंट) प्रश्न सभक परीक्षा सूत्र (अर्थात् मुख्य-मुख्य प्वाइंट्स) संकेत रूपमे तैयार करैत गेल छलहुँ। एकर उद्देश्य छल जे परीक्षासँ पूर्वक दिन अल्प समयमे समग्र पेपरक सरसरी दृष्टिएँ

रिवीजन कऽ सकी । ओकरा सबकेँ अपन ओछाओनक मध्य भागमे तऽरमे रखने रही । हम ओछाओन उनटा कऽ जे नोट अनने छलाह तकर परीक्षा-सूत्र अर्थात् परीक्षा-कैप्सूल धरा देलियनि- देखियौ तँ ।'

ओ ओकरा सरसरी नजरिसँ पढ़ि बाजि उठलाह- वाह ! अद्भुत ! विलक्षण ! बस, हमरा यैह चाही ।'

हम कहलियनि- एकर लाभ तखने जँ एक बेर विषयक मूल नोट देखि जैयैक ।'

मायानन्दजीकेँ ई परीक्षा कैप्सुल नीक लगलनि । दुनू गोटे मीलि प्रायः आठो पेपरक वी.वी.आइ. प्रश्नक परीक्षा-कैप्सुलक समीक्षा ओ तर्क-वितर्क कऽ जोड़-घटाओ सेहो करैत रहलहुँ । ओहि आठो पेपरक अधिकांश परीक्षा-कैप्सुल सभ एखनो हमरा लग सुरक्षित अछि । ओहि परीक्षा-कैप्सुलक गोटेक नमूना देखल जा सकैछ ।

यात्री : चित्रा

1. प्रारम्भमे छायावादक प्रभाव

   1. भाषा : संस्कृतनिष्ठ

   2. छन्द : प्रचलिते

   3. भाव : पलायनवादी

      क. प्राचीन इतिहास दर्शन-**माँ मिथिले**

      ख. संन्यास-ग्रहण-**अन्तिम प्रणाम**/हम जाय रहल छी आन ठाम/दुःखोदधिसँ संतरण हेतु ।

2. बादमे : प्रगतिवादी प्रभाव

   1. भाषा : चलती + ठेठ + ऊभड़-खाभड़

   2. छन्द : मुक्तवृत्त

   3. भाव : -मार्क्सवादी चिन्ताधारा / बहुत किछु रूसी ढंग / साधारण वस्तुक चयन / नवोन्मेष-**परमसत्य** / नाटकीयता / हास्य-व्यंग्य / व्यंग्यक तीक्ष्णता / साम्यवादी विशिष्टता : सब केओ मैथिले थीक / ककरो न बड़का धोधि हैत ।

3. आलोच्य :

1. कखनो-कखनो पद्यकार-**विलाप+बूढ़वर**
2. कतोक कविता उद्देश्यहीन / मात्र चित्रणक लेल-आसिन मासक राति इजोड़िया/फागुनक इजोड़िया **टहाटही**
3. संज्ञा सभक नामावली- **वन्दनामे** जातिक नाम
4. गद्यक वस्तुकेँ पद्यमे उतारब-**ठीठर मामा**
5. अनेक ठाम व्यक्तिकेँ टाइप बनैब

4. यात्री : निष्कर्ष

1. प्रगतिवादी कवि
2. प्रचारवादी दृष्टि
3. भाषा-अति चलित-तद्भव-देशी-लौकिकी वाग्भंगिमा

सुमनजी : प्रतिपदा

1. जन्म : 1910
2. वृत्ति : सम्पादन-अध्यापन
3. रचना : **प्रतिपदा/अर्चना/साओन-भादव/सनेस/कथा**/सम्पादकीय अग्रलेख/भूमिका

4. **युग सन्दर्भ** :

1. स्वराज्य आन्दोलनसँ प्रभावित
2. समसामयिक गतिविधिक प्रभाव
3. रवीन्द्रनाथठाकुरक प्रभाव
4. मैथिली काव्यक नवजागरण
5. विश्वक घटना-विश्वयुद्ध/प्रगतिवादी विचार/अन्यान्य

5. **वस्तु चयन** :

1. प्राचीन+पौराणिक
2. नवीन काव्य विषय
3. अस्पृष्ट वस्तु-**असूर्यम्पश्या**
4. विषय पुरान-अभिव्यक्ति नवीन/अभिव्यक्ति पुरातनी तँ विषय नवीन

6. **प्रतिपादन शैली :**

1. सूक्ष्म/कोमल/नवीन/यदि पुरान तँ भंगिमा नवीन/प्राचीन वस्तुक हेतु साधारण जीवनक स्थलसँ कल्पना/नवीन वस्तुक वर्णनमे शास्त्रीय स्थलसँ कल्पना/कखनो-कखनो दुरूह कल्पना/एके वस्तुकेँ विभिन्न रूपमे देखबाक प्रवृत्ति/कल्पनाक शृंखला-सृष्टि/प्रसंग-गर्भत्व ।

2. प्रतीक : पौराणिक प्रतीकक उपयोग/जीवन-विषय लेल प्रकृतिक घटनासँ प्रतीक-चयन-यौवन स्मृति/प्रकृति-वर्णनमे साधारण जीवन औ पौराणिक घटनासँ प्रतीक ग्रहण-**तरु, यमुना** / मानवीय भावना वा युग भावनामे सभ ठामसँ प्रतीक-**कविताक आह्वान, युग नवीन** ।

3. अलंकार : अलंकार-प्रिय/रूपक ओ उपमा अधिक/अलंकारक उपयोगमे कल्पना+प्रतीकक प्रवृत्ति/अधिकांश वर्णनमे अप्रस्तुतक आरोप/आरोप-आधिक्यसँ कल्पनाक शृंखलाक सृष्टि ।

4. भाषा : सांस्कृतिक गौरवगाथामे संस्कृत बहुल-अन्यथा सामान्य धरातल/थोड़ेक समस्त पद/साधारणतः कोमल वर्ण-प्रयोग/तँ माधुर्य गुण/प्रसादगुणक अनाधिक्य ।

5. छन्द : पुरान छन्दक प्रचुर प्रयोगक संगहि नवीनहु छन्द/किछु नवीन गीतमे नवीने छन्द/मात्रावृत्त विशेष।

6. प्रकृति : उद्दीपन विभावक रूप नहि/अपवाद **आषाढ़स्य प्रथम दिवसे**/स्वतन्त्र वर्णन(आलम्बन विभाव) मानवीकरण/नारी रूप/भावक आरोप ।

7. **विचार-धारा :** 1. असामञ्जस्यमे सामञ्जस्य करब

2. कल्पनामे वास्तविकता देब

3. वास्तविकताकेँ कल्पना देब

4. शिवकेँ सुन्दर बनायब

5. सुन्दरकेँ शिव बनायब

6. आदर्श ओ यथार्थकेँ सुसंगत करब

7. दुइ बिन्दुक मध्यसँ मार्ग-ग्रहण

8. परम्परावाद-प्रगतिवादक सामञ्जस्य

9. संस्कृति ओ प्रकृति (यर्थाथ)क समन्वय

10. प्राचीनताक सम्मान-नवीनताक स्वागत ।

सहरसा कालेजमे व्याख्याता पदक लेल आवेदन

जुलाइ 1961मे सहरसा कालेजमे मैथिली व्याख्याता पदक विज्ञापन बहरयलैक । अर्हतामे एम्. ए. क एपियरिंग कैंडिडेटकेँ सेहो आवेदन करबाक छूट देल गेल छलैक । मायानन्दजी आ हम दुहू गोटा आवेदक होयबाक योग्य छलहुँ । आवेदन करी वा नहि करी से तारतम्य छल । सोचल जे जँ मायानन्दजी ओतऽ आवेदन करताह तँ हम आवेदन नहि करब । कारण, सहरसाक लेल वैह दमगर प्रत्याशी सिद्ध भऽ सकैत छलाह । हमरा लगमे अपन उत्तम एकेडेमिक कैरियर आ साहित्य रचनाक किछु पूजी छल । मुदा कोनो कालेजमे व्याख्याता पदपर आनो-आनो उपादानकेँ ध्यानमे राखि नियुक्ति होइत छलैक । मायानन्दजी सहरसा जिलाक निवासी छलाह । प्रसिद्ध ओ प्रभावी राजनीतिज्ञ राजाबाबू (पं. राजेन्द्रमिश्र) सहरसा कालेजक गवर्निंग बडीक शक्तिशाली सदस्य (अध्यक्ष वा सचिव) छलाह । मायान्दजीकेँ हुनका सबसँ निकटता छलनि, आत्मीयता छलनि से हमरा बूझल छल । एम्. ए. (मैथिली) परीक्षामे उत्तम वा सर्वोत्तम रिजल्ट सम्भावित छलनि । सबसँ अधिक मैथिलीमे तीन गोट प्रकाशित पोथी, एक गोट सम्पादित पत्रिका, कविसम्मेलनक लोकप्रियता ओ आकाशवाणीसँ नित्य प्रसारित घूटरभाइक मैथिली स्वरक आकर्षण हुनका हमरा अपेक्षा ओजनगर बना दितनि । वयसेँ हमरासँ जेठ तँ छलाहे ।

यैह सब सोचि हम सहरसा कालेजमे आवेदन करबा दिससँ उदासीन छलहुँ । मायानन्दजी एहि प्रसंगमे स्वयं चर्चा कयलनि-की हओ ! सहरसा कालेजमे की करबऽह ?'

—ओहि ठाम लय तँ अहाँ छीहे, हम कथीलय अप्लाइ करब ? जँ अहाँ कैंडिडेट रहब तँ हमरा किए हैत ?' हम कहने रहियनि ।

ओ कहलनि- अप्लाइ तँ हमहूँ कैए देबै मुदा पटना छोड़बाक इच्छा नहि होइए । बड़ असुविधा भै जैत । तोँ धरि अवश्य कै दहक ।'

हम 14 जुलाइकेँ आवेदन पत्र पठा देलियैक । पुनः 30 अगस्तकेँ हमर रिजल्ट बहरायल तँ तकरहु, सूचना सहरसा कालेजक प्रिन्सिपलकेँ विधिवत् पठा देलियैक । इंटरव्यूमे जाइ कि नहि, ताहि सम्बन्धमे अऽदऽबऽक स्थिति

बनले रहल । पुनः मायानन्दजीक पटनासँ 14.9.61क लिखल पत्र हमरा 17.9.61 केँ भेटल जाहिमे ओ लिखने छलाह–

पटना

14.9.61

प्रिय रामदेव,

की हौ ? गुम्मे रहबऽ ? बूझल छऽ हम कत्ते कम पत्र लिखै छी ? अबै छऽ कहिया ? ...सहर्षासँ कोनो समाचार ? की जेबऽ ? हम नञि जा रहल छी। एही ठाम बी. एन्. कालेजमे आन्दोलन चला रहल छी । प्रयत्नमे छी, देखा चाही । जँ खुजलै विभाग तँ हमरा हेबैक चाही । ओमहर मारबाड़ी कालेजमे की भेलऽ तोरा ? चि. नूनूकेँ भाय भेलैनि ं गत 6-9 केँ – मा.न. ।

पूजावकाशमे वा ओहिसँ किंचित् पूर्व सहरसा कालेजक इंटरव्यू होयबाक सूचना भेटल । ओहिमे गेलहुँ । ओहि ठाम क्यो परिचित नहि । हिन्दीक प्राध्यापक आ मैथिलीक लेखक प्रो. रमेशचन्द्रवर्माक ओहि ठाम टिकलहुँ । ओ सूचना देलनि जे कुल दस-बारह गोट प्रत्याशी मैथिलीमे छथि जाहिमे मायानन्दमिश्र सेहो छथि । इंटरव्यूमे ओ उपस्थित होयताह । मायानन्दजी जँ नहि रहितथि तँ हमरा भैए जाइत से कोनो आवश्यक नहि छल, परन्तु ओ जँ प्रस्तुत होथि तँ हुनका होयबे करितनि से तँ निश्चिते । सैह भेबो कयल । सहरसा कालेजमे मैथिली व्याख्याता पदपर मायानन्दजीक चयन भेलनि । निराशा भेल, हुनका प्रति मोन कने हाप्फु भऽ गेल । से एहि लेल नहि जे हमरा नहि भऽ कऽ हुनका भेलनि । भेलनि तँ सर्वथा उचिते, एक प्रकारेँ हर्षे भेल । हाप्फु होयबाक कारण ई छल जे सहरसा जयबा-अयबामे नाहक टका खर्च भऽ गेल । जँ मायानन्दजी संकेत कऽ देने रहितथि तँ ओतेक टका बाँचि जैतय । किन्तु ई क्षोभ बेसी दिन नहि रहल । 15 नवम्बर 1961केँ ओ ज्वाइन कयलनि आ 24 नवम्बर 61केँ हम एस्.पी. कालेज, दुमकाक मैथिली विभाग ज्वाइन कयलहुँ । अतः कोनो प्रकारक अनुरोधक भाव नहि रहल । सभ किछु निर्मल, पूर्ववत् ।

हमर डायरीमे मायानन्दजी

पटना प्रवासक अवधिमे हम अपन डायरीमे दैनिक घटना सूत्र रूपमे टीपि लैत छलहुँ । ओहिमे मायानन्दजीक प्रसंग नियमित रूपसँ अबैत रहल । बेसी दिन यैह टीपल अछि– मायानन्दजी अयलाह, मायानन्दजी नहि अयलाह । मायानन्दजी आयल छलाह भेट नहि भेल, आइ मा.न.सँ भेट नहि भेल, रेडियो

स्टेशनमे मा.न.सँ भेट, मा.न. क डेरापर भेट-इत्यादि । बहुत ठाम किछु-किछु विशेष बात सब उल्लिखित अछि । ओहने पृष्ठ सबसँ किछु अंश एहि ठाम उद्धृत कयल गेल अछि-

18.8.1959- आइ भरि दिन बरखा होइत रहल । सुधाकरबाबूसँ भेट नहि भेल । हरिमोहनबाबूसँ गप्प-सप्प भेल । फेर मायानन्दजीक संग लौटि गेलहुँ ।

31.8.1959- (पटना पहुँचलहुँ)...मायानन्दजीक डेरापर गेलहुँ । नहा-सोना कै प्रो. आनन्दमिश्रसँ भेट कयल । 11.20सँ क्लास चलत ।

6.9.1959- आर्यावर्त्तमे अमरजी आ हमर कविता बहार भेल । साँझमे मायानन्दजीक संग रेडियो स्टेशन गेलहुँ । विश्वनाथजीसँ भेट भेल । गणेश चौठ संगीत-रूपक चौपालमे भेलैक ।

11.9.1959- आइ प्रातः मायानन्दजी एवं देवेन्द्र संग ट्यूशनबला डेरा देखै गेलहुँ । भिनसर-साँझ एक-एक घंटा समय देमै पड़त, बदलामे 30/- टाका भेटबाक आश्वासन भेटल ।...सायंकाल प्रेममोहन आ चन्द्रमोहनकेँ पढ़ैब प्रारम्भ कैल । आइ सबा छौसँ साढ़े आठ धरि पढ़ौल ।

16.9.1959- मायानन्दजी संग बेरियामे आर. ब्लाक योगेशजी आ हरिमोहनमिश्रसँ भेट...बी. एन. माधव ओतै डी. फिल्. उपाधि प्राप्तिक उपलक्ष्यमे समारोह होइत छल । हिन्दी साहित्यकार सभ जुटल छलाह । एम.एल.ए. फ्लैट, नागेन्द्रजीसँ भेट, एक ठाम मायानन्दजी तीनटा गीत गौलनि । एक फ्लैटमे वीरेन्द्र चित्रकारसँ भेट भेल । मारि स्केच सभ देखौलन्हि । मायानन्दजीक हिन्दी उपन्यासक कवर लै आइडिया देल गेलन्हि ।

23.9.1959- मायानन्दजीक परिवारमे सभ क्यौ दुखित छथिन्ह । साँझखन दुनू गोटे भानस बना कै खैलहुँ । आइ मेसमे रातिमे नहि खैलहुँ ।

20.111959- (मैथिल महासभाक अजमेर-महाधिवेशनसँ आपस भेलापर) हम पंडितजी (अमरजी) क संग कदमकुआँमे मायानन्दजीसँ भेट कयल ।

22.11.1959- आइ भोरे मायानन्दजीक ओतै गेलहुँ । ओहि ठामसँ बारह बजे एलहुँ । तावतमे फेर मायानन्दजी कंचन भवन (हमर नवका डेरा) ऐलाह ।....

2.12.1959- रातिमे मायानन्दजी ऐलाह । मारि गप्प कलकत्ताक कहलन्हि । सोमदेव राजकमलकेँ पत्र लिखने छल जे अमर, शेखर आ मायानन्दक त्रिकोणसँ हमरा सबकेँ बचबाक चाही अर्थात् हिनक चर्च कतहु नहि हो । हुनक वैदेहीमे विशेषांक रूपमे 'चानोदाइ' उपन्यास प्रकाशित भेलन्हि अछि, भै सकैछ ताहि कारणे अहम् बेसी आबि जान्हि ।

3.12.1959- भिनसरे मायानन्दजी ओतै गेलहुँ, बहुत गप्प होइत रहल ।...

6.12.1959- आइ भिनसरे नहा-सोना कै खा कै मायानन्दजी ओतै गेलहुँ । हुनकहि ओतै दुपहर बीतल । आर्यावर्त्त होइत रेडियो स्टेशन गेलहुँ । ओहि ठाम जयनारायण (डरहार)सँ भेट भेल । मोदमंडलीक कार्यक्रम छलैक । विश्वनाथजी अपने अनुदेशनमे एकरा तैयार कयने छलाह । समाज शिक्षा बोर्डमे शिक्षा सप्ताहक अन्तर्गत कविसम्मेलन छलैक । अध्यक्ष छलाह रुद्रजी । मस्तजी भेट भेलाह । नाम सूनि अकचका गेलाह । कारण, दोसरो रामदेव सेहो छलाह । बड़ा मनोरंजक रहलैक जखन मंचपर दू-दूटा रामदेवझा उपस्थित छलाह । ओ रामदेव अहम्मन्य जकाँ बूझि पड़लाह । नव परिचयक साधारण शिष्टाचारो नहि देखौलन्हि । सत्यनारायणअष्ठाना सेहो छलाह ।

(टिप्पणी-एहि कविसम्मेलनमे मायानन्देजी हमर परिचय सबकेँ देलथिन । हम मैथिली कविता 'धुपबत्ती' पढ़ने छलहुँ जे मंचपर पठित एक मात्र मैथिली कविता छल, जे लोककेँ नीक लगलैक । ओ रामदेवझा सचिवालयमे कार्यरत छलाह । मंचसँ उतरलाक बाद श्रोतामे उपस्थित प.राजेश्वरझा हमरा साधुवाद देलनि । मायानन्दजी ओहि रामदेवझाक समाद कहलनि-हओ, ओ रामदेव तोरा अपन दोसर कोनो साहित्यिक नाम राखि लेबय कहैत छह, कन्फ्यूजनसँ बचबा लेल ।' हम कहलियनि-हम अपन मूल नामसँ साहित्यमे चीन्हल जाइत छी आ एहीसँ चीन्हल जाय चाहैत छी । बरु वैह अपन नाम बदलि लेथु । बादमे मायानन्दजी समाधान देलनि जे ओ रामदेव ग्रेजुएट नहि छथि तेँ तोँ अपन

नाममे बी.ए. आनर्स जोड़ि देल करहक । तेँ हमरा बहुत दिन धरि अपना नाममे बी. ए. आनर्स आ एम्.ए. कयलापर एम.ए. आ प्रोफेसर शब्द जोड़ैत रहऽ पड़ल ।)

9.12.1959- .....यूनिवर्सीटीसँ दू बजे ऐलहुँ, बचकुनो (रमानाथमिश्र मिहिर) ऐलाह । दुहू गोटे मायानन्दजीक ओतै गेलहुँ । 'चानोदाइ' क आलोचना सात पेजक छलन्हि से सुनलहुँ । थर्ड ग्रेडक उपन्यासनुमा वस्तु चानोदाइ । 'कालरेत' नामक कहानी लिखैत छलाह । शिल्पक दृष्टिसँ पुरान रहितो ऊहि आ चित्रणमे बड़ आगाँ अछि। पाठकक भावनापर बड़ बेसी असरि करैत छैक । 'पैथस'केँ जगा दैत छैक । तीनू गोटे केबिनमे जलपान कै सम्मेलन-भवनमे ग्रामोद्योगक प्रदर्शनी देखै गेलहुँ । श्यामानन्दझा नामक व्यक्ति ओहिसँ सम्बद्ध कलाकारसँ अनायासे परिचय भेल । मायानन्द बजलाह जे-एखन तँ एकर प्रदर्शनीए लगलैये, जखन प्लास्टिकक वस्तु एतैक तँ ई सभ म्यूजियम चल जेतइ...।

10.1.1960- आइ भोरे मायानन्दजी एलाह । हुनका संग हरिमोहनबाबू ओतै गेलहुँ । ओतैसँ आबि एक बजे भोजन कैलहुँ । फेर ज्यौ. बलदेवमिश्र ओतै गेलहुँ, अतिवृद्ध लोक आ ओतेक सरल ओ मिलनसार ! कतेक ने संस्मरण सुनौलन्हि । प्रायः पहिल बेर गप्प भेल अछि । ओहि ठामसँ रेडियो स्टेशन ऐलहुँ । आनन्दबाबूक टॉक छलन्हि ।

12.1.1960- आइ दस बजे मायानन्दजी ऐलाह । आब जखन अभिव्यंजनाक काज एते आगाँ बढ़ि गेलै अछि तखन आनन्दमिश्रकेँ सम्पादक बना लेबा लै कहैत छथिन्ह ।...

15.1.1960- रेडियो स्टेशनमे 'नव बाट : नव बटोही' एकांकी दै ऐलिऐक । राति एगारह बाजि कै दस मिनटपर मायानन्दजीक डेरापरसँ ऐलहुँ ।

17.1.1960- हरिमोहनबाबू ओतै भोरे मायानन्दजीक संग गेलहुँ ।

19.1.1960- ...भोरे मायानन्दजीक ओतै जा कै हरिमोहनबाबूबला 'तर्क वागीश की गवेषणा' आ तकर अपना द्वारा कयल अनुवाद दै ऐलिऐन्हि । 'अभिव्यंजना'पर मारिं गप्प भेल । द्विजेन्द्र आ मायाकान्त रातिमे 'इकाई'क तीनू अंक लै गेलाह .....।

20.1.1960- ....साँझमे मायानन्दजी ऐलाह । विचित्र प्रकारक अव्यावहारिक छथि जेना, से आइ बोध होइत छल। एखन हुनका मात्र 'अभिव्यंजना' भरल छन्हि माथमे ।

23.1.1960- आइ भोरे हरिमोहनबाबू ओतै गेलहुँ । बड़ी कालधरि गप्प भेल। सोमदेवक 'पमरियाक तेसर' कविताक बड़ आलोचना कैलथिन्ह। बाबूसाहेबचौधरी दै कहलन्हि जे ओ किएक साहित्यकारक विरुद्धमे भ्रष्टवस्तु छपैत छथि । मायानन्दजी ऐलाह, फेर तुरत चल गेलाह ।

25.1.1960- साँझमे रेडियो स्टेशन गेलहुँ.....। आइ मोन ततमतमे छल जे गाम जाइ की नहि । मायानन्दजी गाम जा रहल छथि....।

26.1.1960- आइ पटना जंक्शनपर 5 बजेक भोरुक गाड़ीसँ मायानन्दजीक संग गाम विदा भेलहुँ ।

9.2.1960- ...साँझमे टहलै विदा भेलहुँ । रेडियोमे मायानन्दजीक आवाज सुनबाक लेल जे ओ गामसँ ऐलाह वा नहि । आनन्दबाबूक डेरापर गेलहुँ । मायानन्दक आवाज सुनल-'लघुकेशिनी तिरुवल्लमिदम्' । हिन्दी एकांकी सेहो सुनल । साढ़े आठ बजे डेरापर ऐलहुँ तँ ज्ञात भेल जे मायानन्दजी हमरा ताकि कै चल गेलाह ।....

11.2.1960- ...आइ सबेरे...तावत रूममे मायानन्दजी उपस्थित । फणीश्वरनाथ 'रेणु' अपनं कहानी देलथिन्ह से कहलन्हि ।...रेडिया स्टेशन 'लोहा सिंह' देखै गेलहुँ । बाप रे ! एतेक भीड़ ! कमसँ कम पाँच हजार लोक छल हेतइ ....।

13.2.1960- आइ छुट्टी अछि । मायानन्दजी कहलन्हि जे एल.एस. कालेज, मुजफ्फरपुरक मै.सा.प. क अधिवेशनमे चलिहह । ओकर आमंत्रण हमरो ऐल छल । से, ओ ने हमरा बजबै ऐलाह, ने हम गेलहुँ।

15.2.1960- ...रेडियो स्टेशन गेलहुँ....। मायानन्दजी मुजफ्फरपुरक कविसम्मेलनादिक चर्चा कैलन्हि । अमरजी, शेखरजी. श्रीमन्त, इन्द्रनाथ आदि ऐल छलाह... ।

17.2.1960- ...(डिस्पेन्सरीसँ)...ऐलहुँ तँ एतै मायानन्दजी छलाह । अभिव्यंजनाक लेल सामग्रीक फाइल हमरे ओतै छन्हि । जयनाथबाबू ओतै गेला । ओ नहि भेटलथिन्ह तँ फेर एही ठाम राखि गेलाह । साढ़े दस भै रहल छलैक, अपर रोड धरि संग छलाह । कहैत छलाह मुंगेर चलह । हमरा तँ बजौलक अछि नहि तँ कोना जाइ । दोसर, खर्चक सबाल ।...

20.2.1960- ...मायानन्दजी पहुँचलाह 'मुंगेर चलह' । हमरा एकदम जेबाक इच्छा नहि । दोसर, हम तँ आमंत्रितो नहि छी । ओ बलजोरी अपना डेरापर लऽ गेलाह तैयार भै कै जे चलबे करह... (प. त्रिलोकनाथमिश्रक ट्रेनमे मृत्युक समाचार)....मायानन्द सुनिते अचंभित रहि गेलाह ।...

21.2.1960- रातिखन मायानन्दजी मुंगेर जैबा लै पकड़ि कै लै गेलाह, भोर धरि कहिते रहलाह मुदा मोन नहि मानलक । ओ तूफानसँ गेलाह, हम रिक्सासँ कंचन भवन आबि गेलहुँ ।

22.2.1960- ...तखने मायानन्दजी ऐलाह । भोरे मुंगेरसँ ऐलाह । एक बेर कहलनि जे तोँ नहि गेलह से ठीक नहि कैलह । अमरजी खोज करैत छलथुन्ह । लॉ केर एकटा किताब आ सिलेबस अमरजी हुनका माध्यमसँ पठा देलन्हि.... ।

25.2.1960- (शिवरात्रि) ...सिनेट हौलमे छौ बजेसँ आरम्भ होइबला सभा सात बजे प्रारम्भ भेल । गोटेक सै लोक । सभापति हरिमोहनबाबू । हुनक भाषण बड़ सरस ओ मनोरंजक भेलन्हि । भयानक सटायरिस्ट छथि, एहिमे सन्देह नहि । सभाक बाद मायानन्द भेटलाह । हरिमोहनबाबू हमरा आ मायानन्दकेँ रवि दिन आबै कहलन्हि । दर्शनमे प्रकाशित 'हाथीक दाँत' कहानीसँ बड़ दुखी छलाह ।

26.2.1960- ...सबेरे स्नान कै सबेरे भोजन करै पड़ल । आलूक बचका बनल छलैक । मायानन्दजी ऐलाह, बड़ी काल धरि अभिव्यंजना सम्बन्धी गप्प भेल-योजना बड़ विस्तृत छन्हि, से सफल हो तखन ने ? जानसँ हमरा सकेँ जे हेतन्हि से तँ करबे

करबन्हि ।... मायानन्दजी सतीशचन्द्रमिश्रसँ भेट करैत ऐल छलाह, हमरा नाटकपर छोट आर्टिकिल तैयार करै कहि गेलाह । अपन 'रूप-रस-गन्ध' कविता-संग्रह प्रकाशनपर तेजीसँ सोचि रहलाह अछि । 10 मार्चकेँ वसन्तोत्वस मनैबाक विचार छन्हि ।

28.2.1960- प्रातः काले स्नान कैलहुँ -बैसलहुँ रातुक सुरू कैल 'मैथिली नाटक : विकास वृत्त' निबन्ध लीखै लगलहुँ । मायानन्दजी ऐलाह तँ रिक्सासँ हरिमोहनबाबू ओतै गेलहुँ से बारह बजे धरि रहलहुँ । आरतीनाथबाबू सेहो रहथि । जखन पहुँचलहुँ तँ हरिमोहनबाबू कुर्सीपर बैसि प्रयोगवादी कविता लिखि रहल छलाह-'गंगातट पर'-सुनौलन्हि । कविता सुनि कै ओ ततेक प्रभावित भेलाह जे ओहो लीखब प्रारम्भ कै देल । हुनका पुनः उपन्यास लीखै कहलिअन्हि तँ कहलन्हि जे शरद्‌बाबूक श्रीकान्त सन एकटा उपन्यास मैथिलीमे लीखै चाहैत छी । ओ कहलन्हि जे साहित्यकारमे शरद! ओ दार्शनिकमे रसेल हमरा बड़ नीक लगैत छथि । राजकमलक 'हाथीक दाँत' सँ बड़ बेसी दुखी । अभिव्यंजनाक प्रकाशन आयोजनपर विस्तृत गप्प-सप्प । ओही ठाम चेचकोर पाछबला ऐल, सब गोटे लेलहुँ । रिक्सा सँ डेरा ऐलहुँ ।

1.3.1960- बचकुन (रमानाथमिश्रमिहिर) संग भोरे चाह पीबै गेलहुँ...। मायानन्द ऐलाह हमरा पाछुएमे, जखन खाइत रही तँ फेर ऐलाह । अभिव्यंजना, मैथिली जन साहित्य संस्थान मुख्य विषय । आयोजन कते दूर धरि सफल होइत अछि, भगवान जानथि । साँझमे ऐबाक वचन देलन्हि मुदा ऐलाह नहि ।

2.3.1960- ...हम 'मैथिली नाटक : विकास वृत्त' फेयर कैल । मायानन्द ऐलाह । अभिव्यंजनाक सम्बन्धमे हरीजी (हरिनाथमिश्र)सँ गप्प भेलन्हि ।

3.3.1960- ...स्नान कै 'मैथिली साहित्य : प्रमुख नाटककार' फेयर करब प्रारम्भ कैल....। खैलाक बाद मायानन्द ऐलाह, आयोजन लै एम. एल. ए. क्लब मङनी कैलन्हि अछि । 15/- टाका दै देलथिन्ह ।

'आधुनिक नाटक : विकास वृत्त' निबन्ध लै गेलाह । जानि नहि ओकर लेखकक स्थानपर कोन नाम देथिन्ह । शैलीपर थोड़ेक विवाद भेल... ।

5.3.1960- ...खाइत रही तँ मायानन्द ऐलाह । भोजन करबा लै बैसैत छी तँ ओ, अबैत छथि । हम कठिनतामे पड़ि जाइत छी । ओ एही ठाम खैलन्हि । दसकेँ वसन्तोत्वसक आयोजन करैत छथि आ हॉल नहि भेटि रहल छन्हि । संग-संग अंजुमन हॉल गेलहुँ, यूनिवर्सीटी गेलहुँ । मायानन्द हरिमोहनबाबूसँ भेट करै गेलाह । ओ कटिहार चलै कहैत छलथिन ।...

7.3.1960- बड़ अबेर धरि पड़ल रहलहुँ ओछैनपर आ उठलहुँ तँ दतमनि कै लीखब प्रारम्भ कै देल, नहैल नहि रही, मायानन्द ऐलाह, सभ प्रोग्राम फेल करैत छन्हि जेना । आब साधारण सन मिटिंग करताह मात्र । एना कखनो-कखनो अव्यावहारिक जकाँ किएक सोचै लगैत छथि ? सतीशबाबू अध्यक्षपद अस्वीकार कै देलथिन्ह । आनन्दबाबू संयोजकत्व अस्वीकार कै देलथिन्ह ।

8.3.1960- अबेर कै स्नान कैलहुँ-ओहिसँ पहिने मायानन्द ऐलाह आ झटपट विदा भै गेलाह। दसकेँ वसन्तोत्सव, सोचैत छलहुँ जे ओहि दिन गाम चल जैब, से लगौलनि बखेड़ा ।...

9.3.1960- बड़ भुकौलनि अछि आइ मायानन्दजी । पकड़ि कऽ लऽ गेलाह प्रेस-प्रूफ देखबा लै । क्लास जाइए ने दैत छलाह, गेलहुँ । ओतैसँ आबि अजन्ता प्रेसमे प्रूफ देखैत रहलहुँ । पाँच बजे मायानन्द फेर ऐलाह-गेलाह...। साँझमे बौआइत रहलहुँ...। खा कै फेर प्रेस गेलहुँ साढ़े एगारह बजे । एखन तीन बाजि गेलैक अछि । हम आ मायानन्दजी बैसल प्रूफ देखैत रहलहुँ अभिव्यंजनाक । कहैत छलाह-हओ, फेर की दोसर बेर ई बहार हेतइ ! कहि नहि एकर की भविष्य हेतइ-कोना लोक एकर स्वागत करतैक । हमर लेख 'धरणीधर' नामेँ देलथिन्ह अछि । हम तँ कहलिअन्हि नहि देबा लै, तैओ दै देलथिन्ह । मायानन्दजी एखन ओहि चौकीपर सूतल छथि, बोली कसै छथि जे तोरा महात्मा गान्धी बनबाक छह जे डायरी लिखैत छह ! हम आजुक

लिखलाहा पहिल पाँती देखौलिअन्हि अछि । कहैत छथि-एँ हौ, हमर पोल खोलि रहल छह ! आ' हमरा ठहाका लगैबाक मोन होइयै ।

10.3.1960- ओह, आइ डाँड़-पीठ टटा कै एक भै गेल अछि । भरि दिन अभिव्यंजनाक प्रूफ करेक्सनमे लागल छी । राति भरि तँ जगले रही । मनोनुकूल नहिञो तैयो बहार धरि भै गेलैक । आर्यकन्या विद्यालय, मछुआ टोलीमे उद्घाटन सभा छलैक । अवधनारायणझा सभापति, देवनारायणयादव ऐल छलाह । पाछाँ कुमारसाहेब (कुमार गंगानन्दसिंह) सेहो ऐलाह-मायानन्दक प्रशंसा भेलन्हि खूब मुदा अभिव्यंजना चलै तखन ने ! हरिमोहनबाबू ओतै गेलहुँ दौड़ल साँझमे सूचना देमै । सभामे जे लोक सभ अभिव्यंजना लेलकैक तकर क्यौ दामो ने देलकैक । ओह, देह हल्लुक लगैत अछि एखन मुदा मोन भारी, होइयै कखन ऊड़ि कै चल जाइ गाम....।

11.3.1960- देहक जोड़-जोड़ दर्द करैत छल भिनसर खन, होइत छल जे दुखित पड़ि गेलहुँ, नहि ऊठि होइत छल । रातुक उत्सवक संग अभिव्यंजनाक उद्घाटन-आब ओकर प्रसारण चाही ।...डेरा आबि समान सरिअबैत रही कि मायानन्द दौड़ल ऐलाह- 'चलह-चलह-चलह', ओहि हड़बड़ीबला टोनमे । हुनका संग रेडियो स्टेशन गेलहुँ । 'बिहाड़ि पात आ' पाथर' उपन्यास प्रकाशित भै गेलन्हि, आइए ऐलन्हि अछि । एकटा हमरा देलन्हि.....।

24.3.1960- ...मायानन्दजी ऐलाह मैथिली जनसाहित्य संस्थानक वृहत् योजना लै कै....।

25.3.1960- हरिमोहनबाबू ओतै 'इजोत' देमै गेलहुँ । दरभंगाक समाचार सब पुछलन्हि । 'हाथीक दाँत'पर दरभंगाक प्रतिक्रिया आदिपर पुछलन्हि । हमर 'बट गाछक छाहरि' (अभिव्यंजनामे प्रकाशित) हुनका बड़ नीक लगलन्हि से कहैत छलाह । ओमहरसँ घुमैत. ...डेरापर दिवानाथ सङ मायानन्द बैसल-बड़ी काल धरि गपाध्याय-मायानन्द अपन 'मिझाइत दीप' कथा सुनौलन्हि ।

मिथिला-संघ कहानी संग्रह प्रकाशित करौतन्हि । अजन्ता प्रेस पौने एगारहमे विदा भेलहुँ....।

26.3.1960- ...पौने नौमे मायानन्द आ बचकुन ऐलाह-पौने एगारहमे अजन्ता प्रेस गेलहुँ । काज तँ कैनहि ने रहैत छन्हि, अनेरे हरान होइ छी । मायानन्द काल्हि सिन्दरी जैताह...।

28.3.1960- ...आइ मायाननद नहि ऐलाह...।

29.3.1960- खा-पी कै सूतल रही तँ मायानन्द ऐलाह-एक बजे धरि रहलाह, सिन्दरीसँ ऐलाह । दिनकरजी अभिव्यंजनाक प्रशंसा करैत छलथिन्ह । सम्भव थीक जे ओहो मैथिलीमे लिखथि ।...

30.3.1960- ...दस बजे अजन्ता प्रेस गेलहुँ । तखने मायानन्द ऐलाह, डेरापर ऐलहुँ, विभिन्न गप्प-सप्प-हुनकर जेठ बेटाकेँ हाइ टायफायड छन्हि, गामसँ पत्र ऐलन्हि अछि । 'अगिलहीक उपराग कुमारसाहेबक नाम' ओ 'ताराक पत्र' (बिहाड़ि पात आ' पाथरमे) लीखै कहलन्हि ।....साँझमे जयनाथबाबू ओतै-मायानन्द भेटलाह-क्यौ नहि ऐल छल । साढ़े छौ बजेसँ ऐलाह सब, से साढ़े सात धरि अबैत रहलाह । अभिव्यंजनाक प्रसारमे कोनो निष्कर्ष नहि, मात्र गीज-मथ । वर्मा सेहो ऐल छलाह टोपी पहिरने-अतिरिक्त जयनाथबाबू, अनिरुद्धझा, कमलाकान्तझा ज्यौतिषी, बाँकीपुरी आदि आदि (गोपेश, परमानन्दशास्त्री) मिथिला-दर्शनक रणधीरजी सेहो, ओ काल्हि औताह कंचन भवनमे रुकताह । विषय अभिव्यंजनाक प्रसार छल ।

1.4.1960- ...साढ़े आठ बजे भिनसरे मायानन्द ऐलाह, श्यामसँ भेट भेलन्हि, पौने एगारह धरि सङ रही, देशबन्धुमे चाह पीलहुँ, सेब खैलहुँ, ओ आइ रातिमे गाम जैताह, काल्हि नहि जा सकलाह ।....

9.4.1960- ...(साँझमे) डेरापर ऐलहुँ तँ पता चलल-मायानन्द ऐल छलाह, चिट्ठी छोड़ि गेलाह । से सात बजे कोना भेट करितिअन्हि...

10.4.1960- ...(साँझमे) डेरापर ऐलहुँ तँ मायानन्दक पत्र छल जे हरिमोहनबाबू ओतै मिटिंगमे आबै पड़तह, रिक्सासँ गेलहुँ तँ ओतै क्यौ कतहु ने...(अभिव्यंजनाक विचार होयबाक छल) ।

11.4.1960- 5.30 बजे ऐलहुँ पता लागल जे फेर आइ मायानन्दजी ऐल छलाह। तीन दिनसँ आबि कै घूरि जाइ छथि। हमर कोन सक ?...

12.4.1960- मायानन्द हमरा पाछाँमे ऐल छलाह, रसीद सब लै गेलाह।

13.4.1960- भिनसर उमाकान्तजीसँ साइकिल माङि मायानन्दजी ओतै गेलहुँ, कै दिन आबि कै घूमि गेल छलाह। फेर साइकिलेसँ दुहू गोटा ऐलहुँ, ल. ना. मिश्रक (ललितनारायणमिश्र) पत्र ऐलन्हि अछि जे 'माँटी के लोग और सोने की नैया' छापै लै। कहलनि, ओकरा एक बेर पढ़ि दहक। नौ बजे धरि संग रहलहुँ।

21.4.1960- ...(7-8 बजे साँझ) अबैत रही तँ मायानन्दजी भेटलाह, 5 मइसँ एम्.ए. क परीक्षा छन्हि आ एखन धरि किताबे तकैत छथि। सक्सेनाक भाषा विज्ञान आ कीर्त्तिलता लऽ गेलाह। रेडियोक नाटकबला कन्ट्रैक्टपर दस्तखत करौलन्हि। 7 मइकँ ब्रॉडकास्ट हैतैक। मिथिला-मिहिरक प्रकाशन योजनाबला गप्प कहलन्हि, मौजेपाठक (?)कँ कहानी संग्रह चाहिऐन्हि, मायानन्द संग जयानन्द ओतै, एगारह बाजि गेल ओतुका हुरदुंगमे, होटल बन्द भऽ गेल छल। तरकारी समाप्त तथापि सेरैल अन्न खैलहुँ।

24.4.1960- ...(10.30 रातिमे डेरा अयलापर)एखन पता चलल जे मायानन्द ऐल छलाह। समीक्षा-अभिव्यंजना आ बिहाड़ि-पात-पाथरकेर हुनका काल्हि चाही। कोना हैत से ? रघुवंश उठौने गेलाह...।

26.4.1960- ....(सायंकाल)...रिक्सासँ रेडियो स्टेशन गेलहुँ, बाउचरपर दसखत कै दै देलिऐनि। मायानन्दजी संग हुनका डेरापर, तीनटा छोहारा आ' मारि किसमिस खा गेलिऐनि। बाबूसाहेबचौधरीक कहानी संग्रहपर गप्प भेल। आरो मारि दुनिञा भरिक साहित्यिक गतिविधि। हुनके होटलमे भोजन कैल।....

29.4.1960- (28 अप्रैलकँ सम्पन्न पटना कालेज मैथिली साहित्य परिषद्क सम्बन्धमे प्रकाशित समाचारक प्रसंग)...कवि सम्मेलनबलामे मायानन्द आ हमर नाम छोड़ने, हमर आ दिनेशानन्दक कैरिकेचरक कोनो चर्च ने, तहिना सुधाकरोबाबूक कतहु नाम नै....।

1.5.1960- भिनसरे उमाकान्तजीक साइकिलसँ मायानन्दजी ओतै गेलहुँ । शेखरजीक 'भूतों का शिकार' ओही ठाम दै देल, सवा सातमे एमहर शेखरजी प्रतीक्षामे । मिहिरक सम्बन्धमे गप्प, सभ अपन-अपन गोटी लाल करै चाहैत अछि । शेखरोजी ओहीमे छथि । मानल जे ओ बेकार छथि मुदा तैओ आनक सम्बन्ध कटु करब की उचित?......

3.5.1960- ....रामाश्रय संग रेडियो स्टेशन चललहुँ । गाँधी मैदानमे कमलेश भेटल प्रभास संग । हम, रामाश्रय आ कमलेश, मायानन्दसँ भेट, बड़ी काल धरि गप्प कै मायानन्दजी कहलन्हि जे कंटिरबी मरि गेलैक ।

3.8.1960- कंचन भवनसँ मंडल लॉज (भिखना पहाड़ी)मे डेरा आनल । मायानन्द ऐल छलाह ।

31.8.1960- साँझमे मायानन्द ऐलाह, संगहि हरिमोहनबाबू ओतै गेलहुँ । बड़ी काल धरि रहलहुँ । पुनः संगहि ऐलहुँ । डेरापर लगभग डेढ़ बजे पहुँचलहुँ ।

18.9.1960- मायानन्दजीसँ साँझमे भेट, हुनक 'आगि, मोम आ' पाथर' प्रकाशित भऽ गेलनि । हुनक छोट बेटा दुखित छनि, खयलहुँ ओही ठाम...।

19.9.1960- मायानन्दक रिजल्ट भेलनि एम. ए. सेकेंड क्लास 115म । दिनेशकेँ (बलभद्रपुर) 10म, प्रशान्त (फूलकान्तमिश्र प्रशान्त, पटसा) केँ 19म ।

23.9.1960- भोरे मायानन्दजी ओतऽ गेलहुँ, नाटक 'दुलारक भूख' देलिऐनि, पंडितजी (अमरजी) अयलाह, मायानन्द संग हुनक भेट ।

5.11.1960- आइ मायानन्द आयल छलाह, आगि, मोम आ' पाथर लऽ गेलाह । हमरासँ ।

7.11.1960- इंडियन नेशन-आर्यावर्त्तमे समाचार दिअऽ गेलहुँ । मायानन्द संग श्रीकान्तठाकुरजीक रूममे दस बजे धरि गपाध्याय, बेस रसगर लोक ।

8.11.1960- रातिमे मायानन्द ओतऽ, संगहि कुमार साहेब (कुमार गंगानन्दसिंह) ओतऽ ।

30.11.1960- साँझ खन मायानन्द अयला, हरिमोहनबाबू ओतऽ गेलहुँ । 'मातृभूमि' कविता सुनौलनि, कहल, बड़ बेसी अम्मत तँ ने छैक ? मिथिला मिहिरमे देब ठीक हेतै? हुनक कड़ाही भरि दूध फाटि तँ ने जयतनि ? आबि कऽ नओ बजे धरि मायानन्द हमरा डेरापर रहलाह ।

7.12.1960- मायानन्द आ वाचाल बाँकीपुरी अयलाह, साँझमे चिरैयाटाँड़ दिस मायानन्द संग, पुनः खादी ग्रामोद्योग संघ धरि... ।

11.12.1960- भिनसर मायानन्दजी ओतऽ गेलहुँ । ओतहि भोजन कयल, साँझमे गोपेशजीक ओहि ठाम, शेखरजीसँ भेट ।

18.12.1960- आइ भिनसर खन पंडितजी अयलाह । शिक्षक संघ संगहि गेलहुँ, ओतऽ किसुनजीसँ भेट, पुनः मायानन्द, सभ गोटा बोरिंग रोड, विश्वनाथजीसँ भेट ।

7.1.1961- (गामसँ पटना पहुँचलहुँ) ....साँझमे रेडियो स्टेशन गेलहुँ, इन्द्रकान्तजी (आर्यावर्त्तक कर्मचारी) भेटलाह । मायानन्द भेटलाह । संगहि डेरा अयलहुँ । थोड़ेक गप्प । मैथिलीक प्रतिनिधि कथापर गप्प । अपन हिन्दी उपन्यासक पाण्डुलिपिक एक खंड पढ़बा लेल राखि गेलाह... ।

9.1.1961- सोम थिकैक । भिनसरुक पहर मायानन्दजी अयलाह ।

13.1.1961- आइ दस बजे दिनमे मायानन्द अयलाह । 'माटी के लोग और सोने की नैया'क दू-तीन परिच्छेद पढ़बाक लेल राखि गेलाह । आब ओकर दू परिच्छेद लिखब बाँकी छनि । संगहि अपर रोड गेलहुँ । पेन लेलनि, साइकिल कसौलनि । ओ गेलाह, हम कालेज गेलहुँ ।

14.1.1961- आइ तिलासंक्रान्ति छैक....मायानन्द आइ नहि अयलाह....।

15.1.1961- ....वेश मनोरंजक घटना । मायानन्द अयला आ थोड़बे कालमे शेखरजी सेहो । दुनू गोटे गप कयलनि । चाह पीलनि । 'नेपथ्यमे

हाक्रोश' कथा मायानन्द सुनौलथिन आ शेखरजी मि.मि. लेल लऽ लेलथिन । मायानन्दकेर उपन्यास आइ समाप्त भेलनि । मा.न. गेला आ शेखरजी संग गोपेशजी ओतऽ गेलहुँ । शे. गेलाह...। (मा.न.- मायानन्द, शे.-शेखरजी)

15.1.1961- (बेरियामे) ....इंडियन नेशन गेलहुँ । थोड़ेक काल शेखरजी संग रही, फेर मायानन्दजी ओतऽ गेलहुँ । भोरमे ओ आयल छलाह तँ कहने छलिऐनि जे साँझमे रेडियो स्टेशन आयब मुदा ओतऽ नहि जा डेरेपर गेलिऐनि, पौने आठ बजे अयलाह, ओही ठाम भोजन कऽ कऽ एखने आबि रहल छी ।

17.1.1961- (सायं छओ बजेक बाद) ...भाग्यनारायण संग मायानन्दकँ साइकिल पहुँचयबा लेल रेडियो स्टेशन। पुनः आर्यावर्त ....।

18.1.1961- आइ दस बजे मायानन्दजी अयलाह, तखन हम धोती खीचैत रही....।

21.1.1961- (सरस्वती पूजा-बेरिया) ....डेरापर मायानन्दजी अयला-संग-संग ठुट्ठा परिवार पूजा समिति । गोपेश ओतऽ....साँझमे शेखरजी, मायानन्दजी, गोपेश, विभाकर आदिक साहित्यिक गोष्ठी-दस बजे धरि लॉजक सभ विद्यार्थी जमा रहल । शेखरजी संग बोरिंग रोड गेलहुँ । ओतऽ भोग लागल वस्तु परि लागल....।

22.1.1961- (गंगामे मूर्त्ति विजर्सनक बाद) मायानन्द अयलाह । ओ 5/- आइ दऽ गेलाह । मारि गप्प-सप्प, आब डायरी लेखन....।

24.1.1961- ....यूनिवर्सीटीक बाटमे मायानन्द भेटलाह । सुपौल चलऽ कहैत छलाह । हमर मोन नहि छल जयबाक ।

29.1.1961- (साँझ) .....7.30 मायानन्द अयलाह, मायानन्द संग गप, सुपौल यात्राक वर्णन आदि....।

4.2.1961- भिनसरुक पहर मायानन्दजी अयलाह, सोमदेव अयलाह । एना भेलैक- भोरे मेघ लागल छलैक । विवेकानन्द संग आनन्दबाबू ओतऽ विदा भेलहुँ, बाटमे सोमदेव भेटलाह । ओहो ओतऽ गेलाह । पुनः ओतऽसँ डेरापर-सोमदेवसँ थोड़ेक गप । हुनका

चाह पिया कऽ अरिआतऽ जाइत रही, खजांची रोड लग मायानन्द, पुनः थोड़ेक गप्प । सोमदेव गेलाह आ मायानन्द डेरापर अयलाह । सोमदेवक बड़का बेटाकेँ बस एक्सीडेन्टमे बड़ आघात । अस्पतालमे छनि ।

23.2.1961- ...मायानन्द अयलाह दिनमे । हुनकासँ पहिने रूपनारायणठाकुर (खादी भंडार) आयल छलाह । डा. अमरनाथझा जयन्तीक आयोजन । अनेक काज फरमा गेलाह.....।

8.3.1961- पटना पहुँचलहुँ । डेरापर मायानन्द अयलाह । डा. साहेब (डा. सुधाकरझा)केँ चारि बजे कापीक बंडल पहुँचौल, ओ डेरापर नहि छलाह । शेखरजीकेँ पान पहुँचौल से रिक्सामे पाइ लागल । ओम्हरहिसँ मायानन्दजीक डेरापर । हुनक फूलबाबू दुखित छथिन । माछ-भात खयलहुँ आ 11 बजे पैदले डेरा अयलहुँ ।

26.3.1961- ...आइ साँझमे अजन्ता प्रेसमे 'चन्दाझा'क जयन्तीक आयोजन छलैक । संयोजक हम आ मायानन्दजी रही । साँझमे वेश जुटान रहलैक । हरिमोहनबाबू अध्यक्ष छलाह । यात्रीजी सेहो छलाह । एहिबेरसँ 'चन्दाझा-जयन्ती' प्रारम्भ कयल, यथासाध्य एकरा पसारबाक चेष्टा करब । ओना पाछाँ लोक श्रेय चाहत मुदा एखन कहाँ ध्यान जाइत छैक ?....

28.3.1961- साँझमे मायानन्दजीसँ भेट करय डेरापर मोतीचन्द्रगुप्तक संग गेलहुँ । हुनका जाँघमे बाघी भेल छनि ।

2.4.1961- ...मायानन्द, आनन्दमिश्र ओ हरिमोहनबाबूसँ भेट । हरिमोहनबाबू ओतऽ डा. देवराज सपत्नीक छलाह ।

4.4.1961- आइ कोनहुना रेडियो एकांकी 'नऽव जीवन' समाप्त कऽ साँझमे मायानन्दजीकेँ दऽ अयलियनि ।

5.4.1961- ...दस बजे दिनमे मायानन्द अयलाह । ओ आइ सपरिवार गाम गेलाह । 16 केँ औताह ।

14.5.1961- भिनसरमे मायानन्द ओ साँझमे शेखरजी अयलाह... ।

18.5.1961- ....भिनसर ओ साँझमे मायानन्द अयलाह... ।

23.5.1961- मायानन्द ओ घनानन्ददास सम्मिलित पढ़ऽ अयलाह... ।

3.6.1961- आइ रेडियोसँ नाटक प्रसारित भेल 'नऽव जीवन' । हम सूनि नहि सकलहुँ । आनन्दबाबूक डेरापर रही । डेरापर अयलहुँ, मायानन्द अयलाह .....।

4.6.1961- साँझमे मायानन्द-घनानन्ददास अयलाह ।

5.6.1961- .....मायानन्द ओ घनानन्ददास अयलाह ।

6.6.1961- ....साँझमे मायानन्द...अयलाह ।

7.6.1961- ....साँझमे मायानन्द अयलाह । मि.मि.मे हमरा वेश शतरंजक मोहरा बना रहल छथि सभ गोटा....।

9.6.1961- ....मायानन्दजी अयलाह ।

10.6.1961- ...आइ मायानन्दजी नहि अयलाह, वर्षा होअऽ लगलैक तेँ की ?

11.6.1961- ....आइ पुनः मायानन्दजी नहि अयलाह ।

18.6.1961- ...साँझमे मायानन्दजी अयलाह । बिजली फेल भऽ गेलैक से आधा राति धरि अन्हारे रहलैक सौंसे शहर...।

24.6.1961- गोपेशजी ओतऽ पंडितजी (अमरजी), मायानन्दजी, इन्द्रनाथजी आ हम गेलहुँ....रेडियो स्टेशनमे कविसम्मेलन खूब जमलैक गोपेशजीक ओहि ठाम गोष्ठी भेलैक ।

3.7.1961- ...भिनसर खन इन्द्रकान्तजी ओतऽ गेलहुँ । मायानन्दजी पुस्तक दऽ गेलथिन अछि । से अबितीमे इन्द्रकान्त भेटलाह । डेरापर अयलाह....।

8.7.1961- ...साँझमे मायानन्दजी अयलाह । तीन पेपर परीक्षा समाप्त भऽ गेलनि । काल्हि साँझमे पुनः मुजफ्फरपुर जयताह ।

20.7.1961- ....साँझमे मायानन्दजी ओ घनानन्ददास अयलाह । परीक्षा समाप्त भऽ गेलनि । मायानन्दजीकेँ नीक भेलनि अछि । फर्स्ट क्लासमे फर्स्ट कऽ सकैत छथि ।

22.7.1961- आजुक परीक्षा (तेसर पत्र)क भय तँ बड़ बेसी छल किन्तु तैओ

बढ़िया रहलैक । डा. राजेन्द्र प्रसादक (प्रथम राष्ट्रपति) हालति ओहने । भिनसर आ साँझ, दुनू बेर मायानन्दजी अयलाह ।

27.7.1961– आइ भरि दिन लोक सभ अबिते रहल अछि । एको अक्षर ध्यानपूर्वक पढ़ि नहि भेल अछि । साँझमे मायानन्द अयलाह–'नव घर उठे' उपन्यास लिखब प्रारम्भ कयलनि आइसँ, प्रथम परिच्छेदक लिखलाहा अंश सुनौलनि । अवश्ये निम्न वर्गीय जीवनपर प्रथम उपन्यास हैतैक ई । आरम्भ देखि कऽ अनुमान होइछ जे नीक उपन्यास उतरतैक ।

30.7.1961– साँझमे मायानन्द अयलाह । उपन्यासक अंश सभ सुनौलनि...।

2.8.1961– आइ परीक्षा समाप्त....विद्यार्थी जीवन समाप्त....एक युग समाप्त. ..इतिहासक एक अध्याय समाप्त....किछु काल पहिने धरि जे छलहुँ । से आब नहि छी । तीन बजे परीक्षा समाप्त भेल आ कि सौंसे जेना शून्ये बूझि पड़ल, जेना एकटा वैकुअम भऽ गेल होइक...मोन बड़ कोनादन करैछ । सौंसे गट्टा, पाँखुर–सभ दर्दसँ भरल अछि । जी चटपटाइत अछि आ अमरनाथ ओ गोकुलानन्द माथ भुका रहल छथि । ....सभ अपन–अपन स्वार्थक यार सभ रहैछ । गोकुलानन्द शृंगार भजन तथा दिनेश प्रश्नपत्र उठा कऽ लऽ गेलाह । साँझमे विश्वनाथजी ओतऽ...परीक्षा समाप्त होइते इंटरव्यू देबऽ विदा भेलहुँ । की विचित्रता अछि ! ओमहरसँ अबैतमे वर्षा होअऽ लगलैक भीजि गेलहुँ । मायानन्दजी अयलाह, विद्यानाथ अयलाह, विभाकर अयलाह । तीनटा गिलास फूटल । बारह बजैत छैक...किट..किट....किट....। निन्न नहि अबैत अछि...लॉज शान्त छैक । भास्करबो सूति रहल आ हमरा निन्न नहि...।

4.8.1961– भिनसरमे मायानन्दजी ओतऽ । भोजनो ओतहि भेल ।

परसर्ग

पटनासँ दुहू गोटेक प्रब्रजनक पश्चात् नित्य सान्निध्यक अवसर स्वभावतः लुप्त भऽ गेल । परन्तु पत्राचारक माध्यमसँ कुशल–क्षेम, विचार–विमर्श, मैथिली साहित्य विषयक गतिविधि, साहित्य–सर्जन विषयक कार्य–योजना, मैथिली

आन्दोलन इत्यादिक प्रसंगमे सम्बन्ध-सम्पर्क बनल रहल अछि । विभिन्न अवसरपर भेट-घाँट होइत रहल अछि आ होइते रहैत अछि । पत्राचारमे अथवा भेट भेलापर हमरा दुहू गोटाक परस्पर व्यवहार ठीक-ठीक ओहिना बाह्य औपचारिकतासँ मुक्त, अनाविल, अन्तरंगता आ आत्मीयता संयुक्त रहैत अछि जेना अतीतमे रहैत छल । हमरा सबकेँ होइत अछि जेना पूर्वहिक क्षणकेँ जीबि रहल होइ । आरम्भमे सन्ताल परगना कालेज, दुमकाक पतासँ आ पश्चात् दरभंगामे हमर गामक पतासँ अथवा मैथिली विभागक पतासँ पत्राचार चलैत रहल अछि । तत्काल मायानन्दजीक लिखल पत्र सभमे किछु एहि ठाम उद्धृत कऽ देब अतीतकेँ यथावत् मन पाड़बामे हमर दुनू गोटेकेँ सहायक होयत–

आकाशवाणी, पटना

21/08/61

प्रिय रामदेव !

तोहर एकटा कार्ड भेटल छल । हौ ! श्रद्धेय अमरजीकेँ शे.क प्रति काफी सदय देखल । नीको लागल अगत्या । कथा विशेषांकक तैयारीमे छथिहो, मुदा हमर रचना नञि भेटतैन ।

हम चाहै छी जे मि.मि. पूर्व दर्शनक कथा विशेषांक बहराइ आ ओकरे रीप्रिंट भऽ पुस्तकाकार सेहो । तैँ तूँ अपन आ' श्रीशै.मो.जीक एक एकटा नीक कथा (कारण संग्रहमे सेहो रहतै ने) 15 सितम्बर धरि चौधरीजीकेँ पठा दहुन । तोरा एकटा लेख सेहो देबाक छह- 'मैथिली गल्पक आत्मोपलब्धि' जै मे गल्पक क्रम विकास.... प्रभाव-प्रगति-प्रयोगक विश्लेषण....मैथिलीक किछु आधुनिक श्रेष्ठ कथा, तकर विस्तृत व्याख्या आदि विषय रहक चाही । ओहूमे हमर दोसर लेख रहतै- 'मैथिली गल्पक कथा-शिल्प' । यैह दूटा निबन्ध रहतै आ 8-10 कथा रहतै । विश्वास अछि जे दर्शनक ओ विशेषांक खड़ी बोलीक कोनो विशेषांकक टक्कर के हेतै । मुदा ता 'गल्प आ' निबन्ध तैयार राखऽ एही चारि पाँच दिनमे चौधरीजी पटना आबि रहला अछि, एखन दिल्ली गेल छथि तखन अंतिम निर्णय पठेबह आ' तखन 15 सितम्बर धरि पठा देबाक चाही ।

जँ तोहर आ श्रीशै.मो.क कथा मि.मि.केँ विशेषांक लेल नञि भेटलैक तँ हमरा विषाद नञि हैत। (आइ दरिद्रहा देश भारतकेँ सबटा लेभड़ल जा रहल अछि) मुदा दुनू गोटाक कथा दर्शनकेँ भेटबेक चाही । खैर हम कार्ड पठेबहु पाँच सात दिनमे ।

दरभंगामे 'मैथिली काव्यक वाद-परम्परा'क केहन प्रभाव ? श्री शै. मो. जीक केहन विचार ? आर की सब ? की सब कऽ रहलऽ अछि ? किछु लिखबो केलऽ ? लीखऽ । 'नव घर उठे' ठमकल अछि तेहत्तरिम पेजपर ।

मोन नञि लागि रहल अछि । नयाटोला दिस जाइ छी तँ मोन उदास भऽ जाइ अछि । हौ ! तोँ बिहाड़ि+आगि' पर नञि लिखबऽ ? से कहिया ? पत्र दैह आ' सेहो शीघ्र । आ ग्रंथालय ? -मायानन्द

(शे. -शेखरजी, शै.मो. -शैलेन्द्रमोहनझा, मि.मि. -मिथिला मिहिर)

सहर्षा

प्रिय रामदेव ! 6-1-62

नव वर्षक लेल अखंड शुभकामना । कहिया चललऽ दरभंगासँ ? दोसर दिन केहन मोन रहलऽ ?... बेस 'बोर' केलऽ हमरा...तोरे दुआरे रहलौं आ' तोँ तेहन भगल केलऽ जे... । हौ, बड़ आवश्यक काज अछि; 'मिथिला दर्पण' उपन्यासक अति संक्षिप्त कथावस्तु पठा ने दैह, जतबे मोन छऽ ततबे । आ' 'दुर्वाक्षतो'क । बिसरह नञि, शीघ्र, अवश्य । बड़ 'गून' मानबऽ लिफाफामे । ....बड़ नङो-चङो करै छियऽ ।........ बेस भाइ । मानल ।

की करै छऽ ? मार्चसँ अभिव्यंजनाक प्रसारण करऽ जा रहल छी । कथा वा कवितापर निबन्धात्मक आलोचना चाही, स्पष्ट, एकपीठा, प्रेसकॉपीनुमा । मासान्तमे प्रेस जेतै ।.... दुनू उपन्यासक कथावस्तु अवश्य शीघ्र पठाबऽ । आर की ? कुशल ।- मा. न.

'दर्शन' भेटलऽ ? केहन ? -मा. न.

सहर्षा

प्रिय रामदेव ! 31-1-62

कतिपय कारणे 20 ता.कें पटना नञि आबि सकलौं । आशा अछि तोँ सकुशल घुमले हेबऽ । की हालचाल पटनाक ? आ. बाबू (प्रो. आनन्द मिश्र) ? शेखरजी ? भाग्यनारायण ?

एह ! तोँ बड़ असकतियाह भेल जाइ छऽ । जेना कि ओइ राति दरभंगामे श्रद्धेय अमरजी लग गप्प भेल छल 'रविबाबूक जीवनी' ब्रजबुलिक संदर्भमे तोरहि लिखऽ पड़तऽ, प्रेस कॉपी तैयार छै । तैँ 10 फरवरी धरि तोँ

हमरा पठा दैइ, साफ, एकपीठा । 12 फरवरीकेँ प्रेसमे चलेटा जेतै । आसकति घातक । शेष कुशल । आर की सब ? दर्शनक विशेषांक भेटलऽ ? एक खीराक की हाल ! एखन कोन-कोन काजमे बाझल रहै छऽ ? पत्र शीघ्र दैह आ' रचना सेहो शीघ्रे । --मा. न.

सहर्षा

प्रिय रामदेव ! 20-8-62

आइये तोहर पत्र भेटल । हम चल गेल छलौं गाम 11/8सँ 19/8 धरि । ओहिना कोनो खास प्रयोजन नहि । हौ, सहर्षामे पुनः एकटा Appointment हेतै, मुदा एखन नञि । निकट भविष्यमे । की तो आबि सकै छह ?.......... हमरा बड़ सुविधा हैत । हम आ' तोँ जँ एकठाँ रहलौं तँ मैथिलीकेँ बहुत किछु भेटि सकैत छैक । हमरा सबमे योजना, दृष्टि आ' क्षमता तीनू अछि जे आन ठाम विरल छै । नञि मानै छह तोँ ? मानक चाही ।

ग्रंथालयक पत्र भेटल बिहाड़ि-पात-पाथरक नोटक प्रसंग । ओहो छापऽ लेल तैयार छथि आ' सहर्षामे एक दू गोटा फाँड़ बान्हि रहल अछि मुदा ई प्रकाशन लाभकर नञि भऽ सकैछ तैँ सहर्षाबलाकेँ नञि देबै । एहिठाम एकटा नीक प्रकाशक तैयार करक अछि । लागल छी तइमे ।

तोँ लिखलहक जे नाम नञि रहतै ? आखिर कियै ? ओकर रूप तँ नोटात्मक नञि रहतै । आलोचनात्मक रहतै । शुद्ध आलोचनात्मक तखन कियै नञि नाम रहतै । 'प्रतिपदा : एक अध्ययन'मे कोना नाम छै । यद्यपि से तुलना अनर्गल थिक । तोरा ओहिमे व्याख्यात्मक उत्तरमे नञि जेबाक छह । शब्दक अर्थ कहबाक छह । निबन्धात्मक रूपमे शीर्षक आ' तकर आलोचना । खतरा । प्रश्नोत्तरक रूप नञि रहतै । एहि तरहेँ नामेसँ एकटा आलोचनात्मक पुस्तक तैयार भऽ गेलै । अगिला खेप 'आगि मोम' सम्भव सेहो आबि जाइक, आ प्रायः एबे करतै । तैँ एक दूटा निबन्ध गल्पो सम्बन्धी रहय से नीक परिशिष्टमे शेखरजीबला आ ललितबाबूबला लेख सेहो रहतै । की विचार ? तोरा एहि प्रसंग कोन-कोन शीर्षक फुराइ छऽ लीखऽ शेष हम फुरा देबऽ जँ प्रयोजन रहलै तँ ।.....

'अभिव्यंजना' लेल शैली-प्रसंग हमहूँ सोचि रहल छी । तोहर विचार पसिन्न पड़ल । मुदा शैलीपर हम एकटा 'परिचर्चा' सेहो चलेबै । तोहर रचना कहाँ भेटि रहल अछि । जँ कथा पठेबाक हो तँ 26/27 धरि भेटि जैबाक

चाही । आलोचना 30/8 धरि भेटलासँ काज चलि सकैछ । कविता तँ खैर कोनो सङे खोंसि सकै छऽ । रचना सब एखन धरि नञि भेटि रहल अछि । मैथिलीक लेखक सब पर सब दिन हमरा एही लेल तामस रहल । -मा.न.

सहर्षा

29-08-62

प्रिय रामदेव !

अभिव्यंजनाक मैटर प्रेस चल गेलै । मुदा आलोचना कोनो उपयुक्त नञि भेटि सकल अछि तैँ मैथिली कथा वा नाटकपर 4/9 धरि एकटा आलोचना सात-आठ पृष्ठ पठबऽ । विकराल प्रयोजन अछि अवश्ये पठबऽ । काज रूकल अछि । –मा. न.

सहर्षा

प्रिय रामदेव, 14-09-62

सस्नेह । तोहर कार्ड भेटल छल, मुदा उतारामे कने अनठा जकाँ देलिअहु, अन्यथा नञि मानिहह । बड़ व्यस्तता अछि, आ' एही हूलिमालिमे रचना लेल वैदेहीक खोचाड़..... पठा देलियनि जे मङलनि; एकटा कथा, एकटा रेडियो नाटक, एकटा कवितापर आलोचना । कथा+आलोचना नबे लीखऽ पड़ल । तोँ की देलहुन ? अवश्ये देबाक थिक एहन-एहन अवसरपर । अभि. छपि गेलै । दोसर अंकक मैटर दऽकऽ सहर्षा छोड़ब ओ अंक 15 नव. केँ बहरेतै । श्रीरमानाथबाबूक एकटा महान क्रांतिकारी लेख छपलै अछि । आगि मोमक दोसर संस्करण लेल कियैक उत्सुक छलह ? आरो की हाल-चाल ?

पुनश्च-लीखऽ जे अबैत छह कि नञि । अभिव्यंजना नेने एबहु । मिहिर नञि पढ़ल ।- मा. न.

(अभि. -अभिव्यञ्जना, नव. -नवम्बर)

सहर्षा

प्रिय रामदेव ! 18-1-63

तोहर कथा एखन धरि नञि भेटि सकल अछि 20/1 धरि । मैटर प्रेस जेतैक तैँ 24-9 धरि तोहर कथा भेटि जेबाक चाही । 'चर्चा-वर्चा' लेल तोँ अपने आ' श्रद्धेय अमरजी, शैलेन्द्रबाबू, तथा श्रद्धेय सुमनजीसँ वस्तु पठबह । सूचना शीघ्र दैह के की पठबैत छथि । मार्चसँ मासिक रूपमे आबि रहलैक

अछि । तोरा पाँचटा ग्राहक बनेबाक छहु मोन राखह । कने श्रीभोलालालदासक पता पठबह । पत्र दैह । –मा. न.

सहर्षा

प्रिय रामदेव, 28-1-64

तोहर पत्र यथासमय भेटल छल, मुदा उत्तरमे आवश्यकतासँ किछु अधिक बिलम्ब भऽ गेलहु, किने ? की क्षमा माङऽ पड़त ? तऽ बेस ।..... आखिर 'ऋतुप्रिया'क प्रति नहिञे भेटल, ताकि कऽ थाकि गेलहुँ । आ तैँ नञि पठा सकलियहु, नञि सकैत छियहु ।..... श्रीकिसनुजीकेँ पठबै कहने छियनि । श्रीरेणुजीसँ एहि बेर गप्प करब । हँऽ तीस-एककेँ पटना रेडियोक चौपालमे छी । श्रीराजकमलोसँ एही खेपमे गप्प करब । श्रीललितसँ विस्तारसँ पत्राचार करऽ पड़त । पाछू करब । हँ 'दिशान्तर' फरबरीक अंत धरि प्रकाशित भऽ जेतै (अपन काव्य-संकलन) कतेक प्रति तोँ खपा सकबह ? –मायानन्द

सहर्षा

परम प्रिय रामदेव, आशीष 7.8.76

गुम्मामे तोँ जीति गेलह । लगैत अछि हमरे टक्करक केओ दोसर आलसीक जन्म भऽ रहल छैक । नीक नञि । डेरा बदललह, भोजक कोन गप्प, खबरियो नञि । पछिला रेडियो प्रोग्राममे भेंटक बड़ इच्छा...... ।

आबि रहल छी हम, सत्ये, शीघ्रे । एकटा काजेँ, तोँ टपि गेलाह, हम लसकल छी, उबारना छहु । सुनै छी, M.Phil क झंझटि नैं रजिस्ट्रेशन शीघ्र करा लेबाक थिक । सुनै छी श्रीकिरणजी आबि गेलाह पुनः विश्वविद्यालय से ! गाइड लेल की विचार ? विषय राखऽ चाहैत छी- 'मैथिलीमे वैष्णव काव्यक परम्परा' । की विषय छैक कुमारि ? जँ हँ, तँ एकटा सिनाप्सिस तैयार कऽ टाइप करा, राखऽ, गाइडक दसखत सहित, जाहिसँ एक्के दिनमे घूमि सकी । 16-17 धरि अबैत छी । जँ ई विषय नञि तँ दोसर कोन ? हमरा जोगर, इतिहासात्मक, छोट, टेबुलवर्कबला, दुइ चारिटा पठबह । बहुत भार दऽ रहल छियहु ? एखन की भेलऽ अछि ।........ डालबे किया है ।

शीघ्र लिखऽ कहिया धरि उत्तर दैत छह ! ओह ! भेटक बड़ इच्छा ! शेष कुशल । कुशलक इच्छा- मा.न.

पुनश्च- 13.8 धरि हमरा पत्र पहुँचि जैबाक थिक- मा.न.

सहर्षा
5.1.82

परमप्रिय श्रीरामदेवजी

जय मैथिली, नवीन वर्षक शुभकामना । 26.12 कें दरभंगा गेल छलहुँ भेंटक इच्छा छल, मुदा रेडियोमे किछु अधिक समय लागि गेल । संकल्पलोकक कार्यक्रम नीक रहल । सर्वत्र सराहना । सम्प्रति प्रस्तुत छात्र हमर बड़ प्रिय छात्र, जे आब अहाँक शरणमे अछि । हिनका प्रति स्नेह आ' कृपा रहक चाही से हमर हार्दिक इच्छा । शेष कुशल –मायानन्द

आकाशवाणी, पटना
31-8

प्रिय रामदेव बधाइ ! अकल्पित नञि । की हमरा चिट्ठीक उतारा नहिञे देबऽ । हमरा एखन धरि नञि भेटल अछि । की ? कोना ? –मायानन्द

प्रो. मायानन्दमिश्र
सहरसा कॉलेज, सहरसा

परम प्रिय श्रीयुत् रामदेवजी जय मैथिली ।

तोहर पत्रक प्रतीक्षा छल आ' अछि । आब (कृपया) श्रीराजारामजी द्वारा अवश्ये दी । एना ऐ मासक अंत धरि पांडुलिपि ल'क' स्वयं आयब । श्रीरविकान्तबाबू कहने छला रजिस्ट्रेशन प्रसंग जे कने स्थिर होइ छी- कहब । जाइत-अबैत कखनौ बूझि ली, कष्ट तँ कने करइये पड़त । दोसर ओकर अध्याय वितरण कोना हेतै ? एकटा कागज देने छलियह । 'प्रथम शैलपुत्री' अकादमी पत्रिकामे आयल छै । केहन ? दुइ एक गोटासँ आरो सम्मति पठबी । बड़ श्रम लागल अछि । अंतिम परिच्छेदमे लागल छी । श्रीजीबछजीकें से सूचना द' दियनि । –मा. न.

प्रो. श्रीमायानन्दमिश्र
विद्यापतिनगर, सहरसा-852201 (बिहार)

चि. श्रीयुत् रामदेवजी, आशीष ।

'शोध' पठा रहल छियहु । श्रीजीबछजी ध्यान राखथि जे कवर बैकपर चिन्हित I निदेशककें तथा II आ' III परीक्षककें जाइनि यथाशीघ्रताक

प्रयोजन । तैं स्थानीय रहथि से नीक । डॉ. साहेबसँ गप्प भेल अछि । शेष कुशल । शुभाकांक्षी– मायानन्द / 16-12

सहरसा

25.12.91

परमप्रिय श्रीरामदेवजी !

अकादमी पुरस्कारक लेल हार्दिक अभिनन्दन । नव वर्षक शुभकामना । हमर घोषणा तँ ग्रन्थ विमोचनेक अवसरपर भेल छल । अतीव आनन्द भेल । वाह ! आशा अछि स्वस्थ ओ प्रसन्न छी । ललित-राजकमल-मायानन्दक उपन्यासपर 15/20 पृष्ठक एकटा लेख लेल लिखने छलियहु, तकर की प्रगति ? हमरा सूचना दी । शेष कुशल । –मायानन्द

बिसरब कोना ?

हमरा मोन अछि, 1986 मे 13 जूनकेँ हमर जेठि कन्या सौ. ममताक विवाहक तिथि बड़ धड़फड़ीमे निश्चित भेल छल । सहरसामे रामनरेशसिंह ओ राजारामप्रसाद जे हमर छात्र रहल छथि, तनिका वैवाहिक व्यवस्था सम्बन्धी किछु भार दैत पत्र देलियनि । मायानन्दजीकेँ वैवाहिक निमन्त्रण-पत्र औपचारिकताक रूपमे पठा देने छलियनि, ओहिना, जेना सूचनार्थ लोक देल करैत छैक । विवाहसँ एक दिन पूर्व रामनरेशसिंह ओ राजाराम अपन कर्त्तव्यक व्यवस्था कयने पहुँचलाह । रामनरेश कहलनि-श्रीमान् ! मायाबाबूकेँ अपनेक निमन्त्रण-पत्र भेटि गेलनि ।' सूनि आश्वस्त भेलहुँ जे विवाहसँ पूर्व पत्र पहुँचि तँ गेलैक । एहन प्रसंगमे दूरस्थ लोककेँ कार्यस्थलपर पहुँचि पायब सम्भव नहि होइत छैक । अतः लोक तन्निमित्तक उचित व्यवहार वा शुभकामना सन्देश प्रेषित कऽ देल करैत छथि । परन्तु मायानन्दजी विवाहक तिथिकेँ सन्ध्याकाल स्वयं हमरा ओतऽ पहुँचि गेलाह । हुनका सदेह उपस्थित देखि आश्चर्य ओ अतिशय आह्लाद भेल । हम उल्लसित स्वरमे कहलियनि-अहाँ आबि गेलियै !'

ओ उल्लासपूर्वक कहलनि-अँय हओ ! तोहर पहिल कन्यादान छह से जनलाक बादो नहि आबी से सम्भव छैक ?'

हम स्वागतक औपचारिकता दिस सुरफरयलहुँ तँ मायानन्दजी कहलनि-तोँ हमर चिन्ता नहि करह । एखन बड़ व्यस्त छह । आन काज देखह, पाछाँ गप्प हयत । हम तावत एहि ठामक व्यवस्था सब देखैत छियह ।'



मायानन्दजी राति भरि रहलाह । वर-वधूकेँ आशीर्वाद देलथिन आ भोरे फेर चल गेलाह । एहि अवसरपर खींचल गेल एकटा दुर्लभ फोटोग्राफ हमरा संकलनमे एखनो अछि जाहिमे मायानन्दमिश्र, भीमनाथझा, आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन', प. चन्द्रनाथमिश्र 'अमर', सहित हमहूँ छी ।

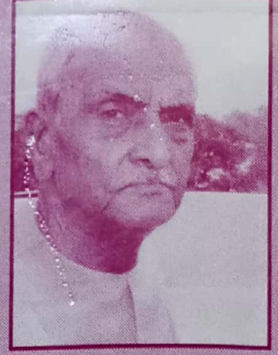
शिशिरवसन्तौ पुनरायातः

दिन आ राति, सायं आ प्रातः,ऋतुचक्रमे शिशिर आ वसन्त आयल आ गेल । अबैत रहैत अछि, जाइत रहैत अछि । भविष्यहुमे एही रूपेँ अबैत रहत आ जाइत रहत । परन्तु मनुष्यक भोगल अतीत, ओकर मिठ-मधुर वर्ष, मास, दिन आ क्षण पलटि कऽ नहि अबैत छैक । इतिहास भने अपनाकेँ दोहरबैत होअय, परन्तु व्यक्तिक अतीत ठीकम ठीक अपन पूर्व रूपकेँ नहि दोहरबैत छैक । ओकर कहियो पुनरावृत्ति नहि होइत छैक । व्यक्ति अपन अतीतक अनुभूति-ग्रन्थक स्मरणीय-विस्मरणीय पृष्ठकेँ एकान्तक क्षणमे मनसा उनटबैत रहैत अछि आ मधुर प्रसंगक स्मृतिकेँ ताकि-हेरि, हृदयपटलपर उतारि-उतारि मुग्ध होइत रहैत अछि ।

हमहूँ मायानन्दजीक संग बिताओल अतीतक किछुए पृष्ठकेँ, ओहि पृष्ठ सभक किछुए अंशकेँ स्मरण कऽ लिपिबद्ध करबाक प्रयास कयलहुँ अछि । मायानन्दजीक ओ हमर, हमर ओ मायानन्दजीक अतीतकालीन संगिता-सहभागिता, साम्प्रतिक सम्पृक्तताक माधुर्यक प्रसंगमे हम संजय-वाक्यकेँ उद्धृत करऽ चाहैत छी-

संस्मृत्य संस्मृत्य.....हृष्यामि मुहुर्मुहुः
संस्मृत्य संस्मृत्य.....हृष्यामि पुनः पुनः ।





श्रीरामदेवझा

जन्म- 03 मइ 1936

पता- कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा-1

रचना संसार

कथा संग्रह : 1. एक खीरा : तीन फाँक-1965, 2.मनुक सन्तान-1966, 3.धरती माता-1985 4. आजी माँ-2009

उपन्यास : 1.इजोती रानी (बाल उपन्यास) -1965, 2.अंगरेजीफूलक चिट्ठी- 2002, 3. बहिनाक विरोग- 2002, 4. रामजोड़ी कागतक पाँखिपर- 2002, 5. हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी (बाल उपन्यास)- 2013

नाटक : 1. पसिझैत पाथर (नाट्य संग्रह)- 1989

संस्मरण : 1. स च मे प्रियः -2016

अनुसन्धान-आलोचना : 1. शकुन्तलानाटक : एक अध्ययन- 1959, 2. पार्वतीपरिणय नाटक : एक अध्ययन-1960, 3. मैथिली शैव साहित्य- 1979, 4. उमापति-1980, 5. मैथिली शैव साहित्यक भूमिका-1982 6. जगत्प्रकाशमल्ल (विनिबन्ध)-1990, 7.जगज्ज्योतिर्मल्ल (विनिबन्ध)-1995, 8. जनार्दनझा जनसीदन (विनिबन्ध)-1998, 9. मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य -2002, 10.सुभद्रझा (विनिबन्ध)-2010

शब्द-सञ्चय-1. मैथिली शब्द-सञ्चय (2014)

सम्पादन : 1. नन्दीपति गीतिमाला-1965, 2. रामविजयनाट ओ वरगीत-1967 3. हरगौरीविवाहनाटक-1970, 4. नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत- 1972, 5. कुञ्जविहारनाटक-1976, 6. मैथिली प्राचीन गीतावली-1977, 7. कविवर जीवनझा रचनावली- 1980, 8. मैथिली भाषा सरिता (भाग चारि) -1984, 9. दशावतारनृत्यम् ओ षोडशगीतम्- 1988, 10. मैथिली प्राचीन गीत मञ्जरी-1991, 11. म.म.परमेश्वरझा कृत दुर्गाचरितनाटक-1996, 12. कुमार गंगानन्दसिंह रचित मनुष्यक मोल-1998 (सन्धान-2 मे प्रकाशित), 13. रमेश्वरचरित मिथिला रामायण-1999, 14. विद्यापति गीत संचय-1999, 15. मैथिली कथा : शताब्दी संचय 2010, 16. म.म. परमेश्वरझा कृत सीमन्तिनी आख्यायिका-2011, 17. मुदितकुवलयाश्वनाटक-2013,

अनुवाद : 1. पृथ्वी परिचय (भाग चारि)- 1988, 2. जीव विज्ञान (भाग एक) -1988, 3. वाणभट्ट (अंग्रेजी मोनोग्राफ)-1989, 4. सगाइ-1992



श्रीरामदेवझा



जन्म- 03 मइ 1936

पता- कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा-1

रचना संसार

कथा संग्रह : 1. एक खीरा : तीन फाँक-1965, 2.मनुक सन्तान-1966, 3.धरती माता-1985 4. आजी माँ-2009

उपन्यास : 1.इजोती रानी (बाल उपन्यास) -1965, 2.अंगरेजीफूलक चिट्ठी- 2002 3. बहिनाक विरोग- 2002, 4. रामजोड़ी कागतक पाँखिपर- 2002, 5. हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी (बाल उपन्यास)- 2013

नाटक : 1. पसिझैत पाथर (नाट्य संग्रह)- 1989

संस्मरण : 1. स च मे प्रिय: -2016

अनुसन्धान-आलोचना : 1. शकुन्तलानाटक : एक अध्ययन- 1959, 2. पार्वतीपरिणय नाटक : एक अध्ययन-1960, 3. मैथिली शैव साहित्य- 1979, 4. उमापति-1980, 5. मैथिली शैव साहित्यक भूमिका-1982 6. जगत्प्रकाशमल्ल (विनिबन्ध)-1990, 7.जगज्ज्योतिर्मल्ल (विनिबन्ध)-1995, 8. जनार्दनझा जनसीदन (विनिबन्ध)-1998, 9. मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य -2002, 10.सुभद्रझा (विनिबन्ध)-2010

शब्द-सञ्चय-1. मैथिली शब्द-सञ्चय (2014)

सम्पादन : 1. नन्दीपति गीतिमाला-1965, 2. रामविजयनाट ओ वरगीत-1967 3. हरगौरीविवाहनाटक-1970, 4. नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत- 1972, 5. कुञ्जविहारनाटक-1976, 6. मैथिली प्राचीन गीतावली-1977, 7. कविवर जीवनझा रचनावली- 1980, 8. मैथिली भाषा सरिता (भाग चारि) -1984, 9. दशावतारनृत्यम् ओ षोडशगीतम्- 1988, 10. मैथिली प्राचीन गीत मञ्जरी-1991, 11. म.म.परमेश्वरझा कृत दुर्गाचरितनाटक-1996, 12. कुमार गंगानन्दसिंह रचित मनुष्यक मोल-1998 (सन्धान-2 मे प्रकाशित), 13. रमेश्वरचरित मिथिला रामायण-1999, 14. विद्यापति गीत संचय-1999, 15. मैथिली कथा : शताब्दी संचय 2010, 16. म.म. परमेश्वरझा कृत सीमन्तिनी आख्यायिका-2011, 17. मुदितकुवलयाश्वनाटक-2013,

अनुवाद : 1. पृथ्वी परिचय (भाग चारि)- 1988, 2. जीव विज्ञान (भाग एक) -1988, 3. वाणभट्ट (अंग्रेजी मोनोग्राफ)-1989, 4. सगाइ-1992



श्रीरामदेवझा

स च मे प्रियः

(संस्मरणक दर्पणमे मायानन्दजीक प्रतिच्छवि)

